सद्गुरवे नमः

पलटू साहेब की बानी

खंड–तीन

शब्द

1. सद्गुरु का महत्त्व

शब्द–1

बूझि बिचारि गुरु कीजिये, जो कर्म से न्यारा।
कर्म-बन्ध हरि दूरि है, बूड़हु मँझधारा॥टेक॥
काम क्रोध जिनके नहीं, नहिं भूख पियासा।
लोभ मोह एकौ नहीं, नहिं जग की आसा॥ 1॥
ज्यों कंचन त्यों काँच है, अस्तुति सो निन्दा।
सत्रु मित्र दोउ एक हैं, मुरदा नहिं जिन्दा॥ 2॥
जोग भोग जिनके नहीं, नहिं संग्रह त्यागी।
बन्द मोष एकौ नहीं, सत सबद के दागी॥ 3॥
पाप पुण्य जिनके नहीं, नहिं गरमी पाला।
पलटू जीवन-मुक्त ते, साहिब के लाला॥ 4॥

शब्दार्थ—मोष= मोक्ष। दागी= दागवाला, चिह्न एवं लक्षणवाला। लाला = लाल, प्रिय शिष्य।

भावार्थ—हे मुमुक्षु! समझ-बूझकर किसी को गुरु रूप में स्वीकार करो। आत्मशांति रूपी हरि की प्राप्ति राग-द्वेष पूर्ण कर्म-बंधनों से परे की स्थिति है। यदि इस तथ्य को नहीं समझते हो तो संसार-सागर में डूबोगे॥ टेक॥ जिनके मन में काम-क्रोध नहीं है; संपत्ति-स्वामित्व की तृष्णा नहीं है, लोभ-मोहादि एक भी मनोविकार नहीं है और न जगत-प्रसिद्धि की

आशा है ॥ 1 ॥ जो सोना और कांच को समान दृष्टि से देखते हैं, स्तुति-निन्दा पाकर समान भाव से रहते हैं; जिनकी शत्रु-मित्र दोनों पर समान दृष्टि है; जिन्हें मरने से भय नहीं है और जीने की इच्छा नहीं है ॥ 2 ॥ जो दिखावटी योगी नहीं हैं और भोगों से दूर हैं; न संग्रह करते हैं और न त्याग का दिखावा करते हैं। जिनका मन विषयों से बंधा नहीं है और जिनका अपने मोक्ष का प्रदर्शन नहीं है। जो सत्य निर्णय के लक्षण वाले हैं ॥ 3 ॥ जो लंपटता तथा हिंसा रूपी पाप नहीं करते और जिनके द्वारा निष्काम भाव पूर्वक पुण्यकर्म होते हैं, जो गरमी-ठंडी में समता से रहते हैं। पलटू साहेब कहते हैं कि वे सद्गुरु साहेब के लाल एवं शिष्य जीवन्मुक्ति रहनी में रहते हैं। ऐसे सद्गुरु की शरण में निवास करो ॥ 4 ॥

शब्द-2

गुरु दरियाव नहाया है, ताकी दुरमति भागी ॥टेक॥
गुरु दरियाव सदा जल निरमल, पैठत उपजै ज्ञाना है॥ 1॥
अरसठ तीरथ गुरु के चरनन, स्री मुख आपु बखाना है॥ 2॥
जब लग गुरु दरियाव न पावै, तब लग फिरै भुलाना है॥ 3॥
पलटू दास हम बैठि नहाने, मिटिगा आना जाना है॥ 4॥

शब्दार्थ—दरियाव= दरिया, नदी, समुद्र। अरसठ तीरथ= अड़सठ तीर्थ, समस्त तीर्थ।

भावार्थ—सद्गुरु की सत्संग रूपी नदी में जिसने स्नान किया, उसकी दुर्बुद्धि दूर हो गयी॥ टेक॥ सद्गुरु के सत्संग रूपी दरिया का जल सदैव निर्मल रहता है। उसमें डुबकी लगाते ही आत्मज्ञान उत्पन्न होता है ॥ 1 ॥ श्री विष्णु, श्री राम तथा श्री कृष्ण ने स्वयं अपने श्रीमुख से कहा है कि सद्गुरु-संतों के चरणों में समस्त तीर्थों का निवास है ॥ 2 ॥ कल्याणार्थी जब तक सद्गुरु के सत्संग रूपी दरिया में स्नान नहीं करता, तब तक संसार में भूला-भटका फिरता है ॥ 3 ॥ पलटू साहेब कहते हैं कि मैंने गुरु-दरिया में प्रवेश कर अपना मल धो डाला है। इसलिए मेरा संसार में भटकना बन्द हो गया है ॥ 4 ॥

शब्द-3

चादर लेहु धुवाइ है, मन मैल भया है॥टेक॥
सतगुरु पूरा धोबी पाया, सतसंगति सौंदाई है॥ 1॥

तिरगुन दाग परयो चादर में, मलि मलि दाग छुड़ाई है॥ 2॥
आँच दिहिन बैराग कि भाठी, सरवन मनन घमाई है॥ 3॥
निरखि परखि कै चादर धोइनि, साबुन ज्ञान लगाई है॥ 4॥
पलटू दास ओढ़ि चलु चादर, बहुरि न भवजल आई है॥ 5॥

शब्दार्थ—सौंदाई= सौंदन, गंदे कपड़े रेह में सानना। सरवन= श्रवण। घमाई= धूप में सुखाना।

भावार्थ—हे साधक ! मन रूपी चादर मैली है। इसे धुला लो॥ टेक॥ पूर्ण सद्गुरु धोबी है। उसकी शरण में जाओ। उनका सत्संग सौंदन है॥ 1॥ मन रूपी चादर में सत, रज तथा तम गुण के कर्मों के दाग पड़े हैं। उन्हें रगड़-रगड़ कर छुड़ा लो॥ 2॥ वैराग्य की भट्ठी में आंच देकर चादर को गरम कर लिया और ज्ञानचर्चा का श्रवण-मनन रूपी धूप में सुखा लिया॥ 3॥ आत्मज्ञान का साबुन लगाकर मन रूपी चादर को निरख-परख कर धो लिया॥ 4॥ पलटू साहेब कहते हैं कि ऐसी स्वच्छ मन रूपी चादर को ओढ़कर जीवन का आचरण करो, तो पुनः संसार-सागर में नहीं आना होगा॥ 5॥

शब्द-4

सकल तजि गुरु ही से ध्यान लगैहौं॥ टेक॥
ब्रह्मा बिस्नु महेस न पुजिहौं, ना मूरत चित लैहौं।
जो प्यारा मोरे घट माँ बसतु है, वाही को माथ नवैहौं॥ 1॥
ना कासी में करवत लैहों, न पचकोस में जैहौं।
प्राग जाय तीरथ नहिं करिहौं, जगर न सीस कटैहौं॥ 2॥
अजपा और अनाहू साधो, त्रिकुटी ध्यान न लैहौं।
पदम आसन खींच न बैठौं, अनहद नाहिं बजैहौं॥ 4॥
सबहीं जाप छोड़ि के साधो, गुरु का सुमिरन लैहौं।
गुरु मूरत हिरदय में छाई, वाही से ध्यान लगैहौं॥ 4॥
दुई खुदी हस्ती जब मेटे, निरंकार कहलैहौं।
गगन भूमि में राज हमारो, अनलहक धूम मचैहौं॥ 5॥
पलटू दास प्रेम की बाजी, गुरु ही से दाँव लगैहौं।
जीतौं तो मैं गुरु को पावौं, हारौं तो उनकी कहैहों॥ 6॥

शब्दार्थ—जगर= जगन्नाथ। अनाहू= अनाहतनाद। दुई= द्वैत, अनात्म। खुदी= अहंकार। अनलहक= अनलहक़, मैं सत्य, मैं ब्रह्म, अहं ब्रह्मास्मि। बाजी= दावं।

भावार्थ—मैं सब कुछ छोड़कर सद्गुरु का ध्यान लगाऊंगा॥ टेक॥ मैं ब्रह्मा, विष्णु और महादेव को नहीं पूजूंगा और न मूर्ति-पूजा में मन लगाऊंगा। जो आत्म देव चेतन मेरे शरीर में बसता है, मैं उसी को नमन करूंगा—आत्मचिंतन करूंगा॥ 1॥ न काशी में करवट लूंगा और न अयोध्या की पंचकोसी परिक्रमा करूंगा। प्रयागराज में भी जाकर तीर्थ नहीं करूंगा। जगन्नाथ में जाकर अपना सिर नहीं पटकूंगा॥ 2॥ हे संतो ! अजपा जप और अनाहतनाद का भी चक्कर छोड़ दूंगा, और त्रिकुटी में किसी कल्पित बिन्दु का ध्यान नहीं करूंगा। पद्मासन लगाकर अनाहतनाद का बाजा नहीं बजाऊंगा॥ 3॥ हे संतो ! सब जप छोड़कर केवल सद्गुरु का स्मरण करूंगा। मेरे हृदय में सद्गुरु की मूर्ति की छवि छायी है। मैं उसी का ध्यान करूंगा॥ 4॥ मैं जब द्वैत दृश्य और देह का अहंकार त्याग दूंगा, तब आकृतिविहीन शुद्ध चेतन कहलाऊंगा। जब मैं अनलहक़ की धूम मचाऊंगा—मैं सत्य हूं, मैं ब्रह्म हूं के भाव में डूबूंगा तब प्रपंचशून्य स्थिति में मेरा राज्य होगा॥ 5॥ पलटू साहेब कहते हैं कि मैं सद्गुरु से ही प्रेम का दावं लगाऊंगा। यदि मैं जीत गया तो सद्गुरु को पा जाऊंगा और हार गया तो उनका अपना कहलाऊंगा॥ 6॥

2. परमात्मा आत्मा है

शब्द-5

तोमें है तेरा राम बैरागिन, भूलि गया तोहि धाम॥टेक॥
घिव ज्यों रहै दूध के भीतर, मथे बिनु कैसे पावै।
फूल मँहै ज्यों बास रहतु है, जतन सेती अलगावै॥ 1॥
मिंहदी मँहै रहै ज्यों लाली, काठ में अगिन छिपानी।
खोदे बिना नहीं कोइ पावै, ज्यों धरती में पानी॥ 2॥
ऊख मँहै ज्यों कंद रहतु है, पेड़ रहै फल माहीं।
देस देसंतर ढुँढ़त फिरतु है, घट की सुधि है नाहीं॥ 3॥
पूरन ब्रह्म रहै तोही में, क्यों तू फिरै उदासी।
पलटू दास उलटि कै ताकै, तू ही है अबिनासी॥ 4॥

शब्दार्थ—कंद= क़ंद, चीनी, शकर।

भावार्थ—हे वैरागी ! तेरे भीतर तेरा राम है। तुम्हें अपना आत्मधाम भूल गया है॥ टेक॥ जैसे घी दूध में रहता है। मथन किये बिना वह कैसे मिल

सकता है? जैसे फूलों में सुगंधी रहती है, लोग प्रयत्न करके उसे उनसे अलग कर लेते हैं॥ 1॥ मेंहदी के पत्ते में जैसे लाली रहती है। उसे पीसने पर वह निकलती है। काष्ठ में आग रहती है। उसे रगड़कर प्रकट किया जाता है। जैसे पानी धरती के भीतर रहता है। धरती खोदे बिना कोई पानी कैसे पा सकता है?॥ 2॥ जैसे ऊख में शकर रहती है और फल के बीज में वृक्ष रहता है, वैसे तेरे भीतर तेरा परमात्मा रहता है। तू उसे देश-देशांतर में ढूंढ़ता-फिरता है। यह तुझे बोध ही नहीं है कि वह शरीर के भीतर ही है॥ 3॥ हे मनुष्य ! पूर्ण ब्रह्म तेरे अस्तित्व में है। तू दुखी होकर क्यों भटकता है? पलटू साहेब कहते हैं कि तू अपनी तरफ घूमकर देख। तू ही अविनाशी परमात्मा है॥ 4॥

शब्द-6

क्यों तू फिरै भुलानी जोगिनि, पिय को मरम न जानी॥टेक॥
अपने पिय को खोजन निकरी, है तू चतुर सयानी।
कंठ में माला खोजै बाहर, अजहूँ लै पहिचानी॥ 1॥
मृग की नाभि मँहै कस्तूरी, वाको बास बसानी।
खोजत फिरै नहीं वह पावै, होस न करै अपानी॥ 2॥
लरिका रहै बगल में तेरे, सहर ढोल दै छानी।
खसम रहै पलना पर सूता, पिय पिय करै दिवानी॥ 3॥
साचा सतगुरु खोजु जाय तू, दयावंत सत-ज्ञानी।
पलटू दास पिया पावैगी, लेहु बचन को मानी॥ 4॥

शब्दार्थ—जोगिनि= योगपरायणा मनोवृत्ति। पिय= प्रियतम, पति, परमात्मा। कंठ= गला। छानी= घूम डाली। खसम= पति।

भावार्थ—हे योगपरायणा विरहिनी मनोवृत्ति ! तू भूली-भूली क्यों भटकती है? तू प्रियतम परमात्मा का रहस्य नहीं समझती है॥ टेक॥ तू बुद्धिमान और समझदार है। तू प्रियतम परमात्मा को खोजने निकली है। जैसे किसी के गले में माला पड़ी हो, परंतु वह उसे बाहर खोजे, वैसे तेरी दशा है। तू आज भी पहचान ले॥ 1॥ मृग की नाभि में सुगंधित कस्तूरी है और वह उसकी सुगंधी से ओत-प्रोत है; परन्तु वह अज्ञानवश उसे वन-वन खोजता है और पाता नहीं है। वह अपनी तरफ चेत ही नहीं करता है कि कस्तूरी मेरी

नाभि में है॥ 2॥ बालक तेरे पास में है, परन्तु तू उसकी खोज में ढोल बजाकर शहर की गली-गली में भटक रही है। पति शय्या पर सोया है, परन्तु तू दीवानी प्रियतम-प्रियतम कहते हुए उसे बाहर पुकार रही है॥ 3॥ पलटू साहेब कहते हैं कि सच्चे सद्गुरु की खोज करो जो दयावान और सत्य स्वरूप का ज्ञानी हो, फिर तू उनके उपदेश से समझ जायगी कि प्रियतम परमात्मा आत्मा ही है। मेरी इस बात को मान लो॥ 4॥

3. सद्गुरु-संत की महिमा

शब्द-7

जै जै जै गुरु गोबिन्द, आरती तुम्हारी।
निरखत पदकंज कमल, कोटि पतित तारी॥टेक॥
कोटि भानु उदै जा के, दीपक के बारी।
छीर है समुद्र जा के, चरन का पखारी॥ 1॥
लख चौरासी तीनि लोक, जा की फुलवारी।
पुहुप लै कै का चढ़ावों, भँवर कै जुठारी॥ 2॥
बाल भोग कहा दीजै, द्वारे पदारथ चारी।
कुबेर जी भंडारी जा के, देबी पनिहारी॥ 3॥
सुन्न सिखर भवन जा के, तुरिया असवारी।
आठ पहर बाजा बजै, सबद की झनकारी॥ 4॥
काम क्रोध लोभ मोह, सतगुरु धै मारी।
पलटू दास देखि लिया, तन मन धन वारी॥ 5॥

शब्दार्थ—गोविन्द= पलटू साहेब के गुरु का नाम श्री गोविन्द साहेब। पखारी= धोवन। बाल भोग= प्रातः काल का कलेवा रूप, नैवेद्य, जलपान। वारी= न्योछावर, समर्पण।

भावार्थ—हे सद्गुरु श्री गोविन्द साहेब! आपकी बारंबार जय हो। मैं आपकी आरती करता हूं। आपके चरण-कमलों के दर्शन से करोड़ों पतितों का उद्धार हुआ॥ टेक॥ आपने जो आत्मज्ञान की ज्योति जलाई, उससे करोड़ों उदित सूर्य का प्रकाश तुल नहीं सकता। क्षीरसागर तो आपका चरण-धोवन है॥ 1॥ चौरासी लाख योनियां और तीनों लोक जिसकी फुलवारी हैं, उस सद्गुरु की पूजा में भंवरों के जुठारे फूलों को क्या चढ़ाऊं?॥ 2॥ जिसकी सेवा में अर्थ, धर्म, काम तथा मोक्ष चारों पदार्थ द्वार पर खड़े हैं, जिसके

भंडारी धनपति कुबेर जी हैं और लक्ष्मी देवी जिसके यहां पानी भरती हैं, उनको मैं जलपान रूप में क्या समर्पित करूं? ॥ 3 ॥ संकल्प-शून्य की ऊंचाई जिसका निवास स्थान है और आत्मलीनता रूपी तुर्यगा जिसका वाहन है, उसके यहां आठों पहर आत्मज्ञान-अनुभव का बाजा बजता है॥ 4 ॥ सद्गुरु ने काम, क्रोध, लोभ, मोहादि शत्रुओं को मार गिराया है। पलटू साहेब कहते हैं कि मैंने उनकी सच्चाई को देख लिया है, इसलिए उनके चरणों में अपने तन, मन, धन को न्योछावर कर दिया है॥ 5 ॥

विशेष—पलटू साहेब कवि हृदय हैं। कवि में भावुकता आती है और उसमें अतिशयोक्तियां भी। इन सबकी झलकियां ऊपर प्रदर्शित हैं।

शब्द-8

आरती कीजै संत चरन की, यही उपाय न आन तरन की॥टेक॥
संत को जस हरि स्री मुख गावै, संत की रज ब्रह्मा नहिं पावै॥ 1॥
संत चरन बैकुंठ है लोचत, संत चरन को तीरथ सोचत॥ 2॥
संत राम से अंतर नाहीं, इक रस देखत दुऊ माहीं॥ 3॥
लछमी है संतन की दासी, रज चाहत कैलास के बासी॥ 4॥
कोटि मुक्ति संतन की चेरी, पलटू दास मूल हम हेरी॥ 5॥

शब्दार्थ—लोचत= अभिलाषा करता है, इच्छा करता है। रज= धूल।

भावार्थ—संतों के चरणों की आरती करो। उनके चरणों में समर्पित हो जाओ। यही भवसागर से तरने का उपाय है। अन्य उपाय नहीं है॥ टेक॥ श्री विष्णु स्वयं अपने श्रीमुख से संतों के सुयश का गुणगान करते हैं। ब्रह्मा भी संत चरण-रज को अपने सिर पर रखने के लिए तरसते हैं॥ 1॥ बैकुंठ के देवता संत-चरण की सेवा करना चाहते हैं। संत-चरण में झुकने के लिए तीर्थवासी भी सोचते हैं॥ 2॥ संत और परमात्मा में भेद नहीं है। विवेकवान दोनों शब्दों में एक ही तत्त्व देखते हैं—उद्धारक परमात्मा संत हैं जो प्रत्यक्ष हैं॥ 3॥ लक्ष्मी तो संतों की चेरी है। कैलाश के वासी शिव जी भी संत-चरण की धूल चाहते हैं॥ 4॥ पलटू साहेब कहते हैं कि मैंने मुक्ति का कारण संतों को समझा है। करोड़ों मुक्ति संतों की सेविकायें हैं॥ 5॥

विशेष—संतों में भक्ति होगी, तब उनका सत्संग मिलेगा। फिर आत्मज्ञान होगा। इसके बाद उसके अनुसार आचरण करने से मोक्ष होगा।

4. शब्द विवेक

शब्द-9

अरे मोरे सबद बिबेकी हंसा हो, बैठो सबद की डार॥टेक॥
सबदै ओढ़ौ सबद बिछाओ, सबदै भूख अहार।
निसि दिन रहौ सबद के घर में, सबदै गुरु हमार॥ 1॥
लै हथियार सबद कै मारौ, सबद खेत ठहराओ।
कबहुँ कुचाल जो होइ तुम्हारी, सबद में भागि लुकाओ॥ 2॥
आदि अनादि सबद है भाई, सबदै मूल बिचारा।
जिनके चोट सबद की लागी, आवागवन निवारा॥ 3॥
सबदै मूल है सबकै साखा, सबदै सबद समाना।
पलटू दास जो सबद बिबेकी, सबद के हाथ बिकाना॥ 4॥

शब्दार्थ—खेत= रणक्षेत्र। लुकाओ= सुरक्षित होओ। आदि= मूल। अनादि = सदा से। मूल= कारण।

भावार्थ—ऐ मेरे शब्दों के विवेकी नीर-क्षीर के निर्णयता हंस ! निर्णय-शब्दों की शाखा पर बैठो॥ टेक॥ निर्णय शब्दों को शय्या और ओढ़ना बनाओ और उसी की भूख रखो तथा उसी का आहार करो। रात-दिन निर्णय शब्दों के भवन में रहो। निर्णय शब्द ही हमारा गुरु है॥ 1॥ निर्णय शब्दों के अस्त्र-शस्त्र लेकर भ्रम और वासना को मारो और निर्णय शब्दों के आधार पर ही मन के युद्ध क्षेत्र में अडिग रहो। यदि कभी तुम्हारे मन में खराब बात आये, तो भागकर निर्णय शब्दों की सुरक्षा में घुस जाओ॥ 2॥ हे भाई ! सदा से निर्णय शब्द ही कल्याण की जड़ हैं। विचार-विवेक प्रवाहित करने के लिए निर्णय शब्द ही कारण है। जिस मनुष्य के मन में निर्णय-शब्द की चोट लगी, वह संसार कचड़े का मोह त्यागकर भवसागर से पार हो गया॥ 3॥ कल्याण की जड़ निर्णय शब्द है और वे ही उसकी शाखाएं हैं। साधक निर्णय शब्दों में लीन हो जाता है। पलटू साहेब कहते हैं कि जो शब्दों के विवेकी हैं, वे निर्णय शब्दों के अनुसार अपने सत्स्वरूप आत्मा में समर्पित हो जाते हैं॥ 4॥

विशेष—कोई पुस्तक स्वतः प्रमाण नहीं होती, अपितु निर्णय से जो सही सिद्ध हो वही सत्य एवं प्रमाणित है। इसलिए पूर्ण निष्पक्ष हो निर्णयपूर्ण शब्दों का आदर करो।

शब्द-10

मुए सोई जीवते भाई, जिन्ह लगी सबद की चोट॥टेक॥
उनको काऊ कुछ कहै, उन तजी है जक्त की लाज।
वो सहज परायन होइ गये, उन सुफल किहा सब काज॥ 1॥
उनको और न भावई, इक भावत है सतसंग।
वो लोहा से कंचन भये, लगि पारस के परसंग॥ 2॥
जिन्ह ने सबद बिचारिया, तिन्ह तुच्छ लगै संसार।
वो आय पड़े सतसंग में, सब डारि दिहा सिर भार॥ 3॥
सबद छुड़ावै राज को, फिरि सबदै करै फकीर।
पलटू दास वो ना जियै, जिन्ह लगा सबद का तीर॥ 4॥

शब्दार्थ—परायन= निरत, लीन।

भावार्थ—जिन्हें निर्णय वचनों की चोट लगी, हे भाई ! वे जीते जी मर गये—अहंकार-शून्य हो गये॥ टेक॥ उन्होंने लोकलाज छोड़कर सत्संग-साधना का पथ अपनाया। उनको कोई कैसा भी उलटा-सीधा कहे, वे इससे निष्फिक्र रहते हैं। वे अपने सहज स्वरूप चेतन आत्मा में लीन हो गये; अतएव उन्होंने अपने कल्याण का सारा काम बना लिया॥ 1॥ उनको अन्य कुछ अच्छा नहीं लगता। उन्हें केवल विवेकवान संतों की संगत अच्छी लगती है। वे सद्गुरु रूपी पारस का स्पर्श पाकर लोहा से कंचन हो गये—विषयासक्त से जीवन्मुक्त हो गये॥ 2॥ जिन्होंने आत्मा-अनात्मा के विवेक के शब्दों का मनन किया, उनको संसार की सारी उपलब्धियां तुच्छ लगती हैं। वे मोह-माया का—सिर का सारा बोझा गिराकर सत्संग में समर्पित हो जाते हैं॥ 3॥ आत्मज्ञान और वैराग्य के शब्द सुनकर मनुष्य अपना सारा राजकाज छोड़ देता है और निर्णय शब्द मनुष्य को त्यागी बना देते हैं। पलटू साहेब कहते हैं कि वह मनुष्य सांसारिकता में नहीं रह पाता जिसे ज्ञान-वैराग्य प्रेरक शब्दों के बाण वेध देते हैं॥ 4॥

5. साधु और संत का महत्त्व

शब्द-11

धन जननी जिन जाया है, सुत संत सखी री॥ 1॥
तन मन धन उन पै लै दीजे, सत्तनाम जिन पाया है॥ 2॥

माया जाके निकट न आवै, तिरगुन दूर बहाया है॥ 3॥
कंचन कांच औ सत्रु मित्र को, भेद नहीं बिलगाया है॥ 4॥
सहज समाधि अखंडित जाकी, जग मिथ्या ठहराया है॥ 5॥
पलटू दास सोई सुतवंती, संत को गोद खिलाया है॥ 6॥

शब्दार्थ—धन= धन्य। तिरगुन= त्रिगुण, अनात्म, माया।

भावार्थ—हे मित्र! वह माता धन्य है जिसने संत-पुत्र पैदा किया है॥ 1॥ उनके चरणों में शरीर, मन और धन निछावर कर दो जिन्होंने सत्यनाम के अर्थस्वरूप आत्मज्ञान की प्राप्ति की है॥ 2॥ जिनके मन में माया-मोह नहीं लगता और जिन्होंने त्रिगुणात्मक अनात्म जगत की आसक्ति दूर फेंक दी है॥ 3॥ जो कंचन और कांच तथा शत्रु-मित्र में समता बरतते हैं॥ 4॥ जिन्होंने जगत को सारहीन समझ लिया है और जिनकी अखंड सहज समाधि सब समय लगी रहती है॥ 5॥ पलटू साहेब कहते हैं ऐसे संत को जिसने अपनी गोद में खेलाया है वही माता सच्ची पुत्रवती है॥ 6॥

शब्द-12

संत सिपाही बाँके अवधू, फिर पाछे नहिं ताके॥टेक॥
दिनदिन परै कदम आगे को, करैं मुलुक में साके।
हाँक देत हैं रन के ऊपर, रहैं प्रेम रस छाके॥ 1॥
कच्चा छीर नहीं वै पीवैं, पक्का छीर पिवैं वे माँ के।
आलम डेरा देखि कै उनको, छोड़ै सबद धड़ाके॥ 2॥
उनको भूख पियास न लागै, ज्यों खाये त्यों फाके।
अस्तुति निन्दा दुष्ट मित्र को, एक राह में हाँके॥ 3॥
काम क्रोध की गर्दन मारैं, दिल में बहुत फराखे।
पलटू दास फरक आलम से, वे असनाव हैं काके॥ 4॥

शब्दार्थ—बाँके= बांका, वीर, साहसी। साके= कीर्तिमान। आलम= संसार, जन समूह। डेरा= भीड़। फाके= भूखे। फराखे= फ़राख, उदार। फरक= फ़रक़, दूर। असनाव= मित्र, यार।

भावार्थ—हे अवधू! वे ही संत वीर सिपाही हैं जो पीछे लौटकर संसार के भोगों की ओर नहीं देखते हैं॥ टेक॥ प्रतिदिन उनके पैर वैराग्य-पथ में आगे पड़ते हैं। वे संसार में अपने त्याग का उत्तम कीर्तिमान उपस्थित करते

हैं। वे मानस-युद्ध में मनोविकारों को ललकारकर मारते हैं। वे आत्मस्थिति के प्रेम-रस में निरंतर तृप्त रहते हैं॥ 1॥ उन्होंने माता का कच्चा दूध नहीं पीया है, किन्तु पक्का दूध पीया है—वे पक्के निश्चय वाले होते हैं। जनसमूह उनको देखकर जोर से उलटा-पलटा कहता है॥ 2॥ किन्तु उनको संसार के भोग तथा सम्मान की भूख-प्यास नहीं लगती। वे तृप्ति और भूख की स्थिति में समतापूर्वक रहते हैं। वे दुष्टों से निन्दा तथा मित्रों से प्रशंसा पाकर दुखी-सुखी नहीं होते, अपितु समान भाव से रहते हैं॥ 3॥ पलटू साहेब कहते हैं कि उन्होंने काम-क्रोधादि को नष्ट कर दिया है। वे हृदय के अत्यंत उदार होते हैं। वे दुनियादारी भीड़ से दूर रहते हैं। वे किसमें मोह करेंगे? किसी से नहीं॥ 4॥

शब्द-13

दिल को करहु फराख फकीरा, रहु मुहासबे पाक॥टेक॥
जो आवै सो देहु लुटाई, क्या कौड़ी क्या लाख।
खाहु खियावहु मगन रहौ तुम, सबसे रहु बेबाक॥ 1॥
औरत जो दरसन को आवै, नजर से ताकहु पाक।
सोना रूपा लाल जवाहिर, तुम्हरे लेखे खाक॥ 2॥
माया को चिरकीन लखौ तुम, देखि कै मूँदौ नाक।
जब आवै तब देहु चलाई, तनिक न रहियो ताक॥ 3॥
संत चकोर को संग्रह नाहीं, संग्रह करै हलाक।
पलटू दास कहौं मैं सब से, बार बार दै हाँक॥ 4॥

शब्दार्थ—फराख= उदार। मुहासबे= हिसाब-किताब में, लेखा-जोखा में। बेबाक= चुकाया हुआ, साफ-सुथरा। पाक= पवित्र। चिरकीन= चिरकीं, मैला, गंदा। हलाक= मरा हुआ, मृत।

भावार्थ—हे फकीर! अपने हृदय को उदार रखो और व्यवहार के हिसाब-किताब में पवित्र रहो॥ टेक॥ जो भी तुम्हारे पास आवे चाहे कौड़ी चाहे लाखों की संपत्ति, उसे समाज की सेवा में लगाओ। खाओ और खिलाओ, मन से प्रसन्न रहो और सबसे व्यवहार में साफ-सुथरा रहो॥ 1॥ यदि कोई नारी तुमसे मिलने आवे तो उसे पवित्र दृष्टि से देखो। सोना हो या चांदी हो या लाल-जवाहर, तुम्हारी दृष्टि में वह सब मिट्टी ही दिखना चाहिए॥ 2॥ माया को गंदी वस्तु ही समझो और उसे देखकर अपनी

नाक मूंद लो—माया के मोह से दूर रहो। माया की चीज जब आवे तब उसे समाज की सेवा में लगाओ। इसमें थोड़ी भी ढिलाई न करो॥ 3॥ पलटू साहेब कहते हैं कि मैं बारम्बार पुकारकर सबसे कहता हूं कि संत और चकोर के लिए संग्रह करना कल्याणकारी नहीं है। यदि वे संग्रह करेंगे तो मरेंगे॥ 4॥

विशेष—यह धारणा है कि चकोर पक्षी चंद्रमा का प्रेमी होता है। वह अंगार को चंद्रमा का अंश मानकर उसे निगल जाता है, किन्तु जलता नहीं है; किन्तु यदि वह अंगार अपने पास संग्रह करके रखेगा तो जल मरेगा। इसी प्रकार साधु जीवन-निर्वाह ले, किन्तु अपने व्यक्तिगत जीवन के लिए धन का अधिक संग्रह न करे। यदि संग्रह करेगा तो आत्मशांति से दूर हो जायेगा।

शब्द-14

संतन संग आनंद परम सुख॥ टेक॥

जेकरी संगति ज्ञान होत है, मिटत सकल दुख द्वन्द।
उनके निकट काल नहिं आवै, टूटि जात जम फंद॥ 1॥
फूल संग से तेल बखानो, सब कोइ करत पसंद।
पारस छुए लोह भा कंचन, दुरमति सकल हरंद॥ 2॥
हेलुवाई ज्यों अवटि जारि कै, करत खाँड़ से कंद।
पलटु दास यह बिनती मोरी, अजहुँ चेत मतिमंद॥ 3॥

शब्दार्थ—हरंद= दूर हो गयी। खाँड़= गीला गुड़। कंद= सफेद शकर, मिस्री।

भावार्थ—संतों की संगत में परम आनंद और स्थिर सुख मिलता है॥ टेक॥ जिन संतों की संगति में रहने से आत्मा-अनात्मा का ज्ञान होता है और सारा दुख-द्वंद्व मिट जाता है, उन संतों के निकट मनःकल्पना रूपी काल नहीं आता है और उनका वासना-बंधन टूट जाता है॥ 1॥ फलों की सुगंध पाकर तेल सुगंधदार प्रशंसनीय हो जाता है। उसको सब रुचि से ग्रहण करते हैं। पारस के स्पर्श से लोहा सोना हो जाता है। इसी प्रकार विवेकवान संतों की संगत पाकर सत्पात्र साधक की सारी दुर्बुद्धि दूर हो जाती है॥ 2॥ पलटू साहेब कहते हैं कि हे मंदबुद्धि मनुष्य! मैं निवेदन करता हूं, तू आज भी सावधान हो जा। जैसे हलवाई खांड़ को पकाकर उसे उत्तम कंद बना देता है, वैसे संत तुझे शोधकर शुद्ध बना देंगे। अतएव उनकी संगत कर॥ 3॥

शब्द-15

चतुरन से हम दूरि, कहत ऊधो से स्री मुख॥टेक॥
तीरथ बरत जोग जप तप में, मोसे न भेंट सहै कितनौ दुख।
ज्ञान कथै बहु भेष बनावै, इहौ बात सब तुक्ख॥ 1॥
नेम अचार करै कोउ कितनौ, कवि कोबिद सब खुक्ख।
तिरदंडी सरबंगी नागा, मरै पियास औ भुक्ख॥ 2॥
तजि पाखंड करै सतसंगति, जहाँ भजन में सुक्ख।
पलटु दास हरि कहि ऊधो से, सतसंगति में सुक्ख॥ 3॥

शब्दार्थ—तुक्ख= तुच्छ। खुक्ख= व्यर्थ। सरबंगी= निष्काम, उदार, समतालु। भुक्ख= भूखा।

भावार्थ—श्री कृष्ण महाराज अपने श्री मुख से ऊधो से कहते हैं कि मैं चतुर-चालाक लोगों से दूर रहता हूं॥ टेक॥ तीर्थ, व्रत, हठयोग, जप, तप, करके कोई कितना ही दुख सहे, मुझसे नहीं मिल सकता—आत्मसाक्षात्कार नहीं कर सकता। कोई ज्ञान की बड़ी कथनी करे, बहुत तड़क-भड़क वेष बना ले, तो ये सब बातें तुच्छ हैं॥ 1॥ कोई बहुत नियम से रहे, कितना बड़ा आचारी बन जाय, कवि और पंडित हो जाय, ये सब बातें व्यर्थ हैं। कोई त्रिदंडी बने, सरबंगी बने, नागा बने, बहुत भूख-प्यास सहे, तो इससे स्वरूप-बोध नहीं होगा॥ 2॥ पलटू साहेब कहते हैं कि श्री कृष्ण ने ऊधो से यही कहा कि कल्याणार्थी सारा पाखंड छोड़कर विवेकवान संतों का सत्संग करे। सत्संग और आत्मशोधन में ही स्थिर सुख है॥ 3॥

शब्द-16

जिन पाया तिन पाया है, सतसंग सखी री॥टेक॥
तीरथ बरत करै कोउ कितनौं, नाहक जनम गँवाया है॥ 1॥
जप तप यज्ञ करै कोउ कितनौं, फिरि फिरि गोता खाया है॥ 2॥
बेद पढ़ी पढ़ि पंडित मरिगा, फिरि चौरासी आया है॥ 3॥
पलटू दास बात है सहजी, संतन भेद बताया है॥ 4॥

शब्दार्थ—गोता खाया है= मन के भवसागर में डूबा है।

भावार्थ—हे मित्र ! जिन्होंने आत्मबोध और आत्मशांति पायी, वे सत्संग से ही पाये॥ टेक॥ तीर्थयात्रा और उपवास कोई कितना ही कर डाले, वह व्यर्थ में जन्म खोता है॥ 1॥ कोई जप, तप, यज्ञ कितने ही कर डाले,

आत्मबोध बिना बारंबार मन के भवसागर में डूबता है ॥ 2 ॥ शास्त्र-अध्ययन कर-करके विद्वान मर जाते हैं और वे पुनः जगत-नगर में भटकते हैं ॥ 3 ॥ पलटू साहेब कहते हैं कि कल्याण का रास्ता सहज है। संतों ने आत्मबोध का रहस्य सब समय बताया है। अतएव सत्संग करो ॥ 4 ॥

6. संसार की क्षणभंगुरता

शब्द-17

कहवाँ से जिव आये कहवाँ समाने हो साधो।
का देखि रहेउ भुलाय कहाँ लिपटाने हो साधो॥ 1॥
निर्गुन से जिव आये सर्गुन समाने हो साधो।
भूलि गये हरि नाम माया लिपटाने हो साधो॥ 2॥
जैसे तुरकी घोड़ खैंचि लट बागा हो साधो।
ऊँच सीस भये नीच चुगन लागे कागा हो साधो॥ 3॥
आठ काठ कै पिंजरा दस दरवाजा हो साधो।
कौनिक निकसा प्रान कौन दिसि भागा हो साधो॥ 4॥
रोवत घर की नारि केस लट खोले हो साधो।
आज मँदिर भयो सून कहाँ गये राजा हो साधो॥ 5॥
आलहि बाँस कटाइन डँडिया फँदाइन हो साधो।
पाँच पचीस बराती लेइ सब धाये हो साधो॥ 6॥
तीरे दिहिन उतारि सकल नहवावैं हो साधो।
करि सोरहो सिंगार सबै जुरि आये हो साधो॥ 7॥
आलहि चंदन कटाइन घेरि घर छाइन हो साधो।
लोग कुटुम परिवार दिहिन पहुड़ाई हो साधो॥ 8॥
लाइ दिहिन मुख आगि काठ करि भारा हो साधो।
पुत्र लिये कर बाँस सीस गहि मारा हो साधो॥ 9॥
चहुँ दिसि पवन झकोरै तरवर डोलै हो साधो।
सूझत वार न पार कौन दिसि जाना हो साधो॥10॥
हियवाँ नहिं कोइ आपन जेसे मैं बोलों हो साधो।
जस पुरइनि कर पात अकेला मैं डोलों हो साधो॥11॥
विष बोयों संसार अमृत कैसे पावों हो साधो।
पुरब जनम कर पाप दोस केहि लावों हो साधो॥12॥

भौसागर की नदिया पार कैसे पावों हो साधो।
गुरु बैठे मुख मोड़ि मैं केहि गोहरावों हो साधो॥13॥
जेहि बैरिन कर मूल ताहि हित मान्यो हो साधो।
पलटू दास गुरु ज्ञान सुनत अलगान्यो हो साधो॥14॥

शब्दार्थ—आठ काठ=आठ अंग—घुटना, हाथ, पांव, छाती, सिर, वचन, दृष्टि और बुद्धि। दस दरवाजा=दो आंख, दो नाक, दो कान, मुख, गुदा, शिश्न और ब्रह्मरंध्र। आलहि=तुरंत। पहुड़ाई=लिटा दिया।

भावार्थ—हे साधो! जीव कहां से आया है और यह कहां लीन हो गया है? हे साधो! किसे देखकर यह भूल रहा है और किसमें आसक्त हो गया है?॥ 1॥ जीव का शुद्ध स्वरूप चेतन तीनों गुणों से परे है, किन्तु वह जड़ त्रिगुण में लिपटा है। वह हरिनाम स्वरूप अपने आत्मा को भूलकर माया में आसक्त हो गया है॥ 2॥ जैसे तेज तुर्की घोड़ा बागडोर खींचते ही भाग खड़ा होता है, वैसे यह जीव समय आते ही शरीर से निकल भागता है। बड़े-बड़े अहंकारियों के सिर भी नीचे हो जाते हैं और यदि वे जंगल में मरते हैं तो उनके शरीर को फोड़-फोड़ कर कौए खाने लगते हैं॥ 3॥ आठ अंगों तथा दस दरवाजे के इस शरीर-पिंजड़े से प्राणधारी जीव किस द्वार से निकलकर किस दिशा में भाग खड़ा हुआ, कोई नहीं जान पाता है॥ 4॥

हे साधो! घर की नारी बालों की लट खोलकर बिफर कर रो रही है। आज मंदिर सूना हो गया। मेरा राजा प्राणवल्लभ कहां गया?॥ 5॥ तुरंत लोग हरे बांस कटाये और अर्थी रूपी डोली सजा दिये और पांच-पचीस बराती उसे लेकर श्मशान घाट को ले दौड़े॥ 6॥ श्मशान घाट पर उतार दिये और उसे स्नान कराने लगे। पीछे उसे शववस्त्र पहनाकर फूलों से शृंगारित कर दिये और साथी-बराती घेरकर खड़े हो गये॥ 7॥ तुरंत चंदन की लकड़ी फड़वाकर उससे चिता रूपी घर को चारों तरफ से छा दिये। पश्चात परिवार तथा कुटुंबी लोग शव को उस पर लिटा दिये॥ 8॥

हे साधो! इसके बाद शव के मुख में आग लगा दिये और लकड़ी का भार ऊपर से लाद दिये। पश्चात पुत्र हाथ में बांस लेकर परिक्रमा करते हुए शव के सिर पर जोर से मारने लगा॥ 9॥ हे साधो! वासना-वायु चारों ओर से बहता है और उसमें यह शरीर-वृक्ष हिलता है। अबोधी जीव को वार-पार नहीं दिखता है। किस दिशा में जाना है, पता नहीं चलता है॥ 10॥ हे साधो!

इस संसार में मेरा कोई अपना नहीं है जिससे मैं बात करूं। हे साधो ! जैसे पुरइन के पत्ते हवा में हिलते हैं वैसे मैं अकेला भटकता हूं॥ 11॥ हे साधो ! मैंने संसार में आकर और माया-मोह बनाकर विष के बीज बोये हैं फिर अमृत कहां पाऊंगा? हे साधो ! यह मेरे पूर्व जन्मों का विषयाध्यास रूप पाप है जिसमें मैं आज भी बंधा हूं। मैं अन्य किसको दोष दूं?॥ 12॥

हे साधो ! मन की वासना रूपी भवसागर की नदी विकराल है। उसको मैं कैसे पार करूं? सद्गुरु मुझसे मुख घुमाकर अपनी स्वरूपस्थिति में बैठे हैं। अब मैं किसको पुकारूं?॥ 13॥ हे साधो ! सारे मानसिक विकार रूप शत्रुओं की जो जड़ है, उस भोग-कामना तथा देहाभिमान को मैंने अपना हितकारी माना है। पलटू साहेब कहते हैं कि मैं जब सद्गुरु के उपदेश से अपने असंग आत्म स्वरूप को ठीक से समझ पाया, तब मैं सारे दृश्यमान स्थूल-सूक्ष्म मोह-माया से सर्वथा पृथक हो गया॥ 14॥

शब्द-18

लादि चला बंजारा है, कोउ संग न साथी॥टेक॥
जाति कुटुम सब रुदन करत है, फेरि बैठि मुख दारा है॥ 1॥
छुटिगै बरदी लुटिगै टाँडा, निकरि गया वह प्यारा है॥ 2॥
बैठे काग सून भा मंदिल, कोई नहीं रखवारा है॥ 3॥
पलटू दास तजो मृगतृस्ना, झूठा सकल पसारा है॥ 4॥

शब्दार्थ—बंजारा= बनजारा, व्यापारी। दारा= स्त्री, पत्नी। बरदी= बैल, शरीर। टाँडा= समूह, भीड़, वह सामान जो लादकर एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाता है।

भावार्थ—जीव-व्यापारी अपने कर्मों की गठरी लादकर चल दिया। उसका कोई संगी-साथी न हो सका॥ टेक॥ कुटुम्ब-परिवार के लोग विलाप कर रहे हैं। पत्नी रो-धोकर और मुख घुमाकर बैठ गयी॥ 1॥ शरीर रूपी बैल छूट गया और उस पर लदा हुआ सारा माल-ऐश्वर्य छूट गया। जो प्रियतम था वह आत्मा निकल गया॥ 2॥ अब सूने भवन पर कौए बैठ रहे हैं। उसका कोई रखवाला नहीं रह गया है॥ 3॥ पलटू साहेब कहते हैं कि हे कल्याणार्थी ! माया का सारा विस्तार झूठा है। इसलिए इसकी मृगतृष्णा सर्वथा छोड़ दो॥ 4॥

शब्द-19

भजि लीजै हरि नाम, काम सकल तजि दीजै॥टेक॥
मातु पिता सुत नारि बांधवा, आवै ना कोउ कामा।
हाथी घोड़ा मुलुक खजाना, छूटि जैहैं धन धामा॥ 1॥
जब तुम आया मूठी बाँधे, हाथ पसारे जाना।
सूखा हाथ जगत की माया, ताहि देखि ललचाना॥ 2॥
नर तन सुभग भजन के लायक, कौड़ी हाट बिकाना।
हरिगा ज्ञान परा कूसंगति, अमृत में बिष साना॥ 3॥
एक न भूला दुइ ना भूला, भूला सब संसारा।
पलटू दास हम कहा पुकारी, अब ना दोस हमारा॥ 4॥

शब्दार्थ—सुभग= भाग्यवान, सुंदर।

भावार्थ—हे शांति इच्छुक! जगत की सारी कामनाएं त्यागकर हरिनाम-भजन कर॥ टेक॥ याद रख, माता-पिता, पुत्र, पत्नी तथा बंधु-बांधव तेरा कल्याण नहीं कर सकते। हाथी, घोड़े, देश, कोश, संपत्ति और सदन सब एक दिन छूट जायेंगे॥ 1॥ मुट्ठी बांधकर तू जन्मा था और हाथ पसार कर जाना है। जगत की माया से तेरे हाथ खाली ही रहेंगे। परन्तु तू उसी को देखकर ललचा रहा है॥ 2॥ यह मानव शरीर भाग्यशाली है। इसमें आत्मज्ञान तथा आत्मशोधन करके शांति प्राप्त किया जा सकता है, परन्तु तू इसे विषय-भोगों में खोकर संसार-बाजार में कौड़ी में बेच रहा है। तू कुसंगति में पड़ा है, इसलिए तेरा आत्मज्ञान खो गया है। तूने अमृत में विष मिला दिया है—अपने शुद्ध स्वरूप चेतन को विषयों में जोड़ दिया है॥ 3॥ पलटू साहेब कहते हैं कि एक मनुष्य नहीं भूला है, दो मनुष्य नहीं भूला है, अपितु पूरा संसार ही भूला है। मैं पुकारकर कहता हूं। अब गुरु को दोष न देना॥ 4॥

शब्द-20

वृद्ध भये तन खासा, अब कब भजन करहुगे॥टेक॥
बालापन बालक सँग बीता, तरुन भये अभिमाना।
नख सिख सेती भई सफेदी, हरि का मरम न जाना॥ 1॥
तिरिमिरि बहिर नासिका चूवै, साक गरे चढ़ि आई।
सुत दारा गरियावन लागे, यह बुढ़वा मरि जाई॥2॥

तीरथ बर्त एकौ नहिं कीन्हा, नहिं साधु की सेवा।
तीनिउ पन धोखे में बीते, ऐसे मूरुख देवा॥ 3॥
पकरा आइ काल ने चोटी, सिर धुनि धुनि पछिताता।
पलटू दास कोऊ नहिं संगी, जम के हाथ बिकाता॥ 4॥

शब्दार्थ—तिरमिर= आंख का रोग । साक= दमा। यम= वासना।

भावार्थ—शरीर पूरा वृद्ध हो गया है, अब कब भजन-साधना करोगे?॥ टेक॥ तुम्हारा बालपन बालकों के साथ खेलते-कूदते बीत गया। जवानी आयी, तो तुम अभिमानी बन बैठे। अब सिर से पैर तक के बाल सफेद हो गये, परंतु अपने आत्मतत्त्व का रहस्य नहीं समझा॥ 1॥ आंख में रोग लग जाने से ठीक दिखाई नहीं देता, कान बहरे हो गये हैं, नाक से गंदगी चूती है और दमा से गले तक सांस चढ़ती रहती है। पुत्र-पत्नी गाली देते हैं कि यह बुढ़वा मर जाता तो अच्छा होता॥ 2॥ न तूने तीर्थ-व्रत किया और न संतों की सेवा की। तेरी तीनों अवस्थाएं धोखे में बीत गयीं। तू मूर्ख मिट्टी का देवता बन गया॥ 3॥ पलटू साहेब कहते हैं कि जब मौत ने आकर तेरी चोटी पकड़ी, तब तू सिर पटक-पटक कर पश्चाताप करता है। याद रख, तेरा कोई साथ नहीं देगा। तू वासनाओं के हाथों बिक गया है॥ 4॥

शब्द- 21

भजन करु मूरख कहँ भटकै रे॥ टेक॥
यह संसार माया कै लासा, छूटै नाहिं जो सिर पटकै रे॥ 1॥
माया मोह रैन का सपना, झूठे माहिं कहा अटकै रे॥ 2॥
भरा घट घन हरि नाम अमी है, जग चहला में लपटै रे॥ 3॥
मिलु सतगुरु तोहि नाम पिलावै, जावै तपनि जुगन जुग कैरे॥ 4॥
नहिं डेरात जम बाँधि के ठगिहैं, ऊपर गोड़ नरक लटकै रे॥ 5॥

शब्दार्थ—घन= पूर्ण। चहला= कीचड़।

भावार्थ—हे मूर्ख! आत्मचिंतन कर। तू कहां भटक रहा है?॥ टेक॥ यह संसार माया का लासा है। आत्मशोधन के बिना यह छूट नहीं सकता, चाहे तू सिर पटककर थक जाय॥ 1॥ जहां तक माया की चमक-दमक है और उसका मोह होता है, यह सब रात के सपने के समान सारहीन और असत्य है। ऐसी झूठी माया में तू क्यों फंस रहा है?॥ 2॥ हरिनाम का अमृत

तेरे भीतर पूर्णरूपेण भरा है—तू अमृत स्वरूप आत्मा है, फिर तू संसार के कीचड़ में क्यों लिपट रहा है? ॥ 3 ॥ तू सद्गुरु के दर्शन कर। वे तुझे स्वस्वरूप का अमृत बोध देंगे। फिर अनादिकाल से लगी तेरी जलन समाप्त होकर तू शीतल हो जायगा ॥ 4 ॥ तू माया-मोह से क्यों नहीं डर रहा है? याद रख, वासना रूपी यम तुझे बांधकर पीड़ित करेगा। तू पुनः माता के गर्भ में पैर ऊपर तथा सिर नीचे करके लटकेगा ॥ 5 ॥

शब्द-22

पाती आई मोरे पीतम की, साईं तुरत बुलायो हो ॥ टेक ॥
इक अँधियारी कोठरी, दूजे दिया न बाती।
बाँह पकरि जम ले चले, कोइ संग न साथी ॥ 1 ॥
सावन की अँधियरिया, भादों निज राती।
चौमुख पवन झकोरही, धड़कै मोरि छाती ॥ 2 ॥
चलन तो हमैं जरूर है, रहना यहँ नाहीं।
का लैके मिलब हजूर से, गाँठी कछु नाहीं ॥ 3 ॥
पलटु दास जग आय के, नैनन भरि रोया।
जीवन जनम गँवाय के, आपै से खोया ॥ 4 ॥

शब्दार्थ—यम= वासना। हजूर= हुजूर, हाकिम।

भावार्थ—मेरे प्रियतम मित्र मृत्यु का पत्र आया है। स्वामी ने तुरंत बुलाया है ॥ टेक ॥ कब्र की एक अंधियारी कोठरी होगी। उसमें कोई प्रकाश नहीं होगा। मौत बांह पकड़कर ले चली ! उससे छुड़ाने वाला मेरा कोई संगी-साथी नहीं दिखा ! मौत ने कब्र में डाल दिया ॥ 1 ॥ सावन-भादों की काली घटा की घोर अंधियारी की तरह मेरी रात होगी। चारों तरफ से झंझावात के झकोर में पड़े हुए के समान मैं वासना के झोंके में पड़ा डोल रहा हूं। इससे मेरा हृदय धड़क रहा है ॥ 2 ॥ मुझे इस संसार से अवश्य चलना है। यहां मुझे रहना नहीं है। मेरे पास आत्मबोध तथा आत्मशुद्धि का बल नहीं है, फिर मैं किस बल पर भवबंधन के नियम रूपी हाकिम से बचूंगा ॥ 3 ॥ पलटू साहेब कहते हैं कि संसार में आकर मनुष्य जीवनपर्यंत केवल रोता है। यह अपने आपको न समझकर जीवन-जन्म को माया-मोह में डालकर खो देता है ॥ 4 ॥

शब्द-23

घरिय पहर में कूच तुम्हारा, मन तुम भयो अनारी हो॥ 1॥
केहि कारन धन धाम सँवारहु, नाहक करहु बेगारी हो॥ 2॥
जम राजा से का तुम कहिहौ, पूछै दै दै गारी हो॥ 3॥
घर की नारी फेरि मुँह बैठी, बड़ी रही हितकारी हो॥ 4॥
गाँठी दाम राह न पैंड़ा, बूड़ि मुए मँझधारी हो॥ 5॥
पलटु दास संतन बलिहारी, हमको पार उतारी हो॥ 6॥

शब्दार्थ—घरिय= घड़ी। पैंड़ा= पथ, रास्ता।

भावार्थ—हे मनवशी जीव! घड़ी-पहर में तेरी संसार से विदाई हो जायगी। परंतु तू मूढ़ बना सो रहा है॥ 1॥ तुम किसलिए धन-धाम के शृंगार में लगे हो? तुम व्यर्थ में यह बेगारी कर रहे हो॥ 2॥ जब तुम्हारा सामना यमराज से पड़ेगा, तब वह तुम्हें गाली दे-दे कर पूछेगा कि तूने संसार में घिनौने कर्म क्यों किये, फिर तुम उसको क्या उत्तर दोगे?॥ 3॥ घर में रहनेवाली तुम्हारी पत्नी तुम्हारा बड़ा हित करनेवाली थी, परंतु वह तुमसे मुंह मोड़ कर बैठ जायेगी। उसकी पहुंच उस तक नहीं होगी। तुम्हें अपने कर्मफल स्वयं भोगने होंगे॥ 4॥ संसार का पथ लंबा है। तुम्हारे पास रास्ते का कोई खर्च-साधन नहीं है। तुम बीच धारा में डूबकर मरोगे॥ 5॥ पलटू साहेब कहते हैं कि मैं संतों के चरणों में अपने को न्योछावर करता हूं। उन्होंने मुझको संसार-सागर से पार उतार दिया॥ 6॥

विशेष—कोई ऐसा यमराज नहीं है जो जीव से पूछताछ करे। वस्तुतः अपने कर्मों के संस्कार अंतःकरण में छपते हैं और उनके फल भोगने पड़ते हैं। इसलिए जीवन का लाभ है उत्तम कर्म। वे ही सब समय जीव को सुख देते हैं। मन की तरंगों से परे रहना जगत से पार होना है।

शब्द-24

कै दिन का तोरा जियना रे, नर चेतु गँवार॥टेक॥
काची माटी कै घैला हो, फूटत नहिं बेर।
पानी बीच बतासा हो, लागै गलत न देर॥ 1॥
धूआँ कौ धौरेहर हो, बारू कै भीत।
पवन लगै झरि जैहै हो, तृन ऊपर सीत॥ 2॥

जस कागद कै कलई हो, पाका फल डार।
सपने कै सुख संपति हो, ऐसो संसार॥ 3॥
घने बाँस का पिंजरा हो, तेहि बिच दस द्वार।
पंछी पवन बसेरू हो, लावै उड़त न बार॥ 4॥
आतसबाजी यह तन हो, हाथे काल के आग।
पलटु दास उड़ि जैबहु हो, जब देइहि दाग॥ 5॥

शब्दार्थ—घैला= घड़ा। धौरेहर= धौरहरा, मीनार। बारू= बालू। आतसबाजी = आतिशबाज़ी, पटाखा आदि, आग से खेलना।

भावार्थ—हे भोला मनुष्य ! सावधान हो जा ! तेरा जीवन कितने दिनों का है? ॥ टेक॥ मिट्टी के कच्चे घड़े के फूटने में देरी नहीं लगती। पानी में पड़े बताशे के गलने में देरी नहीं लगती॥ 1॥ धुएं की मीनार, बालू की भित्त और घास पर पड़ी ओस की बूंदें वायु के झोंके से छिन्न-भिन्न हो जाती हैं॥ 2॥ जैसे कागज का लेप क्षण में गलकर धुल जाता है, पके फल शाखा से गिर जाते हैं, और सपने में मिली सुख-संपत्ति जागने पर खो जाती है, वैसे संसार की सारी उपलब्धियां खो जाती हैं॥ 3॥ सघन हड्डियों का यह शरीर पिंजड़ा है। इसमें कान, मुख आदि दस दरवाजे हैं। इसमें प्राणपक्षी की सवारी पर जीव बैठा है। इसके उड़ जाने में देरी नहीं लगती॥ 4॥ पलटू साहेब कहते हैं कि यह शरीर पटाखे का खेल है। काल ने अपने हाथ में आग ले रखा है। जैसे वह उसे दागेगा, वैसे जीव इस पिंजड़ा को छोड़कर उड़ जायेगा॥ 5॥

शब्द-25

काल बली सिर ऊपर हो, तीतर का बाज।
चंगुल तर चिचियैहौ हो, तब मिटिहैं मिजाज॥ 1॥
भजन बिना का नर तन हो, रैयत बिनु राज।
बिना पिता का बालक हो, रोवै बिनु साज॥ 2॥
देव रु पितर उपासक हो, परिहैं जम गाज।
बहुत पुरुष कै नारी हो, बिस्वा नहिं लाज॥ 3॥
काम क्रोध बिनु मारे हो, का दिहे सिर ताज।
पलटु दास धृग जीवन हो, सब झूठ समाज॥ 4॥

शब्दार्थ—मिजाज= प्रकृति, तेवर। रैयत= प्रजा। गाज= बिजली, चिर्री।

भावार्थ—हे मनुष्य ! बलवान काल तेरे ऊपर नाच रहा है। जैसे बाज पक्षी तीतर को धर दबोचता है, वैसे काल प्राणी को मार गिराता है। हे अभिमानी ! तू मौत के चंगुल में पड़ा विलख-विलख कर रोयेगा, तब तेरा तेवर नष्ट हो जायेगा॥ 1॥ अंतर्मुख हुए बिना मनुष्य शरीर वैसे है जैसे राजा के बिना प्रजा अनाथ हो जाती है और जैसे बिना माता-पिता का बालक अनाथ होकर विलखता है॥ 2॥ जो लोग केवल कल्पित देवी-देवता और मृत पितर के उपासक हैं, उनके ऊपर वासनाओं की चिर्री पड़ेगी। बहुत पुरुषों की स्त्री वेश्या होती है। उसे लज्जा नहीं होती, वैसे नाना देवी-देवताओं की उपासना में भटकनेवाले मनुष्य आत्मबोध और आत्मशांति से दूर रहते हैं॥ 3॥ पलटू साहेब कहते हैं कि हे कल्याणेच्छुक ! यदि तुमने काम-क्रोधादि को मारकर आत्मशांति नहीं पायी तो सिर पर ताज लगाने से क्या होगा? ऐसे जीवन को धिक्कार है। जिसमें मेहित होकर हम भटक रहे हैं, वह माया का साज-सामान क्षणिक होने से झूठा है॥ 4॥

शब्द-26

मेरे मनुआँ रे तुम तो निपट अनारी॥ टेक॥

कौड़ी कौड़ी लाख बटोरहु, नाहक किहेहु बेगारी।
तहु चढ़ि चलेहु चारि के काँधे, दूनों हाथ पसारी॥ 1॥
बहुरि बहुरि कै राँध परोसी, आये मूड़ फेकारी।
जाति कुटुँब सब रोवन लागे, सँग लागि बूढ़ि महतारी॥ 2॥
तुहरे संग कोऊ नहिं जाई, कोठा महल अटारी।
अपने स्वारथ को सब रोवै, झूठ मूठ कै आरी॥ 3॥
धरमराय जब लेखा मँगिहैं, करबेहु कौन बिचारी।
पलटू कहत सुनो भाई साधो, इतनी अरज हमारी॥ 4॥

शब्दार्थ—राँध परोसी= रांध पड़ोसी, आस-पास के लोग। मूड़ फेकारी= सिर उघारे। आरी= यारी, मित्रता।

भावार्थ—हे मेरे मन ! तू बड़ा बेवकूफ है॥ टेक॥ तूने कौड़ी-कौड़ी कर लाख-करोड़ बटोर लिया। तूने यह व्यर्थ की बेगारी की। अंततः तू चार के कंधों पर चढ़कर हाथ पसारे चल दिया॥ 1॥ आस-पास के लोग सिर खोले तथा दुख प्रकट करते हुए आये। जाति और कुटुम्ब के लोग सब रोने लगे।

बूढ़ी माता लिपटकर रोने लगी॥ 2॥ याद रखो, तुम्हारे साथ न कोई प्रेमी मित्र जायेगा और न कोठा-महल तथा अटारी। जो लोग रोते हैं वे अपने स्वार्थवश रोते हैं। दुनिया की मित्रता झूठी है॥ 3॥ पलटू साहेब कहते हैं कि जब यमराज तुमसे तुम्हारे कर्मों का हिसाब मांगेगा तब तुम क्या विचार करोगे, और क्या उत्तर दोगे? हे संतो! सुनो, मेरी इतनी ही विनती है कि आज सावधान हो जाओ॥ 4॥

विशेष—किसी के मरने पर जो लोग रोते हैं वे अपने स्वार्थ में हानि मानकर रोते हैं। मरनेवाले की हमदर्दी में नहीं रोते। यदि निरर्थक मनुष्य मर जाय तो लोगों को कुछ झटका नहीं लगता। यदि बहुत दिनों का रोगी-असमर्थ मनुष्य मरे तो घरवाले प्रसन्न होते हैं।

शब्द-27

पानी बीच बतासा साधो, तन का यही तमासा है॥टेक॥
मुट्ठी बाँधे आया बंदा, हाथ पसारे जाता है।
ना कुछ लाया न ले जायगा, नाहक क्यों पछिताता है॥ 1॥
जोरू कौन खसम है किसका, कैसा तेरा नाता है।
पड़ा बेहोस होस कर बंदे, बिषय लहर में माता है॥ 2॥
ज्यों ज्यों बंदे तेरी पलक परत है, त्यों त्यों दिन नगिचाता है।
नेकी बदी तेरे संग चलेगी, और सब झूठी बाता है॥ 3॥
प्रान तुम्हारे पाहुन बंदे, क्यों रिस किये कुहाता है।
पलटू दास बंदगी चूके, बंदा ठोकर खाता है॥ 4॥

शब्दार्थ—रिस= क्रोध। बंदगी= विनय, सेवा। कुहाता है= रूठता है।

भावार्थ—हे संतो! जैसे पानी में पड़ा बताशा क्षण में गल जाता है, वैसे शरीर का खेल क्षण-पल में समाप्त हो जाता है॥ टेक॥ हे बंदे! तू मुट्ठी बांधकर पैदा हुआ है और यहां से एक दिन तुम्हें हाथ फैलाकर जाना है। न कुछ लेकर आया है और न लेकर जायेगा। व्यर्थ में क्यों हानि-लाभ के द्वंद्व में पड़कर पश्चाताप में डूबा है?॥ 1॥ कौन किसकी पत्नी है और कौन किसका पति है? तेरा किसी से कैसा सम्बन्ध है? तू मोह में डूबकर अचेत पड़ा है। हे बंदे! सावधान हो जा। तू विषयों की लहर में क्यों मतवाला हो गया है?॥ 2॥ हे मनवशी! तेरे जितने पलक गिरते हैं उतना तेरी मौत निकट आती जाती है। याद रख, तेरे साथ अच्छे-बुरे कर्मों के संस्कार चलेंगे, शेष

सारी चमक-दमक व्यर्थ है ॥ 3 ॥ हे बंदे ! तेरे प्राण पहुने की तरह हैं। ये आज-कल में चले जायेंगे। क्यों किसी पर क्रोध करके रूठता है? पलटू साहेब कहते हैं कि हे बंदे ! तूने विनम्रता और सेवा कार्य से अपने को अलग करके स्वयं को धोखा दिया है, इसीलिए दुख उठा रहा है ॥ 4 ॥

7. वैराग्य और विरह

शब्द-28

जनि कोइ होवै बैरागी हो, बैराग कठिन है ॥ टेक ॥
जग की आसा करै न कबहूँ, पानी पिवै ना माँगी हो।
भूख पियास छुटै जब निद्रा, जियत मरै तन त्यागी हो ॥ 1 ॥
जा के धर पर सीस न होवै, रहै प्रेम लौ लागी हो।
पलटु दास बैराग कठिन है, दाग दाग पर दागी हो ॥ 2 ॥

शब्दार्थ—धर= धड़, सिर रहित शरीर।

भावार्थ—भावुकता में कोई वैराग्य का वेष न पहन ले, क्योंकि वैराग्य का रास्ता भोग और स्वामित्व को त्यागकर होता है, इसलिए विषयी मन को यह कठिन है ॥ टेक ॥ जो विरक्त हो वह संसार के भोग और सम्मान की आशा कभी न करे और मांगकर पानी न पिये, अपितु स्वावलम्बी हो। भूख-प्यास और निद्रा में व्याकुल न हो, अपितु इन पर संयम हो। इतना ही नहीं, शरीर का अहंकार छोड़कर मर जाय—पूरा अभिमान-शून्य हो जाय ॥ 1 ॥ जिसके धड़ पर सिर न हो—पूर्ण अहंता-ममता-शून्य हो और आत्मलीन हो, वह वैराग्य का आनन्द पा सकता है। पलटू साहेब कहते हैं कि वैराग्य कठिन है। जैसे योद्धा जीवनपर्यन्त युद्ध करता है तो उसके हाथों में अस्त्र-शस्त्र चलाने से दाग पर दाग पड़ जाते हैं, वैसे वैराग्य-साधना निरंतर करते-करते वैराग्यवान के मन में वैराग्यवृत्ति का पक्का अभ्यास हो जाता है ॥ 2 ॥

शब्द-29

जेकरे अँगने नौरँगिया, सो कैसे सोवै हो।
लहर लहर बहु होय, सबद सुनि रोवै हो ॥ 1 ॥
जेकरे पिय परदेस, नींद नहिं आवै हो।
चौंकि चौंकि उठै जागि, सेज नहिं भावै हो ॥ 2 ॥

रैन दिवस मारै बान, पपीहा बोलै हो।
पिय पिय लावै सोर, सवति होइ डोलै हो॥ 3॥
बिरहिनि रहे अकेल, सो कैसे कै जीवै हो।
जेकरे अमी कै चाह, जहर कस पीवै हौ॥ 4॥
अभरन देहु बहाय, बसन धै फारौ हो।
पिय बिनु कौन सिंगार, सीस दै मारौ हो॥ 5॥
भूख न लागै नींद, बिरह हिये करकै हो।
माँग सेंदुर मसि पोछ, नैन जल ढरकै हो॥ 6॥
केककहैं करै सिंगार, सो काहि दिखावै हो।
जेकर पिय परदेस, सो काहि रिझावै हो॥ 7॥
रहै चरन चित लाइ, सोई धन आगर हो।
पलटु दास कै सबद, बिरह कै सागर हो॥ 8॥

शब्दार्थ—नौरँगिया= नारंगी का पेड़। अमी= अमृत। अभरन= आभूषण। बसन= वस्त्र। मसि= काजल। केकहैं= किस पर। धन= धनि, युवती, मनोवृत्ति। आगर= कुशल, चतुर।

भावार्थ—जिसके आंगन में नारंगी का पेड़ हो, वह निश्चिंत होकर कैसे सो सकता है? हवा से नारंगी का पेड़ अत्यन्त लहराता है। उसके शब्द सुनकर पति-विहीना युवती रोती है॥ 1 ॥ जिसका पति परदेश है, उसको नींद नहीं आती। वह थोड़ी नींद लगते ही चौंक-चौंक कर जग जाती है। उसको शय्या अच्छी नहीं लगती॥ 2॥ नारंगी के पेड़ पर बैठा पपीहा रात-दिन पीव-पीव बोलकर मानो पति-विहीना युवती को विरह-बाण मारता है। वह पीव-पीव शब्द का शोर करके मानो सौत की तरह दुख देता है॥ 3॥ पति-विहीना विरहिन युवती अकेली है। वह पति के बिना कैसे चैन से रह सकती है? इसी प्रकार जिस साधक के मन में स्वरूपस्थिति रूपी अमृत पीने की इच्छा है, वह विषय-भोग रूपी विष कैसे पी सकता है?॥ 4॥

हे पति-विहीना बिरहिन युवती ! आभूषणों को अंगों से निकालकर फेंक दे और देह के वस्त्रों को फाड़ दे। पति के बिना शृंगार कैसा? सिर को पटक कर मर जा॥ 5॥ विरहिन को न भूख लगती है और न प्यास लगती है। उसको तो पति-वियोग का बाण हृदय में कसकता है। वह मांग से सेंदुर और नेत्र से काजल पोंछ देती है और उसकी आंखों से आंसू के प्रवाह चलते हैं॥ 6॥ वह किस पर शृंगार करे और उसे किसको दिखावे? जिसका पति परदेश में है, वह किसको मोहित करे?॥ 7॥ पलटू साहेब कहते हैं कि जिस

साधक की मनोवृत्ति सद्गुरु के चरणों में लीन है, वही चतुर है। मेरे उपदेश विरह-सागर हैं॥ 8॥

विशेष—मनोवृत्ति आत्मविमुख होकर दुख में भटकती है। जब वह आत्म-पति से अभिन्न हो जाती है, तब सुखी हो जाती है।

शब्द-30

जाके लगी सोई तन जानै, दूजो कवन हाल पहिचानै॥टेक॥
है कोइ भेदी भेद बतावै, कैसे बिरहिनि दिवस गँवावै॥ 1॥
मारग दूर पथिक सब हारे, उतरन को भवसागर पारे॥ 2॥
उकठा पेड़ सीचै जो माली, घायल फिरौं भई मतवाली॥ 3॥
एक तो लागी प्रेम की गाँसी, दूजे सहौं जक्त उपहासी॥ 4॥
लागी लगन टरै नहिं टारे, क्या करै औषद बैद बेचारे॥ 5॥
पलटू दास लगी तन मेरे, घायल फिरैं और बहुतेरे॥ 6॥

शब्दार्थ—उकठा पेड़= सूखा पेड़। गांसी= तीर।

भावार्थ—जिसके मन में आत्मलीनता की लगन लगी है, वही इसे समझ सकता है। दूसरा कौन इस दशा को समझ सकता है?॥ टेक॥ जो आत्मलीनता में निरंतर रहता है, वही इस रहस्य को समझ-समझा सकता है कि कैसे आत्मरति की विरहिनी मनोवृत्ति दिन व्यतीत करती है॥ 1॥ भवसागर से पार उतरने के लिए रास्ता लम्बा है—जितना अबोध और विषय-तृष्णा है उतना मार्ग लम्बा है। इसीलिए अध्यात्म पथ के अधिक पथिक जगत-तृष्णा की चपेट में पड़कर बीच में ही हारकर बैठ जाते हैं॥ 2॥ यदि माली सूखे पेड़ को सींचकर हरा कर दे तो कोई मुझ आत्म-विरही को इस विरह से अलग कर सकता है। साधक की मनोवृत्ति कहती है कि मैं सद्गुरु के आत्मज्ञान-बाण से घायल होकर मतवाली बनी विचर रही हूं॥ 3॥ एक तरफ मुझे आत्मप्रेम का बाण लगा है, दूसरी तरफ संसार के लोगों का उपहास सहना होता है॥ 4॥ आत्मा में निंरतर लीन रहने की मेरी लगन लगी है। इस लगन को कोई हटा नहीं सकता। संसारी वैद्य बेचारे मेरी क्या औषध कर सकते हैं?॥ 5॥ पलटू साहेब कहते हैं कि मेरे जीवन में आत्मलीनता की लगन लगी है। अन्य बहुतेरे आत्मानुरागी भी सद्गुरु के उपदेश-बाण से घायल होकर विचरते हैं॥ 6॥

शब्द-31

मेरे लगी सबद की गाँसी है, तबसे मैं फिरौं उदासी है॥टेक॥
नैनन नीर ढुरन मोरे लागे, परी प्रेम की फाँसी है॥ 1॥
भूषन बसन नहीं मोहिं भावै, छोड़ा भोग बिलासी है॥ 2॥
मन भया छीन दीन हुई सब से, अबला नाम पियासी है॥ 3॥
चारिउ खूँट कानन गिरि खोजा, खोजा मथुरा कासी है॥ 4॥
जासे पूछौं कोउ न बतावै, और करै उपहासी है॥ 5॥
पलटु दास हम खोजि निकारा, ह्वै बैरागिनि खासी है॥ 6॥

शब्दार्थ—गांसी= बाण। खूंट= कोना, दिशाएं। कानन= वन। गिरि= पर्वत।

भावार्थ—साधक की मनोवृत्ति कहती है कि मुझे सद्गुरु के द्वारा आत्मबोधपरक उपदेश के बाण लगे, तब से मैं सांसारिकता से उदास होकर विचरने लगी॥ टेक॥ मेरे गले में आत्मरति की प्रेम-फांसी लगी है। मेरे नेत्रों से नीर झरते हैं॥ 1॥ अब मुझे आभूषण और वस्त्र अच्छे नहीं लगते। मैंने भोग-विलास का त्याग कर दिया है॥ 2॥ मेरे मन की तृष्णा मिट गयी है और मैं सबसे नम्र हो गयी हूं। (मनोवृत्ति कहती है कि) मेरा अबला नाम है। मैं आत्मलीनता की भूखी-प्यासी हूं॥ 3॥ मैंने चारों दिशाओं, कोने-कोने तथा वन-पर्वतों में खोजा और मथुरा-काशी आदि सभी तीर्थों में खोजा॥ 4॥ मैं जिससे पूछती हूं कि परमात्मा कहां है, वही मेरा मजाक उड़ाता है॥ 5॥ पलटू साहेब कहते हैं कि मैंने अंतर्मुख होकर खोज निकाला कि आत्मा ही परमात्मा है। उसी में लीन होने के लिए मैंने लोगों से शुद्ध विरक्ति ले ली है॥ 6॥

शब्द-32

पिया पिया बोलै पपीहा है, सबद सुनत फाटै हीया है॥टेक॥
सोवत से मैं चौंकि परी हौं, धकर धकर करै जीया है॥ 1॥
पिय की सोच परी अब मोको, पिय बिनु जीवन छीया है॥ 2॥
बैरी होइ के आय पपीहा, बिरह जँजाल मोहिं दीया है॥ 3॥
हित मेरा यह बड़ा पपीहा, उपदेस आइ मोहिं कीया है॥ 4॥
पलटु दास पपिहा की दौलत, बैराग जाइ हम लीया है॥ 5॥

शब्दार्थ—हीया= हृदय। छीया= क्षीण, नष्ट, व्यर्थ। दौलत= बदौलत, कृपा से।

भावार्थ—आत्म-अनुराग में डूबी मनोवृत्ति कहती है कि पपीहा-पक्षी पीव-पीव बोलता है, तो उसके ये शब्द सुनकर मुझे अपने प्रियतम आत्मा की याद आती है और उनमें तदगत हुए बिना मेरा हृदय फटता है॥ टेक॥ पपीहा का पीव-पीव शब्द सुनकर सोते से मैं जग गयी और अपने प्रियतम आत्मा की याद कर मेरा दिल धड़कने लगा॥ 1॥ अब मुझे प्रियतम आत्मा से मिलने की चिंता हो गयी है। अपने प्रियतम के बिना मेरा जीवन नष्ट हो रहा है॥ 2॥ पपीहा मानो मेरा वैरी होकर उसने मुझे आत्मा के लिए विरह-व्यथा का जंजाल दे दिया है॥ 3॥ परंतु ऐसी बात नहीं है। पपीहा मेरा बड़ा हितकारी है। उसने मुझे मानो उपदेश दिया कि तू संसार के कूड़े-कचड़े में भटक रही है और दुख भोग रही है। तू सावधान होकर अपने प्रियतम आत्मा में रमण कर॥ 4॥ पलटू साहेब कहते हैं कि पपीहा की कृपा से मैं जगत-भोगों से वैराग्य लेकर आत्मोन्मुख हो गया हूं॥ 5॥

शब्द-33

साहिब के घर बिच जावोंगी। जावोंगी सुख पावोंगी॥टेक॥
प्रेम भभूत लगाय कै सजनी। संतन कँहै रिझावोंगी॥ 1॥
अचरा फारि करौं मैं कफनी। सेल्ही सुरति बनावोंगी॥ 2॥
धूनी ध्यान अकास में दैहौं। नाम को अमल चढ़ावोंगी॥ 3॥
पलटू दास मारि कै गोता। भक्ति अभय लै आवोंगी॥ 4॥

शब्दार्थ—साहिब= स्वामी, आत्मा। अचरा= आंचल। सेल्ही= सूत-ऊन आदि की माला। अमल= नशा।

भावार्थ—मनोवृत्ति कहती है कि मैं अपने प्रियतम आत्मा की स्थिति में जाऊंगी और उसमें स्थित होकर अक्षय सुख पाऊंगी॥ टेक॥ हे सखी ! शरीर में प्रेम की खाक लगाकर संतों को प्रसन्न कर लूंगी॥ 1॥ मैं आंचल फाड़कर कफन बनाऊंगी और सुरति की माला बनाऊंगी॥ 2॥ हृदयाकाश में ध्यान की धुनी लगाऊंगी और सतनाम के अर्थस्वरूप आत्मस्मरण का नशा चढ़ाऊंगी॥ 3॥ पलटू साहेब कहते हैं कि मनोवृत्ति सत्संग में गोता लगाकर स्वस्वरूपानुसंधान रूपी निर्भय भक्ति प्राप्त करेगी॥ 4॥

शब्द-34

अब तो मैं बैराग भरी। सोवत से मैं जाग परी॥ 1॥
नैन बने गिर के झरना ज्यों। मुख से निकरै हरी हरी॥ 2॥
अभरन तोरि बसन धै फारौं। पापी जिउ नहिं जात मरी॥ 3॥
लेउँ उसास सीस दै मारौं। अगिनि बिना मैं जाउँ जरी॥ 4॥
नागिनि बिरह डसत है मोको। जात न मोसे धीर धरी॥ 5॥
सतगुरु आइ किहिन बैदाई। सिर पर जादू तुरत करी॥ 6॥
पलटू दास दिहा उन मोको। नाम सजीवन मूल जड़ी॥ 7॥

भावार्थ—मनोवृत्ति कहती है कि अब तो मैं वैराग्य-भाव से भर गयी हूं और मोह-नींद से जग गयी हूं॥ 1॥ मेरे नेत्र आत्म-विरह में पर्वत के झरने बन गये और मुख से हरिनाम निकल रहा है॥ 2॥ मैंने आभूषणों को तोड़ दिया और वस्त्रों को फाड़ दिया। यह पापी जान निकल नहीं रही है॥ 3॥ मैं आत्मविरह में लम्बी सांस लेती हूं और सिर पटकती हूं। मैं बिना अग्नि के जली जा रही हूं॥ 4॥ आत्म-वियोगजनित विरह-नागिन मुझे डंस रही है। आत्मा से मिले बिना मुझे धैर्य नहीं हो रहा है॥ 5॥ सद्गुरु ने आकर मेरी चिकित्सा की, फिर तो मेरे सिर पर तुरंत जादू जैसा प्रभाव पड़ गया॥ 6॥ पलटू साहेब कहते हैं कि सद्गुरु ने मुझे सतनाम की जड़ी-बूटी दे दी जिसका अर्थ है सत्स्वरूप आत्मा का बोध॥ 7॥

शब्द-35

साहिब से लागी री सजनी। मेरो ब्याह भयो बिन मँगनी॥ 1॥
लागि गई तब लाज कहाँ की। कल न परै दिन रजनी॥ 2॥
ना नैहर ना सासुर की मैं। सहज लगी कछु लगनी॥ 3॥
जब हम रहे पिया तब नाहीं। बूझौ बात बैरगनी॥ 4॥
ज्ञान में सोवौं मोह में जागौं। नहिं सोवौं नहिं जगनी॥ 5॥
भूखल नाहिं न रहौं खाये बिनु। नहिं संग्रह नहिं त्यगनी॥ 6॥
पलटू दास चलौं नहिं बैठौं। नहीं भजन नहिं भजनी॥ 7॥

शब्दार्थ—लागि= प्रेम। मँगनी= सगाई, ब्याह पक्का करने की रस्म। पिया= आत्मा। भजनी= भजन करनेवाला।

भावार्थ—मनोवृत्ति कहती है कि हे सखी! मेरा प्रेम एवं अनुराग आत्मा-स्वामी से लग गया है। उनसे मेरा बिना मंगनी के विवाह हो गया

है॥ 1॥ जब लगाव हो गया तब लज्जा कैसी? अब मुझे आत्मा से बिछुड़कर रात-दिन कभी शांति नहीं मिलती॥ 2॥ मेरा न नैहर है और न सासुर। मेरा सम्बन्ध प्रियतम आत्मा से कुछ ऐसा है जो सहज है॥ 3॥ जब मेरा अहंकार था तब प्रियतम आत्मा का अनुभव नहीं था। यह वैराग्य की बात है। इसे समझो॥ 4॥ मैं आत्मज्ञान में विश्राम कर सोती हूं और मोह के सम्बन्ध में जागती रहती हूं। कहीं मोह नहीं करती हूं। अंततः न मैं सोती हूं और न जागती हूं। अपितु एकरस स्वरूपस्थ हूं॥ 5॥ मैं भूखी नहीं रहती हूं और खाती भी नहीं हूं। आत्मा में ये दोनों बातें नहीं हैं। न मैं संग्रह करती हूं और न त्याग करने का अनुभव करती हूं॥ 6॥ पलटू साहेब कहते हैं कि मैं न चलता हूं और न बैठता हूं और न भजन करता हूं तथा न मैं भजन करने वाला हूं॥ 7॥

विशेष—देह के नाम-रूप की अहंता-ममता मिटाकर जब साधक आत्मलीनता की प्रगाढ़ता में रहता है, तब वह भौतिक धरातल से उठ जाता है। उसकी स्थिति मन-वाणी से परे होती है।

शब्द-36

प्रेम बान जोगी मारल हो, कसकै हिया मोर॥टेक॥
जोगिया कै लालि लालि अँखियाँ हो, जस कँवल कै फूल।
हमरी सुरुख चुनरिया हो, दूनों भये तूल॥ 1॥
जोगिया कै लेउँ मिर्गछलवा हो, आपन पट चीर।
दूनौं कै सियब गुदरिया हो, होइ जाब फकीर॥ 2॥
गगना में सिंगिया बजाइन्हि हो, ताकिन्हि मोरी ओर।
चितवन में मन हरि लियो हो, जोगिया बड़ चोर॥ 3॥
गंग जमुन के बिचवाँ हो, बहै झिरहिर नीर।
तेहिं ठैयाँ जोरल सनेहिया हो, हरि लै गयो पीर॥ 4॥
जोगिया अमर मरै नहिं हो, पुजवल मोरी आस।
करम लिखा बर पावल हो, गावै पलटू दास॥ 5॥

शब्दार्थ—हिया= हृदय। तूल= तुल्य, समान। सिंगिया= सींगी, हिरन के सींग का बना हुआ बाजा जिसे योगी बजाते हैं।

भावार्थ—योगी ने मुझे प्रेम का बाण मारा है। अतएव मेरे हृदय में रह-रहकर पीड़ा होती है। टेक॥ योगी की कमल फूल के समान लाल-लाल

आंखें हैं और मेरी भक्ति-भावना की लाल चुनरी, अतएव दोनों समान हो गये हैं॥ 1॥ मैं योगी का मृगछाला लूंगा और अपने शरीर का वस्त्र, दोनों को मिलाकर गुदरी बनाऊंगा और फकीर हो जाऊंगा॥ 2॥ योगी ने अपनी सींगी आकाश में बजायी और मेरी ओर देखा। उसने मेरी ओर ऐसा नेत्र कटाक्ष किया कि मेरा मन चुरा लिया। इसलिए लगता है कि योगी बड़ा चोर है॥ 3॥ इड़ा-पिंगला के बीच सुषुम्ना में श्वास का निर्झर नीर बहता है। उसमें चित्त एकाग्र करने का प्रेम लगाया और एकाग्रता आने पर मन की पीड़ा मिट गयी॥ 4॥ योगी अमर आत्मा में लीन होने से वस्तुतः अमर होता है। उसने मुझे अमर आत्मा का बोध देकर मेरी दुख-निवृत्ति की आशा पूरी कर दी। पलटू साहेब कहते हैं कि मनोवृति कहती है कि मेरे अच्छे कर्म में लिखा अविनाशी आत्मा रूपी वर का बोध मिल गया है॥ 5॥

शब्द-37

पिय से मान न कीजै रजनी, सजनी हठ तजि दीजै॥ 1॥
जो तू पिय को चाहै प्यारी, सतसंगति भजि लीजै॥ 2॥
पलटु दास तन मन धन दै कै, प्रेम पियाला पीजै॥ 3॥

शब्दार्थ—रजनी= रात । सजनी= सखी।

भावार्थ—अज्ञान रात में पड़ी हुई हे मनोवृत्ति सखी ! आत्मा के सामने अहंकार न कर, हठ छोड़कर उसमें लीन हो जा॥ 1॥ हे प्यारी मनोवृत्ति ! यदि तू आत्म-पति को चाहती है, तो विवेकवान संतों की संगति में समर्पित हो जा॥ 2॥ पलटू साहेब कहते हैं कि अपने तन, मन और धन को सद्गुरु-संतों के चरणों में समर्पित करके भक्ति-प्रेम का प्याला पियो॥ 3॥

शब्द-38

घूँघट को पट खौलौंगी। जोगिन ह्वै के डोलौंगी॥ 1॥
लोक लाज कुल कानि छोड़ि कै। हँसि हँसि बातैं बोलौंगी॥ 2॥
का रिसियाइ करै कोइ मेरा। जग से नाता तोरौंगी॥ 3॥
ज्ञान की ढोल बजाय रैन दिन। गगन रखाना फोरौंगी॥ 4॥
पलटू दास भई मतवारी। प्रेम पियाला घोरौंगी॥ 5॥

शब्दार्थ—रिसियाय= नाखुश होकर। रखाना= रख़ना, छोटी खिड़की।

भावार्थ—साधनापरायण मनोवृत्ति कहती है कि मैं अविद्या का परदा हटाकर योगिनी होकर विचरण करूंगी॥ 1॥ लोक-लाज और कुल की मर्यादा छोड़कर सबसे हंस-हंस कर प्रसन्न मन से बातें करूंगी॥ 2॥ संसार के लोग नाखुश होकर मेरा क्या बिगाड़ लेंगे? मैं संसार से अपना सम्बन्ध तोड़ दूंगी॥ 3॥ मैं रात-दिन आत्मज्ञान का ढोल बजाकर संकल्प-शून्य की खिड़की खोलूंगी॥ 4॥ पलटू साहेब कहते हैं कि साधनापरायण मनोवृत्ति आत्मलीनता में मतवाली हो गयी और कहती है कि मैं आत्म-प्रेम का प्याला पीऊंगी॥ 5॥

शब्द-39

सतगुरु से लागी नेही है, बात बहुत यह मेहीं है॥टेक॥
परदा काह खसम से कीजै, जिन देखा सब देंही है॥ 1॥
भूलि परी मैं जग के बीचे, बाँह पकरि लिहा तेही है॥ 2॥
दीनदयाल पतित के पावन, जन सरनागति लेही है॥ 3॥
पलटू दास धन्य इक सतगुरु, और बात सब येही है॥ 4॥

शब्दार्थ—मेहीं= बारीक, सूक्ष्म। खसम= पति।

भावार्थ—मेरा प्रेम सद्गुरु से लग गया है। यह बात बड़ी सूक्ष्म है॥ टेक॥ पति से क्या परदा करना जिसने सारी देह देखी है। इसी प्रकार सद्गुरु से छिपाव-दुराव कैसा जो मानस-मर्मज्ञ है॥ 1॥ मैं जगत की मोह-माया में भूलकर भटक रहा था। सद्गुरु ने मेरी बांह पकड़कर अपनी ओर खींच लिया॥ 2॥ सद्गुरु दीनों पर दया करने वाले, पतितों को पवित्र करने वाले और कल्याणार्थी जनों को अपनी शरण में लेकर उन्हें निभाने वाले हैं॥ 3॥ पलटू साहेब कहते हैं कि एक सद्गुरु धन्य हैं जिनकी शरण से कल्याण होता है। शेष बातें तो यों ही हैं॥ 4॥

शब्द-40

जल औ मीन समान, गुरु से प्रीति जो कीजै॥टेक॥
जल से बिछुरै तनिक एक जो, छोड़ि देत है प्रान॥ 1॥
मीन कँह लै छीर में राखै, जल बिनु है हैरान॥ 2॥
जो कछु है सो मीन के जल है, जल के हाथ बिकान॥ 3॥
पलटू दास प्रीति करै ऐसी, प्रीति सोई परमान॥ 4॥

शब्दार्थ—छीर= क्षीर, दूध।

भावार्थ—सद्गुरु से वैसा ही प्रेम करो जैसे मछली जल से करती है॥ टेक॥ मछली यदि जल से बिछुड़ जाय तो वह प्राण त्याग देती है॥ 1॥ यदि मछली को दूध में डालकर रखा जाय, तो वह उसे पसंद नहीं करेगी। वह तो जल के बिना दुखी होती है॥ 2॥ मछली का सर्वस्व जल है। वह जल के हाथों बिकी है॥ 3॥ पलटू साहेब कहते हैं कि जो साधक इसी प्रकार सद्गुरु से प्रेम करता है उसी का प्रेम प्रामाणिक होता है॥ 4॥

शब्द-41

जानी जानी पिया हो, तुमको पहिचानी॥टेक॥
जब हम रहली बारी भोली, तुम्हरो मरम न जानी।
अब तो भागि जाहु पिया हम से, तब हम मरद बखानी॥ 1॥
बहुत दिनन पर भेंट भई है, फाग खेलन हम ठानी।
धन सम्पत लै खाक मिली तन, तजि कै मान गुमानी॥ 2॥
इँगला पिंगला सुखमन खेलै, अजपा सखी सयानी।
तुरिया नाँघि चली घर अपने, झझकि झझकि झझकानी॥ 3॥
प्रेम के रंग अबीर भरि थारी, जोति में जोति समानी।
पलटू जीते हारि चले पिय, ना कछु लाभ न हानी॥ 4॥

शब्दार्थ—बारी= बालक। मरद= वीर। झझकि= झिझक, हिचक, लज्जा-जनक, संकोच।

भावार्थ—साधनापरायण मनोवृत्ति कहती है कि हे प्रियतम आत्मा ! मैंने तुमको जान लिया, समझ लिया और पहचान लिया है॥ टेक॥ जब मैं कच्ची बुद्धि की मूर्खा थी तब तुम्हारा निर्मल स्वरूप नहीं समझ सकी थी। परन्तु अब मैं तुम्हें ठीक से समझ गयी हूं कि तुम्हीं मेरे सर्वस्व हो। अब तुम मुझसे दूर हो जाओ तो मैं तुम्हें वीर समझूं—अब मन आत्मलीनता नहीं छोड़ सकता॥ 1॥ अनादिकाल की भूल मिटी और अब आत्म-पति का बोध हुआ। अब मैंने निश्चय कर लिया है कि तुमसे ही निरंतर प्रेम का फाग खेलूंगी। अब सारा मान-गुमान छोड़कर धन-संपत्ति तथा शरीर को धूल समझती हूं॥ 2॥ इड़ा, पिंगला, सुषुम्ना, अजपा जप तथा तुरीया आदि सखियों को लांघकर और साधना-पथ में जो झिझक आती थी उससे पार होकर आत्म-प्रेम का अबीर थाली में भरकर आत्मदेव से ही फाग खेलती हूं

और मनोवृत्ति ज्योति आत्म-ज्योति में लीन हो गयी है। पलटू साहेब कहते हैं कि अब मनोवृत्ति-पत्नी जीत गयी और आत्मदेव-पति हार गये; क्योंकि फाग खेल में नारी ही जीतती है और पुरुष हारता है—चित्तवृत्ति आत्मलीन हो गयी। अब जीवन में न लाभ रह गया और न हानि॥ 3-4॥

विशेष—काव्य के अलंकारों को हटाकर सार अर्थ यह है कि अबोध दशा में मन बाहरी चमक-दमक में भटकता है। जब निज स्वरूप का ठीक से बोध होकर स्वरूपलीनता हो जाती है तब दुनिया के हानि-लाभ समाप्त हो जाते हैं और पूर्ण विश्राम मिल जाता है—"हानि लाभ दोउ देह के झूठे, निज को जानि अमरते *(भवयान)*।

शब्द-42

जो पिय के मन मानी रे, सोइ नारि सयानी॥टेक॥
पीतम हमरे पाती पठाई, देखि देखि मुसुकानी।
बाँचत पाती जुड़ानी छाती, आपु में उलटि समानी॥ 1॥
भूषन भोजन नींद न भावै, देखत रूप अघानी।
लोग कहैं सखि लाज करो तुम, हम चेतन ह्वै बौरानी॥ 2॥
रंग महल में जाइ के बैठी, रितु बसंत जहँ आनी।
सुखमन गावै भाव बतावै, देखि नाच हरखानी॥ 3॥
पलटू दास असमान फोरि कै, सबद की करै बखानी।
पुतरी लोन की सिंधु समानी, उलटि कहै को बानी॥ 4॥

शब्दार्थ—पिय= प्रीतम आत्मा। सुखमन= सुषुम्ना।

भावार्थ—वही मनोवृत्ति शुद्ध है जो प्रियतम चेतन आत्मा में लीन है॥ टेक॥ मनोवृत्ति कहती है कि मेरे प्रियतम पति आत्मा ने मुझे पत्र भेजा। मैं उसको पढ़कर प्रसन्नता में मुस्कराने लगी। उनका पत्र बांचते ही हृदय शीतल हो गया और मैं उलटकर आत्मा में लीन हो गयी अर्थात जब चित्त शुद्ध होते-होते स्वस्वरूप का अनुभव होने लगा तब शांति मिलने लगी और मेरी स्वयं में उलटकर लीनता हो गयी॥ 1॥ अब मुझे शृंगार, भोजन और नींद अच्छे नहीं लगते। मैं अपने आत्मस्वरूप का साक्षात्कार करके तृप्त हो गयी। लोग कहते हैं कि हे सखी! लोकलाज और कुलमर्यादा का पालन करो, परंतु मैं तो आत्मस्वरूप में जाग्रत होकर मस्त हो गयी हूं। अब किसकी लाज और मर्यादा!॥ 2॥ मैं स्वरूपस्थिति रूपी रंगमहल में जाकर बैठ गयी जहां परम शांति की बसंत ऋतु छायी है। इड़ा-पिंगला के बीच सुषुम्ना मानो

गाती, नाचती और भाव बताती है। उसका नाच देखकर मैं हर्षित हूं॥ 3॥ पलटू साहेब कहते हैं कि आकाश फोड़कर भौतिक धरातल से उठकर यहां आत्मज्ञान के शब्दों का यथार्थ अर्थ अनुभव में आता है। यदि नमक की डली समुद्र में गल गयी तो वह अपना संदेश देने कैसे आये? इसी प्रकार जिसका मन आत्मलीन हो गया, वह उसका अनुभव कैसे बताये। दूसरा भी जब उस बोध तथा साधना से चलेगा तब उसको अनुभव होगा॥ 4॥

विशेष—साधक इड़ा (बाईं नाक की सांस), पिंगला (दायीं नाक की सांस) तथा सुषुम्ना (दोनों नाकों की समान सांस) का प्राणायाम में अभ्यास करता है। उसके साथ अपने लक्ष्य का भी स्मरण करता है। वैसे स्वरूपस्थिति में प्राणायाम का बड़ा महत्त्व नहीं है।

शब्द-43

समुझि बूझि रन चढ़ना साधो, खूब लड़ाई लड़ना है॥टेक॥
दम दम कदम पड़ै आगे को, पीछे नाहिं पछड़ना है।
तिल तिल घाव लगे जो तन में, खेत सेती क्या टरना है॥ 1॥
सबद खैंचि समसेर जेर कर, उन पाँचों को धरना है।
काम क्रोध मद लोभ कैद कर, मन कर ठौरै मरना है॥ 2॥
खड़ा रहै मैदान के ऊपर, उनकी चोट सँभरना है।
आठ पहर असवार सुरत पर, गाफिल नाहीं पड़ना है॥ 3॥
सीस दिहा साहिब के ऊपर, किसकी डेर अब डेरना है।
पलटू बाना रुण्ड के ऊपर, अब क्या दूसर करना है॥ 4॥

शब्दार्थ—रन= रण, युद्ध। खेत= युद्धक्षेत्र। समसेर= शमशीर, तलवार। जेर= ज़ेर, नीचे, दमन। पांचों= पांचों ज्ञानेन्द्रियां—आंख, कान, नाक, जीभ तथा चाम। साहिब= स्वामी, सद्गुरु। डेर= डर। रुण्ड= धड़।

भावार्थ—हे साधो! समझ-बूझ कर मोह-राजा के विरोध में युद्ध में चढ़ाई करना और घनघोर युद्ध करना है॥ टेक॥ हर सांस युद्ध में आगे पैर रखना है। पीछे कभी पछड़ना नहीं है। शरीर के सारे अंग तिल-तिल घाव से भर जायं, तो भी युद्ध क्षेत्र से क्या हटना?॥ 1॥ आत्मज्ञानपरक शब्दों की तलवार खींचकर और पांचों ज्ञानेन्द्रियों का दमन कर उन्हें स्ववश करना है और काम, क्रोध, मद, लोभ आदि का शमन कर मन को मार देना है॥ 2॥ सावधान! मन के युद्धक्षेत्र में डटे रहना और मानसिक विकारों की

चोट को सहकर निर्विकार रहना है। चौबीसों घंटे मनोवृत्ति पर तटस्थ होकर चढ़े रहो। कभी असावधान नहीं होना है॥ 3॥ सद्गुरु के उपदेशों के ऊपर अपना सिर दे दिया। अब किसका भय करना? पलटू साहेब कहते हैं कि साधक अपना अहंकार रूपी सिर तो काट दिया, अब केवल धड़ पर कफन बांधकर मोह-राजा से लड़ना है। साधक को इसके अतिरिक्त अब काम ही क्या रहा?॥ 4॥

शब्द-44

सो रजपूत जाको काया कोट॥ टेक॥
काम क्रोध मन में मउवास। इन दुष्टन को देइ निकास॥ 1॥
पाँच सिपाह जगीरीदार। नित उठि मन से करते रार॥ 2॥
इन पाँचों को डारो मार। गढ़ भीतर तुमहीं सरदार॥ 3॥
लोभ मोह यह करिहैं चोट। जौं लगि पैहैं तिल भर ओट॥ 4॥
पलटू दास सोई रजपूत। मन को मारि कै होइ सपूत॥ 5॥

शब्दार्थ—रजपूत= क्षत्रिय, वीर। कोट= किला। मउवास= चोर। जगीरीदार= पुराने कब्जेदार। सपूत= कुल की सुकीर्ति करने वाला अच्छा पुत्र, लायक।

भावार्थ—क्षत्रिय वह है जो काया-कोट पर अपना पूरा नियंत्रण रखता है॥ टेक॥ काम-क्रोधादि मन में रहने वाले चोर हैं। इन दुष्टों को मन से निकाल दे॥ 1॥ आंख, नाक, कान, जीभ और चाम, ये पांच सिपाही पुराने कब्जेदार हैं। ये नित जगने पर मन को बहकाते हैं और द्वंद्व करते हैं॥ 2॥ इन पांचों को जब पूरा अपने वश में कर लेंगे तो इस शरीर-गढ़ के तुम अद्वितीय स्वामी बन जाओगे॥ 3॥ सावधान! काम, क्रोध, लोभादि मनोविकार तुम्हारी थोड़ी भी असावधानी पाकर तुम्हारे ऊपर आक्रमण कर देंगे॥ 4॥ पलटू साहेब कहते हैं कि वही वीर क्षत्रिय है जो मन को मारकर अपना उद्धारक हो गया है॥ 5॥

9. सत्योपदेश तथा सद्गुरु की महत्ता

शब्द-45

बनत बनत बनि जाइ, पड़ा रहै संत के द्वारे॥टेक॥
तन मन धन सब अरपन कै कै, धका धनी को खाय॥ 1॥

मुरदा होय टरै नहिं टारे, लाख कहै समुझाय॥ 2॥
स्वान बिरति पावै सोइ खावै, रहै चरन लौ लाय॥ 3॥
पलटू दास काम बनि जावै, इतने पर ठहराय॥ 4॥

शब्दार्थ—धनी= आत्मधनी गुरु-संत। स्वान बिरति= श्वानवृत्ति= सहज प्राप्त।

भावार्थ—यदि साधक विवेकवान संतों के द्वार पर पड़ा रहे, उनकी सेवा तथा सत्संग में लगा रहे तो धीरे-धीरे अपना स्वभाव सुधारते-सुधारते पूर्ण सुधार होकर उसे अविचल शांति मिल जायगी॥ टेक॥ साधक अपने तन, मन, धन तथा सर्वस्व सदगुरु-संतों के चरणों में अर्पित कर दे और उनके शासन को सहर्ष स्वीकार करके सहनशीलतापूर्वक साधना करे॥ 1॥ मुरदा होकर उनकी शरण में पड़ जाय। उनके हटाने पर भी न हटे! मुरदा कहीं हटता है? लाख समझाने पर भी नहीं हटता है। जैसे कुत्ते सहज प्राप्त टुकड़े पर संतोषपूर्वक निर्वाह करते हैं, वैसे यथाप्राप्त वस्तुओं से निर्वाह करते हुए सद्गुरु-संतों की चरण-भक्ति में उत्साहपूर्वक लगा रहे॥ 3॥ पलटू साहेब कहते हैं कि जो साधक इतनी बातों पर ठहर जाय, उसका कल्याण हो जायगा॥ 4॥

शब्द-46

हाट लगी है दाया की कोइ करैगा सौदा॥ टेक॥
लादै को जस लादेन्हि अपजस, परि गइ फाँसी माया की॥ 1॥
नफा को आएन्हि मूर गँवाएन्हि, माल जगातिन खाया की॥ 2॥
बगल में लरिका सहर ढँढोरा, नाहिं लेइ सुधि काया की॥ 3॥
पलटू दास सब जगत भुलाना, लखि परछाहीं छाया की॥ 4॥

शब्दार्थ—जस= यश, सुकीर्ति। अपजस= अपयश, कुकीर्ति। जगातिन = जगात, जकात, आयात कर। जगातिन= कर वसूलने वाला।

भावार्थ—यह संसार बाजार दया का है। सब जीव दुखी हैं। उन पर दया करो। किसी को दुख न दो। क्या कोई यह सौदा करेगा? क्या दूसरों को दुख देने से बचेगा?॥ टेक॥ इस संसार में थोड़े दिन के लिए आये हैं। यहां सुयश का सौदा खरीदकर अपनी जीवन-गाड़ी में लादना चाहिए, किन्तु लोग अपयश का सौदा लादते हैं। इनके गले में माया की फांसी पड़ गयी

है॥ 1॥ मानव जीवन में कल्याण करने का लाभ कमाना था, किन्तु लोगों ने अपना मूलधन विवेक ही खो दिया। इनका सब माल कर वसूलने वालों ने ही खा लिया—मन-इन्द्रियों के गलत आचरण ने ही इनको नष्ट कर दिया॥ 2॥ बगल में बालक है, किन्तु उसके खो जाने की मुनादी पूरे शहर में की जा रही है—परमात्मा स्वयं आत्मा है, परन्तु उसे बाहर खोजा जा रहा है। लोग अपने शरीर पर ध्यान नहीं देते कि इसके आचरण ठीक कर अपने आप को पहचाने॥ 3॥ पलटू साहेब कहते हैं कि सारा संसार स्वस्वरूप को भूलकर बाहर भटका हुआ है। लोग अपनी कल्पनाओं की परछाईं पकड़ना चाहते हैं॥ 4॥

शब्द-47

मितऊ देहला न जगाय, निंदिया बैरिन भैली॥टेक॥
की तो जागै रोगी भोगी, की चाकर की चोर।
की तो जागै संत बिरहिया, भजन गुरु कै होय॥ 1॥
स्वारथ लाय सभै मिलि जागैं, बिन स्वारथ न कोय।
परस्वारथ को वह नर जागै, जापै किरपा गुरु की होय॥ 2॥
जागे से परलोक बनतु है, सोये बड़ दुख होय।
ज्ञान खरग लिये पलट जागै, होनी होय सो होय॥ 3॥

शब्दार्थ—मितऊ= मित्र। खरग= खड्ग, तलवार।

भावार्थ—हे मित्र! मुझे जगा देना न! यह माया-मोह की नींद मेरी शत्रुणी है॥ टेक॥ रोगी जागते हैं, भोगी जागते हैं, नौकर जागते हैं अथवा चोर जागते हैं। इनसे हटकर आत्मानुरागी संत जागते हैं और सद्गुरु के उपदेशानुसार आत्मशोधन-आत्मस्थिति करते हैं॥ 1॥ अपने देह-स्वार्थ में सब जागते हैं। बिना स्वार्थ के कोई नहीं जागता है। पर-स्वार्थ में तो वह मनुष्य जागता है जिस पर सद्गुरु की कृपा हुई है और उन्होंने उसे आत्मबोध दिया है—सच्चा पर-स्वार्थ करना है किसी को आत्मबोध देना॥ 2॥ मोह-नींद से जग जाने पर आज से लेकर आगे आनन्द ही आनन्द है। मोह-नींद में सोने से जीव को बड़ा दुख होता है। पलटू साहेब कहते हैं कि मैं आत्मज्ञान की तलवार लेकर निरंतर जागता हूं। इसका परिणाम जो होना हो, वह हो—इसका परिणाम तो उत्तम है ही॥ 3॥

शब्द-48

बनिया समुझ कै लाद लदनियाँ॥ टेक॥
यह सब मीता काम न आवै, सँग न जाइ परधनियाँ॥ 1॥
पाँच मने की पूँजी राखत, होइगे गर्ब गुमनियाँ॥ 2॥
करि ले भजन साध कीसेवा, नाम से लाव लगनियाँ॥ 3॥
सौदा चाहै तो याँही करि ले, आगे न हाट दुकनियाँ॥ 4॥
पलटु दास गोहराय कहत हैं, आगे देस निरपनियाँ॥ 5॥

शब्दार्थ—परधनियां= प्रधानता, लौकिक श्रेष्ठता। निरपनियाँ= न पनिया, जलरहित, नीरस रेगिस्तान।

भावार्थ—हे जीव व्यापारी! समझ-बूझकर सौदा लादो॥ टेक॥ हे मित्र! संसार की माया अंत में काम नहीं आयेगी। तुम्हारे साथ में तुम्हारी आज की लौकिक प्रधानता नहीं जायेगी॥ 1॥ पांच ज्ञानेन्द्रियों के विषय भोगों की मनमानी पूंजी रखते-रखते तुम्हें बड़ा अहंकार और भ्रम हो गया है॥ 2॥ तू साधु की सेवा कर आत्मचिंतन कर और सतनाम के अर्थस्वरूप आत्मस्थिति में लगन लगा॥ 3॥ साधना-भजन का सौदा करना चाहता है तो मानव-शरीर और सत्संग में यहीं कर ले। आगे न सत्संग-बाजार है और न आत्मज्ञान के व्यापारी सद्गुरु के आत्मज्ञान की दुकान है॥ 4॥ पलटू साहेब उच्च स्वर में कहते हैं कि आगे जल-रहित रेगिस्तान देश है—मानव शरीर के अलावा कहीं कल्याण-साधना का स्थान नहीं है॥ 5॥

शब्द-49

को खोलै कपट किवरिया हो, सतगुरु बिन साहिब॥टेक॥
नैहर में कछु गुन नहिं सीख्यो, ससुरे में भई फुहरिया हो।
अपने मन की बड़ी कुलवंती, छुए न पावै गगरिया हो॥ 1॥
पाँच पचीस रहै घट भीतर, कौन बतावै डगरिया हो।
पलटू दास छोड़ि कुल जतिया, सतगुरु मिलै संघतिया हो॥ 2॥

शब्दार्थ—किवरिया= किवाड़। फुहरिया= फूहड़, बेशऊर, भद्दी, अंडबंड।

भावार्थ—सद्गुरु साहेब के अतिरिक्त मन के कपट-किवाड़ को खोलने का ज्ञान कौन दे सकता है?॥ टेक॥ जो नारी नैहर में कुछ गुण-

ढंग नहीं सीखती, वह ससुराल में जाकर फूहड़ होकर रहेगी। अपने मन से बड़ी कुलवंती बनती रही। कभी एक घड़ा पानी भी भर के ना ला सकी॥ 1॥ काम, क्रोध, लोभ, मोह तथा भय, ये पांच मनोविकार तथा पचीस प्रकृतियां शरीर में रहती हैं। इन्हीं में जीव उलझा रहता है। उसे सद्गुरु के बिना मोक्ष का रास्ता कौन बतावे? पलटू साहेब कहते हैं कि मुझे सद्गुरु साथी-मित्र मिले और मैं कुल-जाति का जंजाल छोड़कर उनके साथ हो लिया॥ 2॥

शब्द-50

अबसे खबरदार रहु भाई॥ टेक॥

सतगुरु दीन्हा माल खजाना, राखो जुगत लगाई।
पाव रती घटने नहिं पावै, दिन दिन होत सवाई॥ 1॥
छिमा सील की अलफी पहिनो, ज्ञान लँगोटि लगाई।
दया कि टोपी सिर पर दै कै, और अधिक बनि आई॥ 2॥
बस्तु पाइ गाफिल मति रहना, निसु दिन करौ कमाई।
घट के भीतर चोर लगतु हैं, बैठे घात लगाई॥ 3॥
तन बन्दूक सुमति कै सिंगरा, ज्ञान के गज ठहकाई।
सुरति पलीता हरदम सुलगै, कस पर राख चढ़ाई॥ 4॥
बाहर वाला खड़ा सिपाही, ज्ञान गम्य अधिकाई।
पलटू दास आदि के अदली, हरदम लेत जगाई॥ 5॥

शब्दार्थ—खबरदार= ख़बरदार, होशियार, सावधान, सचेत। सिंगरा= सिंगड़ा, बारूद रखने का सींग का बना खोल। गज= गज़, लोह का छड़ या छड़ जैसी लकड़ी जिससे बंदूक भरी जाती है। पलीता= वह बत्ती जिससे बंदूक या तोप के रंजक में आग लगायी जाती है। कस= व्यक्ति, मनुष्य, अपना शारीरिक व्यक्तित्व। गम्य= समझने योग्य, पहुंचने योग्य। आदि= मूल, स्वरूपज्ञान। अदली= न्याय करने वाला।

भावार्थ—हे भाई साधक ! आज से सावधान हो जाओ॥ टेक॥ सद्गुरु ने आत्मज्ञान का अक्षय-कोष दिया है। उसे अनेक उपायों से सुरक्षित रखो। वह रत्ती की चौथाई भी घटने न पावे, अपितु दिन-दिन आत्मज्ञान की स्थिति सवाई बढ़ती जाय॥ 1॥ क्षमा और कोमलता की अलफी पहनो, आत्मज्ञान की लंगोटी कसो और दया की टोपी सिर पर लगाओ—क्षमा, विनम्रता,

आत्मज्ञान, दया आदि की रहनी में चलो, तो तुम्हारा अंतःकरण अत्यंत निर्मलता और आनंद से भर जायेगा ॥ 2 ॥

स्वरूपज्ञान अत्यन्त अनमोल वस्तु है। इसे सद्गुरु से पा गये हो। अब उसी में स्थित रहो। इस साधना में असावधानी न करो, अपितु रात-दिन दृश्यों का अभाव कर—संकल्पों को छोड़कर अपने आप में शांत रहने की साधना रूपी कमाई करो। याद रखो, तुम्हारी देह के भीतर काम, क्रोध, लोभादि डाकू घात लगाकर बैठे हैं। तुम्हारे चूकते ही वे तुम्हारे ऊपर हमला कर देंगे ॥ 3 ॥ इन डाकुओं को मारने के लिए शरीर को बंदूक बनाओ, सुबुद्धि का सिंगड़ा बनाओ और आत्मज्ञान के छड़ से बंदूक भरकर डाकुओं को दाग दो। इसके लिए मनोवृत्ति रूपी पलीता रात-दिन विवेक की आग में सुलगते रहना चाहिए और अपने माने गये नाम-रूपात्मक व्यक्तित्व पर राख चढ़ा दो—देहाभिमान मिटा दो ॥ 4 ॥ जो देहाभिमान से पूर्णतया बाहर हो गया है, वह सजग योद्धा की तरह खड़ा रहता है। वह पूर्णतया स्वरूपस्थिति की पहुंच में रहता है। पलटू साहेब कहते हैं कि सद्गुरु मूल तत्त्व जड़-चेतन के निर्णयता हैं। वे हर श्वास तुम्हें सावधान करते हैं ॥ 5 ॥

शब्द-51

साहिब मेरा सब कुछ तेरा, अब नाहीं कुछ मेरा है ॥ 1 ॥
यहि हमता ममता के कारन, चौरासी किहा फेरा है ॥ 2 ॥
मृग-जल निरखि के तृषा बुझै नहिं, सूखे अटका बेरा है ॥ 3 ॥
यह संसार रैन का सुपना, रूपा भ्रम सीपी केरा है ॥ 4 ॥
पलटू दास सब अरपन कीन्हा, तन मन धन और देरा है ॥ 5 ॥

शब्दार्थ—बेरा= बेड़ा, नाव, जहाज। रूपा= चांदी। देरा= डेरा, घर।

भावार्थ—हे सद्गुरु ! जो कुछ मेरा माना हुआ है वह सब आपका है। अब मेरा कुछ नहीं है ॥ 1 ॥ इस अहंता-ममता के कारण ही मैं चौरासी-चक्र में घूम रहा हूं ॥ 2 ॥ मृगजल-धूप की लहरियों से प्यास नहीं बुझ सकती—विषयों की व्यर्थ चमक-दमक से मुझे स्थिर तृप्ति नहीं मिल सकती। मेरी जीवन-नाव सूखी रेत में अटक गयी है—व्यर्थ के प्रलोभन में मैं फंस गया हूं ॥ 3 ॥ संसार की सारी माया रात में सोते समय दिखते स्वप्न के समान है। जैसे सीपी में चांदी का भ्रम होता है वैसे सारहीन संसार में सुख का भ्रम होता है ॥ 4 ॥ पलटू साहेब कहते हैं कि इसलिए मैंने अपने माने गये तन, मन, धन और घर सद्गुरु के चरणों में अर्पित कर दिये हैं।

शब्द-52

टुक हरि भजि लेहु, मन मेरे यार मुसाफिर॥टेक॥
पानी पवन अगिन से जोरा, धरती और अकासा।
पाँच तत्तु का महल उठाया, तहाँ लिया तुम बासा॥ 1॥
को तुम कवन कहाँ ते आया, बारम्बार ठगाया।
इतनी बात भुलै के कारन, फिरि फिरि गोता खाया॥ 2॥
इतनी बात चेत नहिं तुमको, जिस कारज को आया।
माया मोह लालच के कारन, अपनो रूप भुलाया॥ 3॥
मन के कारन रामचन्द्र जी, गये गुरू के पासा।
खसर फसर में कारज नाहीं, कहते पलटू दासा॥ 4॥

शब्दार्थ—टुक= थोड़ा। खसर फसर= अनिश्चय, दुविधा, उलझाव।

भावार्थ—ऐ मेरे यात्री मित्र मन! थोड़ा हरि भजन कर लो—अपने आपको समझ लो ॥ टेक॥ पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु तथा आकाश, इन पांच तत्त्वों से जुड़कर यह शरीर-महल अपने कर्मों के जोर से तुमने बनाया है और इसमें निवास किया है॥ 1॥ तुम कौन हो? तुम्हारा यहां कौन है? तुम कहां से आये हो? तुमने यहां आकर बारंबार अपने को लुटा दिया है। अपने स्वरूप के विस्मरण के कारण तुम बारंबार संसार-सागर में डूबते हो॥ 2॥ मानव-शरीर कल्याण करने की भूमिका है; परन्तु तुम्हें इस बात की सावधानी नहीं है। माया के मोह और जगत-प्रलोभन के कारण तुमने अपने शुद्ध स्वरूप चेतन आत्मा को भुला दिया है॥ 3॥ याद रखो, मन के भवबंधन के कारण ही श्रीरामचंद्र जी गुरु के पास गये। पलटू साहेब कहते हैं कि अनिश्चित बुद्धि में कल्याण नहीं होगा। इसलिए स्वरूपज्ञान में दृढ़ हो जाओ॥ 4॥

शब्द-53

साहिब के दरबार में कमी कुछ नाहीं।
चूक चाकरी में परी दुबिधा मन माहीं॥ 1॥
बेनियाज हाजिर रहै तकसीर हमारी।
कुसियारी के कीट में किन चारा डारी॥ 2॥
अकिल आपनी क्या करै अकीन न आया।
बुन्द से पिण्ड सँवारिया तिसको बिसराया॥ 3॥

खसम बिसारै आपना सोइ काफिर भाई।
पीर पराई ना लखै सोइ जाति कसाई॥ 4॥
जाति वही असराफ है दिल दर्द को आनी।
पलटु दास सोइ पाक है दुर्वेस निसानी॥ 5॥

शब्दार्थ—बेनियाज= बेनियाज़, वासना-बंधन से मुक्त, परम स्वतंत्र। तकसीर= त्रुटि, गलती। कुसियारी= कुसवारी, रेशम का जंगली कीड़ा, रेशम का कोया। अकीन= यक़ीन, विश्वास। खसम= पति, स्वामी, आत्मा। असराफ= अशराफ़, सज्जन लोग। पाक= पवित्र। दुर्वेस= दरवेश, फकीर संत।

भावार्थ—सद्गुरु के दरबार में अथवा विश्व प्रकृति के क्षेत्र में कोई कमी नहीं है। त्रुटि है अपने कर्तव्य-कर्म में और मन में संदेह होने में॥ 1॥ बंधनों से मुक्त पूर्ण स्वतंत्रता अपने अधिकार में प्रत्यक्ष है, परन्तु गलती हमारी है जो हम सावधान नहीं होते। जीवन-निर्वाह की क्या चिंता? रेशम के कीड़े को कोषा के भीतर किसने चारा डाला है? प्रकृति के नियमों से उसे स्वतः आहार मिलता है॥ 2॥ अपनी बुद्धि क्या करे जब अपने कर्म और प्रकृति के नियमों पर विश्वास नहीं है। प्रकृति के नियम तथा कर्म के जोर से ही रज-वीर्य की बुंद से शरीर की रचना हुई है। परंतु मनुष्य ऐसे कर्म-सिद्धान्त और प्रकृति के नियमों को भूल जाता है॥ 3॥ जिसने अपने आत्मस्वरूप स्वामी को भुला दिया है, हे भाई ! वही काफिर है। जो दूसरे के दर्द को न समझे और पर-पीड़न करे उसी की जाति कसाई है॥ 4॥ सज्जन लोगों की जाति वही है जिसके दिल में सब जीवों पर दया एवं मेहरबानी है। पलटू साहेब कहते हैं कि वही पवित्र है। फकीर के लक्षण हैं परहेजगारी और रहमदिली—संयम और शील॥ 5॥

शब्द-54

साहिब से परदा का कीजै। भरि भरि नैन निरखि लीजै॥ 1॥
नाचै चली घूँघट क्यों काढ़ै। मुख से अंचल टारि दीजै॥ 2॥
सती होय का सगुन बिचारै। कहि के माहुर क्या पीजै॥ 3॥
लोक बेद तन मन की डेर है। प्रेम रंग में क्या भीजै॥ 4॥
पलटू दास होय मरजीवा। लेहि रतन नहिं तन छीजै॥ 5॥

शब्दार्थ—सगुन= शकुन, शुभ घड़ी। माहुर= विष। मरजीवा= मरजिया, समुद्र में डूबकर मोती निकालनेवाला।

भावार्थ—सद्गुरु से क्या परदा करना? भर-भर नेत्र उनके दर्शन कर लो॥ 1॥ जब नाचने चली तब घूंघट काढ़ने का क्या तुक है? अपितु मुख से आंचल हटा दो॥ 2॥ जब पति की लाश के साथ सती होने चली तब शकुन एवं शुभ घड़ी विचारने की क्या आवश्यकता? लोगों को बताकर विष पीने के का क्या तुक है?॥ 3॥ इसी प्रकार जब तक लोक, वेद, तन और मन का भय है, तब तक कोई साधना के अनुराग-रस में क्या भीजेगा?॥ 4॥ पलटू साहेब कहते हैं कि जो मरने की चिंता छोड़कर समुद्र में डूबता है वही मोती खोज निकालता है॥ 5॥

विशेष—सब भय और भ्रम छोड़कर आत्मज्ञान की साधना में समर्पित हो जाओ।

शब्द-55

गुप्त मते की बात जगत में, फहस न कीजै॥टेक॥
पात्र सुपात्र देखि जब लीजै, बस्तु ताहि को दीजै॥ 1॥
यह संसार मोम का कपड़ा, जल बिच कोर न भीजै॥ 2॥
तजि बकवाद मौन ह्वै रहिये, बोलत काया छीजै॥ 3॥
पलटू कहै सुनो भाई साधो, बचन गाँठि गहि लीजै॥ 4॥

शब्दार्थ—फहस=फ़हश, फूहड़, अश्लील। कोर=किनारा।

भावार्थ—स्वरूपज्ञान और स्वरूपस्थिति अंतर्मुखता की बात है; अतएव इसको लेकर फूहड़पन न कीजिये॥ टेक॥ सामने मिले लोगों को परखो कि उनमें क्या सुपात्रता है, वे क्या उसके योग्य हैं। यदि सुपात्र हैं, तो उनको इसका उपदेश दीजिए॥ 1॥ संसार के लोग मोम के कपड़े हैं। जल में उनका किनारा भी नहीं भीग सकता—लोग प्रत्यक्ष भोग-वासनाओं और परोक्ष कल्पनाओं में डूबे हैं। उन्हें आत्मज्ञान नहीं वेधता॥ 2॥ अतएव किसी से बकवास करने की आदत छोड़कर मौन आत्मस्थिति में रहो। व्यर्थ बोलने से मन, वचन तथा तन क्षीण ही होते हैं॥ 3॥ पलटू साहेब कहते हैं कि हे भाई संतो! सुनो, इस बात को अपनी गांठ में बांध लो॥ 4॥

शब्द-56

नहीं मुख राम गाओगे, आगे दुख बड़ा पाओगे॥ 1॥
राम बिन कौन तारैगा, पकड़ जमदूत मारैगा॥ 2॥
कबौं सतसंग ना कीन्हा, भूखे को नाहिं कुछ दीन्हा॥ 3॥

माया औ मोह में भूले, कुटुम परिवार लखि फूले॥ 4॥
पूछै धर्मराज जब भाई, बचन मुख नाहिं कहि आई॥ 5॥
पलटू दास लखि रोया, सुघर तन पाय के खोया॥ 6॥

शब्दार्थ—कबौं= कभी। सुघर= सुंदर, कल्याणदायी।

भावार्थ—यदि मुख से राम-राम नहीं कहोगे—आत्मबोध नहीं ग्रहण करोगे, तो तुम्हें आगे चलकर बड़ा दुख मिलेगा॥ 1॥ आत्मज्ञान और आत्मस्थिति के बिना तुम्हारा भवबंधन कैसे कटेगा? फल यह होगा कि वासनाओं में पिसकर दुख भोगोगे॥ 2॥ तुमने कभी सत्संग नहीं किया और भूखे-प्यासे को भोजन-जल नहीं दिया॥ 3॥ माया के मोह में अपने आप को भूले रहे और कुटुम्ब-परिवार देखकर अहंकार में फूले-फूले घूमते रहे॥ 4॥ जब तुमसे यमराज तुम्हारे कर्मों का लेखा-जोखा लेगा तब तुम्हारे मुख से कुछ उत्तर देते नहीं बनेगा॥ 5॥ पलटू साहेब कहते हैं कि मैं तुम लोगों की दयनीय दशा देखकर दुखी होता हूं। तुमने कल्याणदायी उत्तम मानव-शरीर पाकर उसे व्यर्थ और अनर्थ में खो दिया॥ 6॥

10. उच्चतम स्वरूपस्थिति की दशा

शब्द-57

चलहु सखी वहि देस, जहवाँ दिवस न रजनी॥टेक॥
पाप पुन्न नहिं चाँद सुरज नहिं, नहीं सजन नहिं सजनी॥ 1॥
धरती आग पवन नहिं पानी, नहिं सूतै नहिं जगनी॥ 2॥
लोक बेद जंगल नहिं बस्ती, नहिं संग्रह नहिं त्यगनी॥ 3॥
पलटू दास गुरू नहिं चेला, एक राम रम रमनी॥ 4॥

शब्दार्थ—रजनी= रात।

भावार्थ—बोधपूर्ण मनोवृत्ति बुद्धि से कहती है कि हे सखी! उस देश को चलो जहां न दिन है, न रात है॥ टेक॥ न पाप है न पुण्य है, न चंद्रमा है न सूर्य है, न सजन है न सजनी है॥ 1॥ वहां धरती, अग्नि, पवन, पानी नहीं है। वहां न सोना है न जागना है॥ 2॥ वहां न लोक है, न वेद है, न जंगल है, न बस्ती है, न संग्रह है और न त्याग है॥ 3॥ पलटू साहेब कहते हैं कि वहां गुरु और चेला भी नहीं हैं। बस, केवल एक आत्माराम में निरंतर रमना है॥ 4॥

विशेष—चित्त-दृश्य का पूर्ण अभाव हो जाने पर केवल स्वयं आत्माराम शेष स्थित है।

शब्द-58

साधो भाई उहवाँ के हम बासी, जहवाँ पहुँचै नहिं अबिनाशी॥टेक॥
जहवाँ जोगी जोग न पावै, सुरति सबद नहिं कोई।
जहवाँ करता करे न पावै, हम हीं करैं सो होई॥ 1॥
ब्रह्मा बिस्नु नाहिं गमि सिव की, नहीं तहाँ अबिनासी।
आदि जोति उहाँ अमल न पावै, हमहीं भोग बिलासी॥ 2॥
त्रिकुटी सुन्न नाहिं है उहवाँ, दंडमेरु ना गिरिवर।
सुखमन अजपा एकौ नाहीं, बंकनाल ना सरवर॥ 3॥
जहवाँ पाँच तत्त ना स्वासा, जगमग झिलिमिलि नाहीं।
पलटू दास की औघट घाटी, बिरला गुरुमुख जाहीं॥ 4॥

शब्दार्थ—अबिनासी= अविनाशी, माना हुआ परोक्ष ईश्वर। गमि= गम, पहुंच। अमल= अधिकार। औघट घाटी= दुर्गम पथ।

भावार्थ—हे भाई साधो ! हम वहां के निवासी हैं जहां परोक्ष ईश्वर की पहुंच नहीं है॥ टेक॥ वहां न योगी योग करता है और न वहां सुरति और शब्द हैं। वहां अन्य कर्ता का होना संभव नहीं है। हम जो करते हैं वही होता है॥ 1॥ वहां ब्रह्मा, विष्णु और शिव की पहुंच नहीं है। वहां अन्य अविनाशी माना गया परमात्मा नहीं है। माना हुआ आदि ज्योति का वहां स्थान नहीं है। वहां तो हमारा आत्मतृप्ति का भोग-विलास है॥ 2॥ वहां न त्रिकुटी है, न शून्य है, न मेरुदण्ड है, न पर्वत है। वहां न सुषुम्ना है, न अजपा है, न बंकनाल है और न सरोवर है॥ 3॥ वहां न पांच तत्व हैं, न श्वास है। न झिलमिलाती हुई जगमग ज्योति है। पलटू साहेब कहते हैं कि मेरी स्थिति चित्त-दृश्य रूप दुर्गम घाटी पार कर जाना होता है। वहां कोई बिरला गुरुमुख पहुंचता है॥ 4॥

विशेष—चित्त ही दृश्य है। इसको पार कर स्वरूपस्थिति होती है।

शब्द-59

साधो भाई वह पद करहु बिचारा, जो तीनि लोक से न्यारा॥टेक॥
छर अच्छर चौंतिस में कहिये, सहस नाम तेहि माहीं।
निःअच्छर वह जुदा रहतु है, लिखे पढ़े में नाहीं॥ 1॥

सुन्न गगन में सबद उठतु है, सो सब बोल में आवै।
निःसबदी वह बोलै नाहीं, सो सत सबद कहावै॥ 2॥
रहनी रहै कथै फिरि कथनी, उन को कहिये ज्ञानी।
रहनी कथनी दूनौं छूटै, सो पूरा बिज्ञानी॥ 3॥
सुरति लगावै ध्यान धरै जो, सो सब जाप में आवै।
सुरति ध्यान एकौ में नाहीं, सो अजपा कहवावै॥ 4॥
जोग करै सो रूढ़ मता है, मुक्ति मँहै सब आवै।
छोड़ै रूढ़ अरूढ़ को पावै, साची मुक्ति कहावै॥ 5॥
हद बेहद को अनुभै कहिये, निरअनुभै ह्वै जावै।
पलटु दास बेहद में बैठे, सो वहि पद को पावै॥ 6॥

शब्दार्थ—पद= स्थिति। रूढ़ मता= परंपरागत। अनुभै= अनुभव। बेहद = आत्मस्थिति।

भावार्थ—हे भाई साधो ! उस शुद्ध चेतन स्वरूप की स्थिति का विचार करो जो तीनों लोकों-समस्त जड़ दृश्य से सर्वथा पृथक है॥ टेक॥ क्षर या अक्षर ककहरा के चौंतीस अक्षरों में आते हैं। इसमें मान्यवरों के सहस्र नाम गिनाये जाते हैं। किन्तु निज स्वरूप चेतन अक्षरों से सर्वथा पृथक होने से निःअक्षर है। वह लिखने-पढ़ने में नहीं आता है॥ 1॥ योगी लोग सिर के शून्य गगन में उठने वाले शब्द को सुनते हैं। अतएव वह बोली में आता है। आत्मा तो शब्दातीत है। वह बोलता नहीं। सत शब्द से उसी का संकेत किया जाता है॥ 2॥ पहले भक्ति-ज्ञान और वैराग्य की रहनी में रहे। उसके बाद ज्ञानोपदेश करे। उसको ज्ञानी कहना चाहिए। जब रहनी और कथनी दोनों का अहंकार छूट जाय वह पूरा विज्ञानी है॥ 3॥ जहां मनोवृत्ति स्थिर किया जाता है और आलंबन का ध्यान किया जाता है, वह सब जाप के भीतर आता है—वह चित्त स्थिर करने का आलंबन मात्र है। जहां न कहीं मनोवृत्ति लगाना रहता है और न किसी का ध्यान करना रहता है, वह दृश्य-शून्य दशा शुद्ध चेतन की स्थिति है। यह सच्चा अजपा की दशा कहलाती है॥ 4॥ जो परंपरागत योगाभ्यास किया जाता है वह रूढ़ मत है। यह सब मुक्ति पथ में आता है। जब रूढ़ योग छोड़कर अरूढ़-परम्परा से पार दृश्य-शून्य की स्थिति आती है, वही सच्ची मुक्ति कहलाती है॥ 5॥ हद-स्थूल साधना और बेहद-सूक्ष्म साधना यह मनोगत अनुभव का विषय है। साधक इनसे ऊपर उठकर जब चित्त-शून्य हो जाता है, वह मन के अनुभव से परे शुद्ध शांत स्वस्वरूप की स्थिति होती है। पलटू साहेब कहते हैं कि जब साधक

पारंपरिक सीमाओं की साधना से ऊपर उठकर जड़ प्रकृति क्षेत्र से बाहर हो जाता है—दृश्यातीत शुद्ध चेतन मात्र, तब वह उस स्थिति में ठहर जाता है जो परम पद है॥ 6॥

शब्द-60

चित मेरा अलसाना, अब मोसे बोलि न जाइ॥टेक॥
देहरी लागै परबत मोको, आँगन भया है बिदेस।
पलक उघारत जुग सम बीतै, बिसरि गया संदेस॥ 1॥
बिष के मुए सेती मनि जागी, बिल में साँप समाना।
जरि गया छाछ भया घिव निरमल, आपुइ से जुपियाना॥ 2॥
अब ना चलै जोर कछु मेरा, आन के हाथ बिकानी।
लोन की डरी परी जल भीतर, गलि के होइ गइ पानी॥ 3॥
सात महल के ऊपर अठएँ, सबद में सुरति समाई।
पलटू दास कहौं मैं कैसे, ज्यों गूंगै गुड़ खाई॥ 4॥

शब्दार्थ—देहरी= देहली, दरवाजे की निचली चौखट की लकड़ी जिसे लांघकर लोग आते-जाते हैं। जुपियाना= चुप हो गया।

भावार्थ—मेरा मन कुछ करना नहीं चाहता है, मुझसे बोला भी नहीं जाता है॥ टेक॥ अब दरवाजे की चौखट लांघना पर्वत लांघने के समान कठिन लगता है और आंगन में जाना विदेश जाने के समान कठिन लगता है। पलक झपकना भी युग बीतने के समान लगता है। अब संसार के सारे संदेश-समाचार भूल गये हैं॥ 1॥ राग-द्वेष का विष मर गया, इसलिए मन आत्मज्ञान में जग गया। अहंकार रूपी सर्प निस्तेज होकर बिल में डूब गया। छांछ के जल जाने पर उसकी कलकलाहट की आवाज बंद हो जाती है और घी निर्मल हो जाता है। इसी तरह शांति दशा में मन तर्क छोड़ देता है और वाणी मौन हो जाती है॥ 2॥ अब मेरे अहंकार का कोई बल नहीं चलता है। मैं परम शांति के हाथों बिक गया हूं। नमक की डली पानी में पड़कर जैसे गल जाती है, वैसे मेरा मन आत्म-शांति में पड़कर गल गया है॥ 3॥ सात महल के ऊपर आठवें महल के शब्द में सुरति लीन हो गयी। पलटू साहेब कहते हैं कि मैं किससे कहूं? गूंगा गुड़ खाय तो वह उसका स्वाद कैसे बता सकता है? आत्मशांति का अनुभव जबान से बताया नहीं जा सकता। उस दशा में पहुंचकर स्वयं अनुभव किया जा सकता है॥ 4॥

विशेष—ये सात महल के ऊपर आठवें महल में उठते शब्द की बात कल्पित है। ग्रंथकर्ता ने ऐसी बातों का खंडन स्वयं पीछे अट्ठावनवें तथा

उनसठवें शब्द में कर दिया है। वस्तुतः सारा प्रतीत दृश्य छोड़कर स्वस्वरूप चेतन में ही स्थिति होती है।

शब्द-61

सत बेधि रहो है, का से यह भेद कहौं॥टेक॥
रोम रोम में नाद उठतु है, जग गति जाइ जरै।
हाल हमारी कोऊ ना जानै, और की और करै॥ 1॥
पुलकित गात पलक न परै मोर, टकटक ताकि रहो।
सिथिल भये मुख बचन न आवै, ज्यों ठगहार गहो॥ 2॥
यह अचरज कासे अब कहिये, जिन देखा सोइ जानै।
होइ अचरज अचरज को खोजै, तब अचरज पहिचानै॥ 3॥
पलटू हेरत आपु हिरानी, केहि बिधि करै सम्हार।
होइ अचेत झुकि झुकि परै चेतन, ऐसी हाल हमार॥ 4॥

शब्दार्थ—सत= स्वरूपबोध।

भावार्थ—सत्स्वरूप आत्मबोध ने मुझे बेध डाला है। यह भेद मैं किससे कहूं॥ टेक॥ मेरे शरीर के रोम-रोम में आनन्द का नाद उठता है। सांसारिक मोह-माया तो जल गयी है। मेरी दशा कोई समझ नहीं पाता। इसीलिए लोग कुछ अन्य ही बात समझ रहे हैं॥ 1॥ मेरे तन-मन आनन्द में प्रफुल्लित हैं। मेरे पलक गिरते नहीं हैं, अपितु नेत्र एकटक ताकते रह जाते हैं। मेरा शरीर शिथिल हो गया, मुख से बात नहीं निकलती है। मानो किसी ठग ने मुझे ठग लिया है॥ 2॥ इस आंतरिक दिव्य शांति स्थिति को अब किससे कहा जाय? जिसने इसका अनुभव किया है, वही इस दशा को जान सकता है। जो साधक आश्चर्यचकित होकर इस आश्चर्य की खोज करेंगे वे इस आश्चर्य को समझ सकेंगे॥ 3॥ पलटू साहेब कहते हैं कि आत्मस्थिति को खोजते-साधते सारा अहंकार खो गया। अब किस प्रकार अपना सम्हाल करे? चेतन अचेत होकर झुक-झुक पड़ता है। ऐसी दशा मेरी हो गयी है॥ 4॥

विशेष—गहरी शांति हो गयी और बाह्य जगत-प्रपंच सारहीन दिखने लगा, जैसा कि वह है।

शब्द-62

साचा हरि दरबार, झूठा टिकै न कोई॥टेक॥
झूठा छिपै न लाख छिपावै, अंत को होत उघार॥ 1॥

झूठा रंग रँगे जो कोई, चटक रहै दिन चार॥ 2॥
हरि की भक्ति सहज है नाहीं, ज्यों चोखी तरवार॥ 3॥
पलटू दास हाथ अपने से, सिर को लेइ उतार॥ 4॥

शब्दार्थ—चटक= चमक।

भावार्थ—आत्मज्ञान का दरबार सच्चा है। वहां कोई झूठा नहीं टिक सकता॥ टेक॥ लाख छिपाने पर भी असत्य छिप नहीं सकता। अंततः वह प्रकट ही हो जाता है॥ 1॥ यदि कोई नकली रंग में अपने को रंगेगा, तो उसकी चमक चार दिन ही रहेगी, फिर फीका होगा ही॥ 2॥ आत्मज्ञान की रहनी में चलना विषयी मन के लिए सहज नहीं है। वह तो तेज धार की तलवार पर चलना है॥ 3॥ पलटू साहेब कहते हैं कि जो अपने सिर को अपने हाथ से काटकर उतार ले वही इस पथ पर चल सकता है—जो सारा अहंकार छोड़ देगा वही स्वरूपस्थिति-पथ पर चल सकेगा॥ 4॥

शब्द-63

जाय मनाओं मैं साजन को, केहि भाँति सखी रे॥टेक॥
भूली फिरों राह न पाओं, सतगुरु चाही सँग लागन को॥ 1॥
मैं मूरख मन मलिन भयो है, ज्ञान चाही तन माँजन को॥ 2॥
भूख पियास छुटै नहिं मेरी, पाँच भूत चाही त्यागन को॥ 3॥
मोह मया निद्रा रहै घेरे, आठ पहर चाही जागन को॥ 4॥
पलटू दास साध की संगति, उठि उठि मन चाहै भागन को॥ 5॥

शब्दार्थ—पांच भूत= काम, क्रोध, लोभ, मोह और भय।

भावार्थ—मनोवृत्ति इन्द्रियों से कहती है कि हे सखी! मैं किस प्रकार अपने स्वामी आत्मा को जाकर मनाऊं?॥ टेक॥ मैं तो उन्हें भूलकर विषयों में भटकती-फिरती हूं। स्वरूपज्ञान की राह नहीं पाती हूं। लगता है कि इसके लिए मुझे सद्गुरु की शरण में समर्पित होना चाहिए॥ 1॥ मैं मूर्ख हूं। मन मैला है। आत्मज्ञान चाहिए जिससे तन-मन को मांजकर उन्हें निर्मल कर लूं॥ 2॥ मेरे में लगी विषयों की भोग-तृष्णा मिटती नहीं है। मुझे चाहिए कि काम, क्रोध, लोभ, मोह और भय इन पांचों भूतों को सर्वथा त्याग दूं॥ 3॥ मुझे माया-मोह की निद्रा घेरे रहती है, जबकि चैबीसों घंटे आत्मज्ञान

में जागना चाहिए॥ 4॥ पलटू साहेब कहते हैं कि मेरा मन चाहता है कि मैं उठ-उठकर साधु संगति में भाग जाऊं॥ 5॥

11. अनुभव ज्ञान ही सच्चा है

शब्द-64

कहिबे से क्या भया भाई, जब ज्ञान आप से होई॥टेक॥
अललपच्छ कै चेटुका, वाको कौन करै उपदेस।
उलटि मिलै परिवार में, वासे कौन कहै संदेस॥ 1॥
ज्यों सिसु होत मराल के, वाको कौन सिखावै ज्ञान।
नीर कँहै अलगाइ कै, वह छीर करतु है पान॥ 2॥
सिंह कै बच्चा गिरि पर्‌यौ, वह खेलत तुरत सिकार।
वाको कौन सिखावई, वो हस्ती डारत मार॥ 3॥
संत को कौन सिखावता, उन्ह अनुभव भा परकास।
सिखई बुद्धि केहि काम की, जो हृदय न पलटू दास॥ 4॥

शब्दार्थ—अललपच्छ= अलल नाम का पक्षी। चेटुका= बच्चा। सिसु= शिशु, बच्चा। मराल= हंस॥

भावार्थ—हे भाई! किसी के सिखाने से क्या होता है? जब अपने अनुभव से ज्ञान हो तब उसकी विशेषता है॥ टेक॥ अलल पक्षी का बच्चा आकाश में ही अपनी माता से पैदा होकर तुरंत उड़ चलता है और अपने परिवार में पहुंच जाता है। उसको इस तरह उड़ने का कोई प्रशिक्षण नहीं देता है॥ 1॥ हंस का बच्चा नीर को छोड़कर केवल क्षीर ले लेता है। उसको इसका कोई उपदेश नहीं देता है। उसका यह जन्मसिद्ध ज्ञान है॥ 2॥ सिंह का बच्चा पैदा होकर बिना प्रशिक्षण के शिकार करता है और हाथी तक को मार गिराता है॥ 3॥ इसी प्रकार संत को जो अनुभव ज्ञान होता है, वह कोई सिखाता नहीं है, किन्तु साधना करते-करते उन्हें स्वतः अनुभव होता है। पलटू साहेब कहते हैं कि अपने हृदय में अनुभव न हो तो केवल सिखायी हुई बुद्धि किस काम की॥ 4॥

विशेष—मनुष्य को शिक्षा की आवश्यकता होती है परन्तु उस सीख को लेकर जब साधक स्वयं साधना करने लगता है, तब उसका अनुभव-स्रोत खुल जाता है। अनुभव का अर्थ ही है—अनु= पीछे, भव= उत्पन्न। प्रयोग के पीछे उत्पन्न ज्ञान।

शब्द-65

बाचक ज्ञान न नीका ज्ञानी, ज्यों कारिख का टीका॥टेक॥
बिनु पूँजी को साहु कहावै, कौड़ी घर में नाहीं।
ज्यों चोकर के लड्डू खावै, का सवाद तेहि माहीं॥ 1॥
ज्यों सुवान कुछ देखि कै भूँकै, तिस ने तौ कुछ पाई।
वाकी भूँक सुने जो भूँकै, सो अहमक कहवाई॥ 2॥
बातन सेती नहीं होइ राजा, नहिं बातन गढ़ टूटै।
मुलुक मँहै तब अमल होइगा, तीर तुपक जब छूटै॥ 3॥
बातन से पकवान बनावै, पेट भरै नहिं कोई।
पलटू दास करै सोइ कहना, कहे सेती क्या होई॥ 4॥

शब्दार्थ—कारिख= कालिख, स्याही, कलंक। सुवान= श्वान, कुत्ता। गढ़= किला। अमल= कब्जा, अधिकार।

भावार्थ—हे ज्ञानी! वचन मात्र का ज्ञान अच्छा नहीं होता। वह तो स्याही के टीके के समान कलंक है॥ टेक॥ जिसके घर में कौड़ी भी नहीं है वह बिना पूंजी के महाजन कैसे कहला सकता है। कोई चोकर का लड्डू खाय तो उसे क्या स्वाद मिलेगा?॥ 1॥ जैसे कुत्ता कुछ देखकर भूंकता है, तो उसने देख पाया है, किन्तु जो कुत्ते दूसरे की भूंक सुनकर भूंकते हैं, वे मूर्ख ही कहलाते हैं॥ 2॥ बात बघारने से कोई राजा नहीं हो जाता और बात बघारने से न शत्रु का किला टूटता है। जब तीर और तोप छूटते हैं, युद्ध करके जीत लिया जाता है, तब देश में कब्जा एवं अधिकार होता है॥ 3॥ कोई बातों से पकवान बनावे और खावे, तो उससे पेट नहीं भरता। पलटू साहेब कहते हैं कि जो आचरण में करे, वही बात कहे। केवल वक्तव्य झाड़ने से क्या होता है?॥ 4॥

शब्द-66

जोई जीव सोई ब्रह्म एक है, दृष्टि अपानी चर्मा॥टेक॥
जीव से जाइ ब्रह्म तब होता, जिव बिनु ब्रह्म न होई।
फल में बीज बीज में फल है, अवर न दूजा कोई॥ 1॥
नीर में लहर लहर में पानी, कैसे कै अलगावै।
छाया में पुरुस पुरुस में छाया, दुइ कहवाँ से पावै॥ 2॥
अछर में मसी मसी में अच्छर, दुइ कहवाँ से कहिये।
गहना कनक कनक में गहना, समझि चुप्प करि रहिये॥ 3॥

जीव में ब्रह्म ब्रह्म में जिव है, ज्ञान समाधि में सूझै।
माटि में घड़ा घड़ा में माटी, पलटू दास यों बूझै॥ 4॥

शब्दार्थ—चर्मा= चरम, अंतिम, सीमा। मसी= मसि, स्याही।

भावार्थ—जो जीव है वही ब्रह्म है। यही अंतिम दृष्टि एवं ज्ञान है॥ टेक॥ जीव ही शुद्ध होकर ब्रह्म होता है। जीव के बिना ब्रह्म का कोई अस्तित्व नहीं है। फल में बीज है, बीज में फल है। पानी और लहर दो नहीं। पुरुष की ही छाया होती है। पुरुष बिना छाया नहीं। अक्षर और स्याही दो नहीं। सोना और आभूषण एक ही है। मिट्टी और घड़ा दो नहीं। इसी प्रकार जीव में ब्रह्म है और ब्रह्म में जीव है। यह बात तब अनुभव में आती है, जब दृश्य का अभाव होकर समाधि में केवल स्व सत्ता रह जाती है। पलटू साहेब कहते हैं कि मैं ऐसा समझता हूं॥ 1-4॥

विशेष—फल, बीज, जल, लहर, पुरुष, छाया, सोना, आभूषण तथा मिट्टी-घड़ा उदाहरण मात्र हैं जो भ्रम भी पैदा कर सकते हैं, क्योंकि ये सब जड़ और विकारी तथा परिवर्तनशील हैं। वस्तुतः जीव ही ब्रह्म है, महान है, परन्तु इसका अनुभव तब होगा जब चित्त-दृश्य का अभाव होकर निराधार स्थिति होती है—असंग, केवल, अद्वितीय, स्वतःशांत।

12. मन की दशा

शब्द-67

ई मन बनिया बान न छोड़ै॥ टेक॥
पूरा बाट तरे खिसकावै, घटिया कौ टकटोरै।
पसँगा माहै करि चतुराई, पूरा कबहुँ न तौलै॥ 1॥
घर में वाके कुमति बनियाइन, सबहिन को झकझोरै।
लड़िका वाका महा हरामी, इमरित में विष घोरै॥ 2॥
पांच तत्त का जामा पहिरे, ऐंठा गुइँठा डोलै।
जनम जनम का है अपराधी, कबहूँ साच न बोलै॥ 3॥
जल में बनिया थल में बनिया, घट घट बनिया बोलै।
पलटू के गुरु समरथ साईं, कपट गाँठि जो खोलै॥ 4॥

शब्दार्थ—बान= आदत, बनियई, छल-कपट। बाट= बटखरा, तौलने का लोह या पत्थर का टुकड़ा।

भावार्थ—यह मन छल-कपट करने में बनिया है। यह अपनी गलत आदत नहीं छोड़ता है॥ टेक॥ बनिया तौलते समय पूर्ण बाट को नीचे खिसकाकर घटिया बाट टटोलकर उससे अपना माल बेचते समय कम तौलता है। वह पासंग में भी चालाकी करता है और सही नहीं तौलता। यही बात मन की है। वह अच्छे विचारों को छोड़कर सदैव राग-द्वेषपूर्ण गंदे विचारों में डूबा रहता है॥ 1॥ इस मन-बनिया के हृदय में कुबुद्धि रूपी बनियाइन स्त्री है। वह सबको नाना वासनाओं में डालकर झकझोरती रहती है। उस कुबुद्धि-बनियाइन के लड़के काम, क्रोध, लोभ आदि बड़े हरामी हैं। ये सदैव आत्मज्ञान रूपी अमृत में विषय-वासना तथा राग-द्वेष रूपी विष घोलते हैं॥ 2॥ यह पांच जड़ तत्त्वों का जामा शरीर पहनकर अहंकार में ऐंठा-ऐंठा घूमता है। यह अनादिकाल से जन्म-जन्मांतर का विषय-भोगों का अपराधी है। यह कभी सही राय नहीं देता॥ 3॥ चाहे जल में रहे और चाहे थल में रहे, मनुष्य जहां रहे, उसके हृदय में मन-बनिया हर क्षण बोलता रहता है। पलटू साहेब कहते हैं कि मेरे सद्गुरु मन-विजयी समर्थ स्वामी हैं। वे मन की कपट गांठ को परखा कर खोलते हैं॥ 4॥

शब्द-68

सो बनिया जो मन को तौलै॥ टेक॥

मनहिं के भीतर बसी बजार, मनहीं आपु खरीदनहार॥ 1॥
मनहीं में लेन देन मनहिं दुकान, मनहीं में मन की गुजरान॥ 2॥
मनहीं में लादै उलदै अनत न जाय, मनहिं की पैदा मनहिं में खाय॥ 3॥
मनहीं में तराजू मनहीं में सेर, पलटूदास सब मनहीं का फेर॥ 4॥

शब्दार्थ—गुजरान= निर्वहन। उलदै= माल उतारता है।

भावार्थ—सही व्यापारी वह है जो अपने मन को सदैव तौलता रहे, सम्हालता रहे एवं वश में रखे॥ टेक॥ मन के भीतर ही बाजार बसा है और मन स्वयं उसमें सौदा खरीदनेवाला है॥ 1॥ मन के भीतर ही लेन-देन चलता है और मन में ही दुकान लगी है और मन में ही मन का निर्वाह होता है॥ 2॥ मन में ही माल लादता है और उतारता है, अलग नहीं जाता। मन में ही पैदा करता है और मन में ही खाता है॥ 3॥ मन में ही तराजू है और मन में ही सेर है। पलटू साहेब कहते हैं कि मन ही का सब चक्कर है॥ 4॥

विशेष—हानि-लाभ, राग-द्वेष, सुख-दुख, शत्रु-मित्र आदि सब मन का ही चक्कर है। मन को ठीक कर लेने वाला शांति पाता है।

13. मायाजाल

शब्द-69

माया हमें अब जनि बगदावो, तुम तो ठगिनी जग बौरावो॥टेक॥
देवन के घर भइउ अपसरा, जोगी के घर चेली।
सुर नर मुनि तौ सब ही खायो, होइ अलमस्त अकेली॥ 1॥
कृस्न कँहै गोपी होइ खायो, राम कँहै होइ सीता।
महादेव काँ पारबती होइ, तोसे कोउ न जीता॥ 2॥
बिसुन कँह लछमी होइ खायो, ब्रह्मा स्रिष्टि बड़ाई।
सिंगी रिषि को बन में खायो, तुम्हरी फिरी दुहाई॥ 3॥
दौलत होइ तिनु लोकहि खायो, गिरही की ह्वै नारी।
पलटू दास के द्वार खड़ी है, लौंड़ी होइ हमारी॥ 4॥

शब्दार्थ—जनि= मत, ना। बगदावो= बिगाड़ो। लौंड़ी= सेविका, दासी, नौकरानी।

भावार्थ—हे माया! अब तुम मुझे मत बिगाड़ो। तुम तो ठगिनी हो। तुमने जगत के लोगों को पागल बना दिया है॥ टेक॥ तुम देवताओं के घर में अप्सरा बनकर, योगी के घर में चेली बनकर उन्हें भटका दिये। सुर-नर-मुनि सबको तूने भटका दिया है। तू अकेली मतवाली बनकर घूमती है॥ 1॥ गोपी, सीता तथा पार्वती बनकर तुमने श्रीकृष्ण, श्रीराम तथा महादेव को भटका दिया। तुमको कोई जीत न सका॥ 2॥ तूने लक्ष्मी बनकर विष्णु को सृष्टि रचने के चक्कर में ब्रह्मा को तथा वन में ऋष्य श्रृंग को भटका दिया। तुम्हारा चारों तरफ बोलबाला हो गया है॥ 3॥ तूने धन-सम्पति बनकर तीनों लोकों को पाप में लिप्त कर दिया। गृहस्थों के घर में स्त्री बनकर उन्हें भटका दिया। पलटू साहेब कहते हैं कि मेरे द्वार पर माया मेरी दासी बनकर खड़ी है॥ 4॥

विशेष—स्त्री-पुरुष दोनों में मायातीत चेतन आत्मा है और दोनों की काया माया है। स्त्री या पुरुष जो कोई दृश्य-मोह में पड़ा वही स्वयं दुखी

होता है और दूसरों को भ्रम में डालकर दुखी करता है। अतएव अकेली स्त्री माया नहीं है, पुरुष भी माया है, और दोनों के आत्मा मायातीत हैं, शुद्ध चेतन हैं। अतएव दोष एक का नहीं है।

शब्द-70

हमसे फरक रहु दूर, माया मौत तुलानी॥टेक॥
आन के लेखे तुम अमृत लागहु, हमरे लेखे जस पानी।
हमरे तुँह लौंड़ी अस नाहीं, औरन के लेखे घर रानी॥ 1॥
औरन के लेखे तू परबत, हम राई सम जानी।
सगरो अमल करेहु तुँह माया, हम से रहौ अलगानी॥ 2॥
तीनो लोक तुँह निगल गई है, तेहि पर नाहिं अघानी।
पलटु दास कह बकसहु माया, नरक कि तुँहीं निसानी॥ 3॥

शब्दार्थ—अमल= अधिकार, कब्जा। बकसहु= क्षमा करो।

भावार्थ—हे माया! तू मौत तुल्य है। तू मुझसे दूर खड़ी हो॥ टेक॥ दूसरों की दृष्टि में तू अमृत लगती है। परन्तु मैं तुझे पानी समझता हूं। मेरी दृष्टि में तू नौकरानी की तरह भी नहीं है, भले अन्य की दृष्टि में महारानी बन बैठी है॥ 1॥ तू अन्य की दृष्टि में पर्वत बराबर ऊंची है, किन्तु मेरी दृष्टि में राई के बराबर है। हे माया! तूने सब पर अपना अधिकार कर लिया है, किन्तु खबरदार! मुझसे दूर रहना॥ 2॥ तुमने सभी प्राणियों को निगल लिया है, तिस पर भी तू तृप्त नहीं हुई। पलटू साहेब कहते हैं कि हे माया! तू मुझको क्षमा कर । तू ही नरक का लक्षण है॥ 3॥

शब्द-71

सोई है अतीत जो तौ माया तें अतीत॥ टेक॥
माया ठगिनी ठगा संसार, सुर नर मुनि बोरे मँझधार॥ 1॥
माया बोलै मीठी बोल, गाँठ से ज्ञान ध्यान लेइ खोल॥ 2॥
माया है यह काली नाग, काटै पानी सकै न माँग॥ 3॥
पलटू दास माया यह काल, भागि बचे साहिब के लाल॥ 4॥

शब्दार्थ—अतीत= परे, त्यागी।

भावार्थ—वही त्यागी है, जो माया से परे है॥ टेक॥ माया ठगिनी ने संसार के लोगों को ठग लिया है। यह सुर, नर, मुनि सबको भवसागर के बीच में डुबाती है॥ 1॥ माया मीठे बोल-बोलकर मनुष्य के पास से ज्ञान-

ध्यान छीन लेती है॥ 2॥ यह माया काली नागिन है। यह जिसको काटती है, वह पानी भी नहीं मांगकर पी पाता। माया उसे तुरंत मार डालती है॥ 3॥ पलटू साहेब कहते हैं कि यह माया काल है। इससे कोई सद्गुरु का लाल ही भागकर बचता है॥ 4॥

विशेष—मोह ही माया है और उसका आलंबन जड़ दृश्य है। अतएव वह भी माया है। माया से मुक्त होने का उपाय समस्त जड़ दृश्य से उदास, निराश एवं निस्पृह रहना है।

14. कुमति दुखदायी

शब्द-72

जहाँ कुमति कै बासा है, सुख सपनेहु नाहीं॥टेक॥
फोरि देत घर मोर तोर करि, देखै आपु तमासा है॥ 1॥
कलह काल दिन रात लगावै, करै जगत उपहासा है॥ 2॥
निरधन करै खाये बिनु मारै, आछत अन्न उपवासा है॥ 3॥
पलटू दास कुमति है भोंड़ी, लोक परलोक दोउ नासा है॥ 4॥

शब्दार्थ—भोंड़ी= मूर्खा, बुरी।

भावार्थ—जिस परिवार और समाज में कुमति का निवास है वहां उन लोगों को स्वप्न में भी सुख नहीं मिलता॥ टेक॥ यह कुमति मेरा-तेरा का राग-द्वेष बढ़ाकर परिवार-समाज को तोड़ देती है और स्वयं खड़ी होकर तमाशा देखती है॥ 1॥ कुमति परिवार तथा समाज में रात-दिन कलह का काला सांप लगाती है। कलह में पड़े हुए परिवार-समाज का जगत में उपहास होता है॥ 2॥ कुमति मनुष्य को धनहीन बनाती है। यहां तक परिवार को अन्न के लिए तरसाकर मारती है। कुमति के कारण अन्न रहते हुए लोग भूखे और दुखी रहते हैं॥ 3॥ पलटू साहेब कहते हैं कि कुमति मूर्खा और बुरी है। यह लोक-परलोक दोनों का नाश करती है॥ 4॥

15 पंडित को प्रबोध

शब्द-73

पढ़ि पढ़ि क्या तुम कीन्हा पंडित, अपना रूप न चीन्हा॥टेक॥
औरन को तुम ज्ञान बताओ, तुम को परै न बूझी।
जस मसालची सबहिं दिखावै, वाको परै न सूझी॥ 1॥

अपनी खबर नहीं है तुमको, औरन को परमोधो।
पढ़ना गुनना छोड़ि के पाँड़े, अपनी काया सोधो॥ 2॥
इन्द्रिन से आजिज तुम रहते, इन्द्री मारि गिराओ।
माया खातिर बकि बकि मरते, मन अपनो समुझाओ॥ 3॥
बुद्धि मँहै परबीन चतुर हो, खाँड़ धूरि में सानौ।
पलटू दास कहै सुनु पाँड़े, बचन हमारा मानौ॥ 4॥

शब्दार्थ—परमोधो= प्रबोध एवं ज्ञान देते हो। आजिज= आजिज़, दीन, अधीन।

भावार्थ—हे पंडित! शास्त्रों को पढ़-पढ़ कर तुमने क्या किया? तुमने आज तक अपना आत्मस्वरूप नहीं समझा॥ टेक॥ तुम अन्य को ज्ञान की बातें बताते हो, परन्तु तुम्हें स्वयं को सत्य दिखाई नहीं देता। जैसे मसालची सबको प्रकाश दिखाता है, परन्तु उसे स्वयं कुछ नहीं दिखता॥ 1॥ तुम दूसरों को बोध देते हो, परंतु तुम्हें अपने आप का पता नहीं है कि तुम कौन हो, क्या करते हो और क्या करना चाहिए। अतएव हे पंडित! पढ़ना-गुनना छोड़कर अपनी काया को शोधकर उसे शुद्ध करो॥ 2॥ तुम इन्द्रियों के गुलाम बने हो। उन्हें अपने वश में करो। तुम धन-मान पाने के लिए रात-दिन वक्तव्य झाड़ते हुए थकते हो। यह सब छोड़कर अपने मन को समझाकर उसे संयत करो॥ 3॥ तुम बुद्धि के तेज हो, चतुर हो, परंतु शकर और धूल एक में मिला रहे हो—सही निर्णय नहीं कर रहे हो। पलटू साहेब कहते हैं कि हे पंडित! मेरी बात को मान लो॥ 4॥

16. कर्म-भ्रम का जाल

शब्द-74

तिरथ में बहुत हम खोजा, उहाँ तो नाहिं कुछ पाया।
मूरति को पूजि पछिताने, नजर में नाहिं कुछ आया॥ 1॥
मुए हम बर्त के करते, बेद को सुना चित लाई।
जोग औ जुगति करि थाके, सजन की खबर नहिं पाई॥ 2॥
किया जप तप फेरि माला, खोजा षट दरस में जाई।
कोई ना भेद बतलावै, सबै सतसंग गुहराई॥ 3॥
परे जब संत के द्वारे, संत ने आप सब कीन्हा।
दास पलटू जभी पाया, गुरु के चरन चित लाया॥ 4॥

शब्दार्थ—वर्त= व्रत, उपवास। सजन= परमात्मा, प्रियतम॥

भावार्थ—मैं तीर्थों में बहुत खोजा, परंतु वहां कुछ नहीं मिला। मूर्तियों को पूजकर पीछे पश्चाताप हाथ लगा; क्योंकि उसमें कुछ लाभ नहीं दिखा॥ 1॥ मैं उपवास करते-करते दुर्बल हो गया, वेद-शास्त्रों को भी मन लगाकर सुना, और योग-युक्ति करके भी थक गया, परन्तु प्रियतम परमात्मा का पता नहीं लगा॥ 2॥ मैं जप किया, तप किया, माला फेरा और छह दर्शनों में खोजा, परन्तु कोई परमात्मा का रहस्य नहीं बता पाया। अपितु सब कहते हैं कि सत्संग से मिलता है॥ 3॥ पलटू साहेब कहते हैं कि मैं जब संतों के द्वार पर गया, तब उन्होंने मेरा सब काम कर दिया। जब मैंने गुरु के चरणों में मन लगाकर उनकी भक्ति की, तब उनसे अपने आप का बोध पा गया॥ 4॥

शब्द-75

वह दरबारा भारा साधो, हिन्दू मुसलमान से न्यारा॥टेक॥
मक्के रहे न ठाकुरद्वारा, है सब में सब खोजनहारा॥ 1॥
नहिं दरगाह न तीरथ संगा, गंगा नीर न तुलसी भंगा॥ 2॥
सालिगराम न महजिद कोई, उहाँ जनेव न सुन्नत होई॥ 3॥
पढ़ै निवाज न लावै पूजा, पंडित काजी बसै न दूजा॥ 4॥
फेरै न तसबी जपै न माला, ना मुरदा ना करै हलाला॥ 5॥
मारै न सुवर जिबहे ना गाई, कलमा भजन न राम खुदाई॥ 6॥
एकादसी न रोजा करई, डंडवत करै न सिरदा परई॥ 7॥
पलटू दास दुई की किस्ती, दोजख नर्क बैकुंठ न भिस्ती॥ 8॥

शब्दार्थ—दरगाह= किसी मुस्लिम संत का समाधि स्थान। संगा= संग, पत्थर। भंगा= भांग। निवाज= नमाज। तसबी= तस्बीह, सौ दाने की माला जिसे मुसलमान फेरते हैं। भिस्ती= बहिश्त, बैकुंठ, स्वर्ग।

भावार्थ—हे साधो! आत्मज्ञान का दरबार बड़ा है, और वह हिन्दू-मुसलमान आदि सांप्रदायिक सीमाओं से परे है॥ टेक॥ वह न मक्का में है न ठाकुरद्वारा में। जहां जाओ सभी जगहों में सत्य की खोज करने वाला मनुष्य ही मिलता है॥ 1॥ परमात्मा न दरगाह में मिलता है, न तीर्थ में, न पत्थर की पिंडी में, न गंगा के जल में, न तुलसीदल में और न भांग-धतूरा में॥ 2॥ वह न शालग्राम में मिलता है, न मस्जिद में। आत्मज्ञान के लिए जनेऊ और सुन्नत की आवश्यकता नहीं है॥ 3॥ उसके लिए न नमाज पढ़ने की आवश्यकता है, न पूजा करने की। उसके लिए पंडित और काजी दोनों की आवश्यकता नहीं

है॥ 4॥ उसके लिए न तस्बीह फेरने की जरूरत है, न माला पर जप करने की आवश्यकता है। उसके लिए न किसी जानवर को झटका से मारना है और न उसका गला रेतकर मारना है॥ 5॥ न उसके लिए सुअर मारना है और न गाय का ज़िबह करना है, न कलमा पढ़ना है और न राम और खुदा का नाम लेना है॥ 6॥ उसके लिए न एकादशी को उपवास रहना है और न तीस रोजा के दिन भूखा रहना है। न उसके लिए दंडवत करना है और न सिजदा करना है॥ 7॥ पलटू साहेब कहते हैं कि किसी संप्रदाय की नाव पर बैठकर दोज़ख और नरक पार नहीं करना है और न बैकुंठ तथा बहिश्त में पहुंचना है॥ 8॥

विशेष—काबा-काशी, मंदिर-मस्जिद जहां जाओ, मनुष्य मिलते हैं। मनुष्य सर्वोच्च है। उसे चाहिए कि साम्प्रदायिक भावनाओं से ऊपर उठकर किसी आत्मज्ञानी-आत्मलीन सद्गुरु की खोज करे और उनकी सेवा कर उनके सत्संग से अपने आप को समझे और मन के विकारों को मिटाकर आत्मशांति प्राप्त करे।

वैसे हिंसा-हत्या छोड़कर पूजा-नमाज आदि आरंभिक साधक के लिए ठीक है, किन्तु आत्मज्ञान-आत्मशोधन के बिना आत्मशांति नहीं मिलेगी।

दोहा

पलटू गुनना छोड़ि दे, चहै जो आतम सुक्ख।
संसय सोइ संसार है, जरा मरन को दुक्ख॥

शब्दार्थ—गुनना= संकल्प-विकल्प।

भावार्थ—पलटू साहेब कहते हैं कि यदि तुम आत्म-सुख चाहते हो, तो संकल्प-विकल्प करना एवं चित्त-दृश्य को छोड़ दो। मन का संशय ही संसार-सागर है, जो जरा-मरण रूपी दुख उत्पन्न करने वाला है।

17. जीवन की क्षण-भंगुरता

मंगल शब्द-76

मैं जानौं पिय मोर, पिया नहिं अपना हो।
छिन में कियेहु उजाड़, बसा पुर पटना हो॥ 1॥
कब दहुँ गयेहु है निकरि, नाहिं पहिचाना हो।
सब कोउ छेके ठाढ़, मरम नहिं जाना हो॥ 2॥

वैसिहि सकल सरीर, कछू नहिं बिगरा हो।
कवन सकस यह रहा, कवन बिधि निकरा हो॥ 3॥
दस दरवाजा सून, रूप नहिं रेखा हो।
उड़ि गये पंछी पवन, जात किन्ह देखा हो॥ 4॥
नित उठि मंगल होय, छतीसों रागा हो।
सो मंदिर भये सून, चुनन लागे कागा हो॥ 5॥
जनि कोइ करै गुमान, इहै गति होना हो।
पलटू दास हरि नाम, लेइ सो सोना हो॥ 6॥

शब्दार्थ—पिय= प्रियतम, मिले हुए जीव। सकस= शख़्स, व्यक्ति, जन।

भावार्थ—मैं समझता था कि प्रिय जन मेरे हैं, परंतु वे मेरे नहीं हैं। बसा हुआ शरीर रूपी गांव-बाजार क्षण में उजाड़कर चल दिये॥ 1॥ मैं समझ नहीं पाया कि मेरा प्रिय मित्र कब निकल गया। प्रेमी लोग तो उसे घेरकर खड़े थे। लेकिन कोई यह भेद नहीं जान पाया कि जीव किस द्वार से निकल गया॥ 2॥ सारा शरीर पूर्ववत ठीक-ठाक है। कुछ बिगड़ा नहीं है। वह कौन सत्ता रही और किस तरह शरीर से निकल गयी?॥ 3॥ दस दरवाजे का शरीर सूना हो गया। निकल जाने वाले की कोई रूप-रेखा नहीं दिखी। प्राण-पखेरू उड़ गये। उसे जाते किसने देखा?॥ 4॥ जिस भवन में नित प्रातः उठकर मंगलगान होता था और छत्तीसों राग का संगीत होता था, वह मंदिर सूना हो गया और वहां कौए चारा चुनने लगे॥ 5॥ पलटू साहेब कहते हैं कि कोई अभिमान तथा भ्रम में न रहे। यही दशा सब देहधारी की होनी है। हरिनाम लेना एवं आत्मबोध प्राप्त करना ही सोना-रत्न है॥ 6॥

मंगल शब्द-77

जनमिउँ दुख की राति, परिउँ भौसागर हो।
सोइ गइउँ भ्रम माहिं, कुमति कै आगर हो॥ 1॥
सतगुरु दिहिन्हि जगाइ, उठिउँ अकुलाई हो।
टूटि गइल भ्रम फंद, परम सुख पाई हो॥ 2॥
पिय को दिहिन्हि मिलाइ, हिये मोहि लीन्हा हो।
अपनी दासी जानि, परम पद दीन्हा हो॥ 3॥
सत्त सुकृति के घैला, प्रेम कै लेजुर हो।
पनियाँ भरौं डफोरि, माँग भरि सेंदुर हो॥ 4॥

सासु मोरि सुतै गज ओबरि, ननद मोरि अँगना हो।
हम धन सुतै धवराहर, पिय संग जगना हो॥ 5॥
झिरिहिरि बहै बयारि, अमी रस ढरकै हो।
वरमी नौरँगिया के डारि, चँदन गछ मरकै हो॥ 6॥
तेहि चढ़ि बोलै हंस, सबद सुनि बाउर हो।
मंगल पलटू दास, जगति कै नाउर हो॥ 7॥

शब्दार्थ—आगर= खान, ढेर, घर, खज़ाना।पिय= आत्मा। सत्त= आत्मा। सुकृति= पवित्र रहनी। घैला= घड़ा। लेजुर= रस्सी। डफोरि= झकझोरकर। गज ओबारि= हाथी निकल जाय ऐसे दरवाजा वाला स्थल। धन= धनि, दुलहिन। धवराहर= ऊपरी तल। वरमी= झुकी हुई। नौरंगिया= नारंगी का पेड़। मरकै= मरमराता है। नाउर= नाई।

भावार्थ—मनोवृत्ति कहती है कि मैं दुख की काली रात में जन्म लिया और मनोविकारों के भवसागर में पड़ गयी। मैं भ्रांतियों की नींद में बेभान होकर सो गयी और कुबुद्धि का खजाना हो गयी॥ 1॥ इतने में सद्गुरु मिल गये और उन्होंने मुझे आत्मज्ञान देकर जगा दिया। मैं निर्वेदपूर्वक व्याकुल होकर जाग उठी और मेरा दृश्य-मोह का भ्रम-फंदा टूट गया। मैं अखंड, अनंत स्थायी शांति पा गयी॥ 2॥ सद्गुरु ने उपदेश देकर मेरे प्रियतम आत्मा को मुझे मिला दिया और मेरे प्रियतम ने मुझे हृदय से लगा लिया। मेरे प्रियतम आत्मा ने मुझे अपनी दासी जानकर मुझे परम पद—अखंड शांति दिया॥ 3॥

आत्मज्ञान और पवित्र रहनी का घड़ा श्रद्धा की रस्सी में बांधकर अब मैं सत्संग के जलाशय से झकझोरकर ज्ञान का पानी भरती हूं। अब मेरे प्रियतम पति आत्मदेव मुझसे अभिन्न हो जाने से मैं सदा के लिए भाग्यवती अहिवाती हो गयी। इसलिए मांग भर सेंदुर सदा के लिए चढ़ गया॥ 4॥ मेरी संशय रूपी सासु संसार रूपी बड़े सभागार में सोती है और मोह रूपी ननद खुले आंगन में सो रही है—ये दोनों मुझसे अलग होकर मृत हो गयी हैं। और मैं प्रियतम आत्मा की दुलहिन अपने पति के साथ ऊंची अटारी पर सोती हूं, अपितु आत्मा से एकमेक होकर ज्ञान में जागती हूं॥ 5॥ यह मनोवृत्ति और आत्मा का प्रगाढ़ मिलन अनंत सुखसागर का दृश्य है। यहां आत्मिक आनन्द का मंद गति से झिर-झिर वायु बहता है और शांति का अमृत रस प्रवाहित होता है। पवित्र रहनी की नारंगी की शाखाएं झुक-झुककर तथा सद्गुण रूपी चंदन वृक्ष की शाखाएं विचार-पवन से हिल-हिलकर मरमराहट की आवाज

कर रही हैं॥ 6॥ उक्त नारंगी और चंदन-वृक्ष की शाखाओं पर विवेक रूपी हंस चढ़कर सब समय निर्णय के शब्द बोलता है। उसे सुनकर मैं आत्मलीनता की मस्ती में पागल बनी रहती हूं। जिससे अन्य कुछ सुहाता नहीं है। पलटू साहेब कहते हैं कि मैं इस आनन्द उत्सव में उसी प्रकार मंगल गीत गाता हूं जिस प्रकार नाई या भांट किसी लौकिक उत्सव में मंगल गीत गाते हैं॥ 7॥

विशेष—संत श्री पलटू साहेब अपनी बातें कहीं-कहीं अलंकारों के घटाटोप में कहते हैं। सार यह है कि जीव अनादिकाल से जड़ दृश्य के मोह में उलझा है। सद्गुरु के उपदेश से सुज्ञ जीव स्वरूपज्ञान पाकर जड़ दृश्य से पूर्ण उदास हो जाता है और अपने आप में पूर्ण संतुष्ट होकर कृतार्थ हो जाता है।

मंगल-शब्द-78

मातु पिता सुत बन्धु, कोऊ नहिं अपना हो।
छिन में होत परार, सकल जग सपना हो॥ 1॥
माया रूपी नारि, रहत संग लागी हो।
हंसा कीन्ह पयान, प्रेत कहि भागी हो॥ 2॥
धावन धाये लोग, बेगि रथ साजा हो।
करहिं अमंगलचार, कहाँ गये राजा हो॥ 4॥
लाइ दिह्यो मुख आगि, काठ बहु भारा हो।
पुत्र लिहे कर बाँस, सीस तकि मारा हो॥ 4॥
हैं बैरिन के मूल, तिन्हैं हित जाना हो।
पलटू दास गुरुज्ञान, बूझि अलगाना हो॥ 5॥

शब्दार्थ—परार= पराया। हंसा= जीव। प्रेत= मरा हुआ, मृत। बैरिन= शत्रुओं।

भावार्थ—माता, पिता, पुत्र तथा बंधु-बांधव कोई अपना नहीं है। सारे साथी क्षण में पराये हो जाते हैं। सारा संसार स्वप्न है॥ 1॥ विषयासक्ति रूपी माया-नारि जीव के साथ लगी है और उसी के भुलावन में जीवन बीत जाता है। अन्त में जीव शरीर छोड़कर चल देता है। उसे संगी-मित्र मृत कहकर डरवश भाग खड़े होते हैं। मृत के पास अकेला रहना कठिन हो जाता है॥ 2॥ लोग दौड़ पड़े, लकड़ी की अर्थी सजाने लगे। प्रेमी-मित्र इस अमंगल में रीति के अनुसार व्यवहार करने लगे और विलाप कर कहने लगे

मेरा राजा कहां गया॥ 3॥ लकड़ी की चिता बनाकर उस पर उसे लिटा दिया और ऊपर से भी लकड़ी का भार लाद दिया तथा उसमें आग लगा दी गयी। पुत्र हाथ में बांस लेकर मृतक के सिर को देखकर उस पर मारने लगा॥ 4॥ विषयासक्ति एवं मोहमाया शत्रुओं की जड़ है। इसी से सारे मनोविकार शत्रु पैदा होते हैं, परन्तु मनुष्य ने इसे ही भूलवश अपना हितकारी माना है। पलटू साहेब कहते हैं कि मैं सद्गुरु से आत्मज्ञान समझकर माया-मोह से अलग हो गया हूं॥ 5॥

18. आत्मस्थिति की मस्तानगी

शब्द-79

साधो देखि परो क्या गाई, तत्त में तत्त समाई॥टेक॥
कसर रहै तौ कुन्दन नाहीं, खरा भये क्या खोलै।
बकुला सेती हंस भयो है, पाछिल बोल न बोलै॥ 1॥
बिष परपंच मिटा भा इस्थिर, मनि गन अजगर सोई।
जौं लगि छाछ रहै घिव माहीं, तौं लगि चुप ना होई॥ 2॥
जौं लगि तोई डोलै बोलै, तौं लगि माया माहीं।
मगन भये पर अब क्या बोलै, हरि हैं अब हम नाहीं॥ 3॥
भूख पियास एकौ नहिं लागै, छुटि गई दुचिताई।
पलटू दास जो ऐसा जोगी, बोलै कौन बड़ाई॥ 4॥

शब्दार्थ—कुन्दन= सोना। तोई= जल। मगन= मग्न, आत्मलीन। हरि= ब्रह्म। हम= अहंकार।

भावार्थ—हे साधो ! जब आत्मसाक्षात्कार हो गया, तब उसको दूसरों से क्या बताते फिरना। वह तो ऐसी अवस्था है कि आत्मा अपने आप में लीन हो गया॥ टेक॥ जब तक कसर है तब तक सोना नहीं है। यदि खरा सोना हो गया तो क्या बोलना ! अर्थात जब तक असंतोष है तब तक सच्ची दशा नहीं है और जब सच्ची दशा आ गयी, तब विवाद कहां? जब बकुला से हंस हो गया, तब पिछली दशा की तरह राग-द्वेष की बात नहीं करता॥ 1॥ जिसके मन के भीतर का विषय-प्रपंच नष्ट हो गया, वह अपने आप में स्थिर हो गया। वही ज्ञान-मणियों से संपन्न अजगरवृत्ति वाला स्थिर संत है। मक्खन को तपाकर घी बनाते समय जब तक उसमें छाछ रहता है, तब तक वह चुप

न होकर कलकलाता रहता है। इसी प्रकार साधना में चलते समय जब तक विवादप्रियता है तब तक परिपक्वता नहीं है॥ 2॥ जब तक मन में राग-द्वेष की लहरें डोलती बोलती हैं, तब तक साधक माया में ही डूबा है। जब राग-द्वेष त्यागकर आत्मलीन हो गया तब वह क्या विवाद करेगा? उस दशा में तो अहंकार मिट जाता है, इसलिए वह ब्रह्म हो जाता है, महान हो जाता है॥ 3॥ इस दशा में सांसारिक भोग और स्वामित्व की भूख प्यास एवं आशा-तृष्णा नहीं रह जाती। इस दशा में मन दुविधा में नहीं रहता कि वह संसार की मिथ्या चमक-दमक में भी ललचाये। वह तो एकनिष्ठ आत्मलीन होता है। पलटू साहेब कहते हैं कि जो ऐसा योगी है, यदि वह विवाद करे तो उसकी क्या बड़ाई होगी। वह तो आत्मप्रदर्शन से रहित आत्मलीन होता है॥ 4॥

19. श्री पलटू साहेब का वैराग्य

शब्द-80

समुझि देखु मन मानी, पलटू निरगुन बनियाँ॥टेक॥
चारि बेद कै टाट बिछावत, तेहि चढ़ि करत दुकनियाँ॥ 1॥
सत्य सेर मन प्रेम तराजू, नाम के मारत टेनियाँ॥ 2॥
सुरति सबद कै बैल लदाइनि, ज्ञान के गोंनि लदनियाँ॥ 3॥
सहर जलालपुर मूँड़ मुड़ाइनि, अवध तोरिनि करधनियाँ॥ 4॥
पलटू दास सतगुरु बलिहारी, पाइनि भक्ति अमनियाँ॥ 5॥

शब्दार्थ—टेनियां= टेनी, छोटी अंगुली। मारत टेनियां= टेनी मारना, माल कम चढ़ने के लिए तराजू की डांड़ी को उंगली से दबा देना, कम तौलना। गोनि= टाट का थैला। अमनियां= अमन, चैन, शांति।

भावार्थ—देखो, गुणातीत आत्मा को समझा और मन उसे माना। पलटू बनिया निर्गुण शैली का साधक है॥ टेक॥ वह चारों वेदों का टाट बिछाकर और उस पर चढ़कर दुकान करता है॥ 1॥ सत्य का सेर और मन का बाट है, प्रेम का तराजू है और सतनाम का टेनी मारता है॥ 2॥ निर्णय शब्दों में मन की लगन रूपी बैल पर आत्मज्ञान की गोनी लदाता है॥ 3॥ जलालपुर शहर में उसने मूड़ मुड़ाया और अयोध्या नगरी में करधन तोड़ी॥ 4॥ पलटू साहेब कहते हैं कि मैं सद्गुरु को न्योछावर हूं। उन्हीं की कृपा से भक्ति और शांति मिली॥ 5॥

20. वैराग्य तथा स्वरूपस्थिति की मस्ती

शब्द-81

चाहौ मुक्ति जो हरि को सुमिरौ, हम तो हरि बिसराया हो॥टेक॥
सुमिरत नाम बहुत दिन बीते, नाहक जनम गँवाया हो।
मुक्ति बिचारी करै खवासी, पिय कौ हम अपनाया हो॥ 1॥
साहिब मेरा मुझको सुमिरे, मैं ना सीस नवावौं हो।
बैठा रहौं सौक में अपने, केकर दास कहावौं हो॥ 2॥
बूझी बात खुला अब परदा, क्योंकर साच छिपावौं हो।
जैसन देखौं तैसन भाखौं, मैं ना झूठ कहावौं हो॥ 3॥
संका नाहिं करौं काहू की, हमसे बड़ कोउ नाहीं हो।
पलटू दास कवन है दूजा, हमही हैं सब माहीं हो॥ 4॥

शब्दार्थ—खवासी= सेवकाई, सेवा। सौक= प्रसन्नता, उमंग।

भावार्थ—यदि मुक्ति चाहते हो तो हरि का स्मरण करो। हमने तो हरि को भुला दिया है॥ टेक॥ नाम जपते बहुत दिन बीत गये हैं और उससे कोई आध्यात्मिक लाभ नहीं हुआ। व्यर्थ में जीवन खो दिया। मैंने जब से प्रियतम आत्मा में स्थिति पा ली, तब से बेचारी मुक्ति मेरी सेवा में लगी रहती है॥ 1॥ मेरा साहेब निरंतर मेरा स्मरण करता है। मैं उसको सिर नहीं झुकाता हूं। मैं निरंतर अपनी आत्मस्थिति के आनन्द में बैठा हूं। मैं अन्य किसका दास कहला सकता हूं?॥ 2 आत्मा की बात समझ ली और अविद्या का परदा हट गया। अब उस सच को क्यों छिपाकर रखूं॥ 3॥ अब मुझे किसी बात की शंका नहीं है। मेरे आत्म-अस्तित्व से बड़ा कोई और कुछ नहीं है। पलटू साहेब कहते हैं कि आत्मा के अलावा उसके ऊपर कौन दूसरा स्वामी है। जो सब प्राणियों में आत्म-ज्योति जल रही है, वह मेरी ही सजाति है॥ 4॥

विशेष—कहने में द्वैत लगता है, किन्तु तथ्यतः अपना अस्तित्व अद्वैत है। अद्वैत का अर्थ है अन्य से रहित अकेला, निराधार, असंग, केवल, शेष, बक़ा।

शब्द-82

निंदरिया मोरी बैरिन भई॥ टेक॥
की कोइ जागै जोगी भोगी, की राजा की चोर।
की कोइ जागै संत बिबेकी, लगन राम की ओर॥ 1॥

जागे से परलोक बनतु है, सोये बड़ दुख होय।
सतगुरु लीन्हे जो जन जागै, करतम करता होय॥ 2॥
स्वारथ लीन्हे सब जग जागै, परमारथ जगै न कोय।
परमारथ को जो जन जागै, भजन बन्दगी होय॥ 3॥
काम क्रोध लीन्हे जो जागै, गये जिन्दगी खोय।
ज्ञान खरग लिहे पलटू जागै, होनी होय सो होय॥ 4॥

शब्दार्थ—निंदरिया= नींद, असावाधनी, माया-मोह में डूब जाना। खरग= खड्ग, तलवार।

भावार्थ—माया-मोह की नींद मेरी शत्रुणी हो गयी॥ टेक॥ योगी जागता है; भोगी, राजा और चोर भी जागते हैं अथवा वे कोई संत विवेकी जागते हैं जिनकी लगन अंतरात्मा से हो जाती है॥ 1॥ मोह-माया से सावधान होकर उससे हटने से शाश्वत शांति मिलती है और मोह-माया में डूबने से बड़ा दुख होता है। सद्गुरु से आत्मबोध पाकर जो जागता है, वह कृत्रिम से कर्ता हो जाता है—अबोध में जो स्वयं को कठपुतली समझता था, आत्मबोध हो जाने पर वह समझ लेता है कि मैं अपने कर्मों का कर्ता-विधाता हूं॥ 2॥ भोग-स्वार्थ के लिए तो सारा संसार जागरूक है, पर-सेवा और आत्मा के कल्याण के लिए बहुत कम लाग जागरूक होते हैं। जो लोग अपने आत्मा का उद्धार करते हैं और दूसरों की सेवा करते हैं उन्हीं की भजन-बंदगी सच्ची है॥ 3॥ जो लोग काम-क्रोधादि में पड़े उन्हीं में बढ़े-चढ़े हैं, उनका जीवन नष्ट हो जाता है। पलटू साहेब कहते हैं कि मैं आत्मज्ञान की तलवार लेकर सावधान हूं। इसका परिणाम माया पर विजय और आत्मशांति निश्चित है॥ 4॥

शब्द-83

जो कोइ राखै कदम फकीरी, कफनी खुसी की डारै हो॥टेक॥
सादी गमी एक करि जानै, झूठ कभी ना भाखै हो।
दुसमन दोस्त एक है दोऊ, इन्हें एक घर राखै हो॥ 1॥
दावा दुई दूरि होइ जावै, सो दुरवेस कहावै हो।
हेलुवा घूसा कोऊ चढ़ावै, हँसि हँसि दोऊ खावै हो॥ 2॥
सीस दिहा तब अब क्या रोना, मनी मान को खोवै हो।
दम दम याद करै साहिब को, नेकी दस्त में बोवै हो॥ 3॥

दहसति नाहिं करै किसहू को, जिकिर अपानी खोलै हो।
पलटू रोसन इहै कमाली, तनहा होइ जब डोलै हो॥ 4॥

शब्दार्थ—सादी= शादी, खुशी, उत्सव। गमी= ग़मी, शोक का समय। दावा दुई= द्वैत एवं अनात्मा पर अधिकार। दुरवेस= दरवेश, फकीर, संत। घूसा= घूंसा, मुट्ठी का प्रहार, चोट। साहिब= सद्गुरु। दस्त= हाथ। दहसति = दहशत, भय। जिकिर= जिक्र, चर्चा, निर्णय। रोसन= रोशन, प्रकाशित। कमाली= पूर्णता। तनहा= अकेला।

भावार्थ—यदि कोई फकीरी के रास्ते पर कदम रखे तो वह प्रसन्नता की कफनी अपने ऊपर डाल ले—हर हालत में प्रसन्न रहे॥ टेक॥ हर्ष और शोक वाली घटनाओं को समान समझे। असत्य कभी न बोले। शत्रु और मित्र में समान दृष्टि रखे। अपने हृदय में इन दोनों के प्रति हितकामना रखे॥ 1॥ द्वैत पर-अनात्म वस्तुओं पर अपना अधिकार जमाने का संकल्प छोड़ दे। ऐसा करनेवाला ही सच्चा दरवेश एवं फकीर हैं। कोई हलुआ दे और कोई घूंसा मारे, दोनों को हंस-हंस कर स्वीकार करेगा॥ 2॥ जब फकीरी में कूद पड़ा, अपना सिर दे दिया तब किस बात के लिए रोना रहा? अपने मन के अहंकार को खो दे। प्रति श्वास अपने सद्गुरु के उपदेश की याद करे और अपने हाथ से भलाई के बीज बोवे॥ 3॥ किसी का भय न करे, आत्मज्ञान की चर्चा देश, काल तथा पात्र देखकर करता रहे। पलटू साहेब कहते हैं कि फकीरी का यही पूर्ण प्रकाशित स्वरूप है। सब समय अपने को अकेला समझकर असंग भाव, केवल दशा में जीवन व्यतीत करे॥ 4॥

शब्द-84

भेद भरी तन कै सुधि नाहीं, ऐसी हाल हमारी हो॥टेक॥
पुरुष अलख लखि मन मतवाला, झुकि झुकि उठत सम्हारी हो॥ 1॥
घायल भये नाद के लागे, मरमा है सबद कटारी हो॥ 2॥
टकटक ताकि रही ठगमूरी, आपा आप बिसारी हो॥ 3॥
सिथिल भई मुख बचन न आवै, लागि गगन बिच तारी हो॥ 4॥
सखि पलटू अलमस्त दिवानी, गोबिंदनन्द दुलारी हो॥ 5॥

शब्दार्थ—भेद= रहस्य, मर्म, आत्मलीनता। नाद= शब्द, आत्मज्ञानपरक उपदेश। मरमा= मर्म वाली। ठगमूरी= ठगमारी, स्तंभित। गोबिंदनन्द= गोविन्द साहेब, पलटू साहेब के सद्गुरु।

भावार्थ—आत्मस्थिति की लवलीनता से मुझे शरीर की सुधि नहीं है। मेरी ऐसी दशा है॥ टेक॥ जड़ दृश्य-पार चेतन आत्मा का बोध पाकर मेरा मन उसी में डूबकर मस्त हो गया है। शरीर झुक-झुक जाता है। अपने को सम्हाल कर उठता हूं॥ 1॥ सद्गुरु के आत्मज्ञानपरक उपदेश मन में लग जाने से मैं आहत हो गया हूं। सद्गुरु की ज्ञानपरक शब्द-कटारी मर्मभेदी है॥ 2॥ मैं देहाभिमान को भूलकर स्तंभित हो एकटक देखता रहता हूं कि संसार कैसा सारहीन है॥ 3॥ मैं सब प्रकार से शांत हो गया हूं। मुख से बात नहीं आती है। मेरी प्रपंच-शून्यता की समाधि लगी है॥ 4॥ पलटू सखी अलमस्त दीवानी है, क्योंकि वह सद्गुरु गोविन्द साहेब की दुलारी पुत्री है॥ 5॥

विशेष—पलटू साहेब कोमलता प्रदर्शन में अपने लिए स्त्रीलिंग शब्द का प्रयोग करते हैं। यह उनकी भावुकता है।

शब्द-85

देखो इक बनियाँ बौराना, ज्ञान की करै दुकाना॥टेक॥
बेचै अमृत विष सम लागै, गाहक कोऊ न आवै।
खारी माँगै खाँड़ दिखावै, आपुहि से बगदावै॥ 1॥
देइ उधार बिना वादे पर, सबसे पूछै लेवो।
जो लेवै सो खुस होइ जावै, कबहुँ न कहै कि देवो॥ 2॥
छिमा तराजू पुरा बाट लै, सबसे मीठी बोलै।
नाम रतन की ढेरा लागी, बिना दाम वह तोलै॥ 3॥
कुंजी सुरत सबद का ताला, जोग जुगति से खोलै।
पलटू दास सत्त का सौदा, आठ पहर ना डोलै॥ 4॥

शब्दार्थ—बगदावै= बिगाड़े; लौटावे। वादे= शर्त। पुरा= पूरा।

भावार्थ—देखो, एक बनिया पागल हो गया है। वह आत्मज्ञान की दुकान करता है॥ टेक॥ वह आत्मज्ञान रूप अमृत बेचता है, परन्तु वह लोगों को विष की तरह लगता है। आत्मज्ञान का ग्राहक नहीं आता। लोग पुत्र, धन, पद, ऋद्धि-सिद्धि रूपी नमक मांगते हैं, किन्तु वह बनिया आत्मज्ञान रूपी खांड़ दिखाकर मानो स्वयं ग्राहकों को अपनी दुकान से लौटा देता है॥ 1॥ बनिया बिना शर्त के अपना माल उधार पर

देता है और लोगों को पुकार-पुकार कर पूछता है—क्या आत्मज्ञान लोगे? यदि कोई आत्मज्ञान का सौदा लेता है तो वह आनन्दमग्न हो जाता है। बनिया उससे कभी नहीं कहता है कि आत्मज्ञान सौदा के बदले में मुझे कुछ दो॥ 2॥ बनिया क्षमा की तराजू पर सत्य का बाट रखकर अपना माल तौलता है और सबसे मीठा बोलता है। सतनाम रूपी रत्न की राशि लगी है। वह बिना दाम लिये उदारतापूर्वक तौलता रहता है॥ 3॥ वह मनोवृत्ति की कुंजी से शब्द के ताले को योग-युक्ति से खोलता है। पलटू साहेब कहते हैं कि वह बनिया सदैव सत्य का सौदा बेचता है और चौबीसों घंटे अपनी दुकान से नहीं हटता है॥ 4॥

विशेष—यह बनिया स्वयं पलटू साहेब ही हैं जो सद्गुरु हैं और आत्मज्ञान का खरा सौदा देते हैं। इस पद में बनिया शब्द का अर्थ सद्गुरु है।

शब्द-86

हमको क्या जरूर वे, साहिब हाल हजूर वे॥टेक॥
गैब तख्त बादसाह भया दिल, बजै अनाहद तूर वे॥ 1॥
ना जानौं दहुँ कौन पिलावै, अरस पियाला नूर वे॥ 2॥
छिन छिन पल पल कल न परतु है, रोम रोम भरिपूर वे॥ 3॥
जगमग जोति छत्र सिर ऊपर, ऐसा अजब जहूर वे॥ 4॥
पलटू दास आस अब किसकी, दुरमति भागी दूर वे॥ 5॥

शब्दार्थ—साहिब= स्वामी। हाल हजूर= वर्तमान में उपस्थित। गैब= अदृश्य। तूर= एक बाजा, तुरही। अरस= अर्श, मुसलमानों द्वारा माना गया सबसे ऊंचा आठवां स्वर्ग। नूर= प्रकाश। जहूर= प्रकट प्रकाश।

भावार्थ—आत्मा परमात्मा है जो सब समय स्वतः रूप में विद्यमान है। इस बोध के बाद मुझे अन्य क्या आवश्यकता है?॥ टेक॥ अदृश्य आत्मतत्त्व मेरी स्थिति का आसन है। अब मेरा मन बादशाह हो गया है। अब सब समय आत्मानुभव रूपी अनाहतनाद का बाजा बज रहा है॥ 1॥ मैं नहीं समझता कि उच्चतम ज्योतित स्वर्ग का प्याला कौन पिला रहा है—निष्काम बोधवान को आत्मशांति का सुख स्वतः होता है॥ 2॥ क्षण-क्षण, पल-पल आत्मसुख का प्याला पीता हूं। अब उसके बिना चैन नहीं है। आत्मशांति से रोम-रोम भरपूर आनन्दमग्न है॥ 3॥ सिर के ऊपर जगमग ज्योति का छत्र है जो अद्भुत प्रकट प्रकाश है—आत्मज्ञानी के मन-मस्तिष्क सब समय आत्मज्ञान से

ज्योतित रहते हैं॥ 3॥ पलटू साहेब कहते हैं कि अब किसकी आशा-तृष्णा शेष है? भोग और सम्मान पाने की दुर्बुद्धि दूर हो गयी है॥ 5॥

21. माया का पर्दाफाश

शब्द-87

माया तू जगत पियारी वे, हमरे काम की नाहीं।
द्वारे से दूर हो लंडी रे, पइठु न घर के माहीं॥ 1॥
माया आपु खड़ी भइ आगे, नैनन काजर लाये।
नाचै गावै भाव बतावै, मोतिन माँग भराये॥ 2॥
रोवै माया खाय पछारा, तनिक न गाफिल पाऊँ।
जब देखौ तब ज्ञान ध्यान में, कैसे मारि गिराऊँ॥ 3॥
ऋद्धि सिद्धि दोउ कनक समाजी, बिस्नु डिगन को भेजा।
तीन लोक में अमल तुम्हारा, यह घर लगै न तेजा॥ 4॥
तू क्या माया मोहिं नचावै, मैं हौं बड़ा नचनियाँ।
इहवाँ बानिक लगै न तेरी, मैं हौं पलटू बनियाँ॥ 5॥

शब्दार्थ—लंडी= कुलटा, व्यभिचारिणी। डिगन= गिरना। अमल= अधिकार। तेजा= शक्ति, जोर। बानिक= दावं, छल-बल।

भावार्थ—हे माया! तू जगत के लोगों के लिए बहुत प्यारी है; परन्तु मेरे काम की नहीं है। हे कुलटा! तू मेरे दरवाजे से दूर भाग जा। मेरे घर में घुसना नहीं॥ 2॥ माया स्वयं नेत्रों में काजल लगाकर और मोतियों से मांग भराकर आगे खड़ी हो गयी और नाचने-गाने तथा वासना-उत्तेजक भाव बताने लगी॥ 2॥ माया रोती है, थककर पछाड़ खाकर गिर पड़ती है और कहती है कि मैं क्या करूं, इसे कभी थोड़ा भी असावधान नहीं पाती हूं। मैं इसे जब देखती हूं तब यह ज्ञानचर्चा या ध्यान में रहता है। इसे कैसे मारकर गिरा दूं?॥ 2॥ विष्णु ने ऋद्धि-सिद्धि को भेजा, जो स्वर्णिम साज-सज्जा युक्त हैं कि जाओ, पलटू को माया-मोह में विचलित कर दो। किन्तु पलटू ने उनसे कहा कि तीनों लोकों में तुम्हारा अधिकार है, किन्तु मेरे हृदय-घर में तुम्हारा बल नहीं लगेगा॥ 4॥ पलटू साहेब कहते हैं कि हे माया! तू मुझे क्या नचायेगी? मैं स्वयं बड़ा नचनियां हूं—मैं वैराग्य-साधना में नाचता

हूं। खबरदार ! यहां तेरा छलकपट का दावं नहीं लगेगा। मैं पलटू बनिया हूं॥ 5॥

शब्द-88

संतो बिस्नु उठे रिसियाय, माया किन्ह जीतिया॥टेक॥
माया को लिया बुलाय, गोद लै पूछन लागे।
तीन लोक की बात, प्रगट करु मोरे आगे॥ 1॥
माया रोवन लागि, खोल कर मूँड़ दिखावै।
दै जूतिन की मार, मोहि बनिया दुरियावै॥ 2॥
दिहा इन्द्र को त्रास, अपसरा तुरत पठाओ।
नाना रूप बनाय, जाइ के तुरत डिगाओ॥ 3॥
उतरी अपसरा आय, अवधपुर जहँवाँ बनियाँ।
सोरहो किये सिंगार, चंद्रमुख मधुर बचनियाँ॥ 4॥
छुद्रघंटिका पायल, बाजै रतन जड़ाऊँ।
ऋतु बसंत की आनी, मोतिन से माँग भराऊँ॥ 5॥
नाचै गावै राग, भाव धै बाँह बतावै।
बनियाँ लाय समाधि, डिगै ना लाख डिगावै॥ 6॥
क्या तुम भये फकीर, नारि तुम सुन्दर बिलसौ।
सोना रूपा लेहु, माया को जनि तुम तरसौ॥ 7॥
इन्द्र लोक तुम लेहु, होहु बैकुंठ के राजा।
ताको हमरी ओर, तुम्हैं हम बहुत निवाजा॥ 8॥
ऋद्धि सिद्धि तुम लेहु, मुक्ति तुम लेहु अघाई।
तीन लोक में फिरै तुही, ना आन दुहाई॥ 9॥
हम सब दाबहिं गोड़, फूलन की सेज बिछाई।
मानौ बचन हमार, तुम्हैं है राम दुहाई॥10॥
बनियाँ हँसा ठठाइ, पलक को नाहिं उघारी।
तुहरे बहुत भतार, रहिउ ना तुही कुआरी॥11॥
आगि लगै बैकुंठ, लौंड़ी है मुक्ति हमारी।
इहाँ से होहु तू दूरि, माया तू भई अनारी॥12॥
हम जोगी बेकाम, खसम तुम खोजो मोटा।
ब्रह्मा बिस्नु महेस, तुम्हारे लायक ढोटा॥13॥
हमरे सबद बिबेक, लगहि चूतर में सोंटा।
आबरूह लै भागु, पकरि कै कटिहौं झोंटा॥14॥

चली अपसरा हारि, जाय बैकुंठ में भागी।
ब्रह्मा बिस्नु महेस की, रहै कचहरी लागी॥15॥
अपसरा कहै पुकार, सुनो सत बचन हमारा।
बनियाँ डिगै को नहिं, उहाँ ना अमल तुम्हारा॥16॥
अपना चाहौ भला, जाइ कै लावहु सेवा।
उलटि देइ बैकुंठ, बचै ना सुर मुनि देवा॥17॥
पलटू दास अपार, पार ना पावै कोई।
करै अपसरा सोर, देवतौ उत्रिन होई॥18॥

शब्दार्थ—रिसियाय= क्रुद्ध, क्रोध के आवेग में। त्रास= भय, धमकी। छुद्रघंटिका= क्षुद्र घंटिका, एक प्रकार की करधनी जिसमें घटियां या घुंघरू लगे रहते हैं। पायल= पैर में पहनने का एक घुंघुरूदार आभूषण, पाजेब, नुपूर। निवाजा= कृपा किया। गोड़= पैर। भतार= पति। लौंड़ी= दासी। ढोटा = बालक। चूतर= चूतड़। आबरूह= आबरू, इज्जत, प्रतिष्ठा। अमल= अधिकार। उत्रिन= उऋण, ऋणमुक्त, कर्तव्यमुक्त।

भावार्थ—(जब माया ने कहा कि पलटू बनिया मेरे अधीन नहीं हो रहा है, तब) हे संतो ! विष्णु क्रोध में भभक उठे और उन्होंने कहा—माया को किसने जीत लिया है? ॥ टेक॥ उन्होंने माया को लाकर अपनी गोद में बैठा लिया और उससे पूछने लगे कि तू तीनों लोकों की बात मेरे सामने प्रकट कर॥ 1॥ माया रोने लगी और वह अपना सिर खोलकर दिखाने लगी और कहने लगी कि देखो, पलटू बनिया ने मेरे सिर में जूते की मार देकर मुझे खदेड़ दिया है॥ 2॥ इतना सुनकर विष्णु ने इन्द्र को बुलाया और उन्हें धमकाया और कहा कि तुरन्त अप्सरा को पलटू के पास भेजो। वह उन्हें साधना से विचलित कर दे॥ 3॥ इन्द्र की आज्ञा पाकर अप्सरा अयोध्या में उतर आयी और जहां पलटू बनिया थे वहां पहुंच गयी। अप्सरा ने सोलहों शृंगार कर रखा था। उसका मुख चन्द्रमा के समान सुन्दर था और उसके वचन लुभावने मीठे थे॥ 4॥ उसकी कमर में घूंघरूदार करधनी थी, पैरों में झुनझुनीदार नुपूर थे। वे सब रत्नजटित थे और बज रहे थे। उसने अपनी रूप शोभा से वसंत ऋतु की बहार ला दिया। उसने मोतियों से मांग भर रखा था॥ 5॥ वह पलटू के सामने नाचती थी, गाती थी, हाथों से भाव बताती थी। परंतु पलटू बनिया ने तो चित्त समेटकर समाधि लगा रखी थी। लाख डिगाने पर भी वह डिगने वाला नहीं था॥ 6॥

अप्सरा ने पलटू बनिया से कहा—तुम क्या फकीर बन बैठे हो? तुम सुन्दरी नारियों के साथ विलास करो। तुम मुझसे सोने-चांदी के खजाना लो। माया के लिए तुम मत तरसो॥ 7॥ तुम इन्द्रलोक ले लो और स्वर्ग के राजा बन जाओ। तुम मेरी ओर देखो। मैंने तुम्हारे ऊपर बड़ी कृपा की है, तब मैं तुम्हारे पास आयी हूं॥ 8॥ तुम मुझसे ऋद्धि-सिद्धि लो और पूरी मुक्ति भी लो। तीनों लोक में केवल तुम्हारी जय-जयकार होगी, अन्य की कोई पूछताछ नहीं रहेगी॥ 9॥ हम अप्सराएं नित्य तुम्हारे अंगों की सेवा करेंगी, तुम्हारे लिए फूलों की शय्या बिछायेंगी। राम की शपथ खाकर कहती हूं, मेरी बात मान लो॥ 10॥

पलटू बनिया आंखें बिना खोले जोर से हंस पड़ा और कहा—तुम्हारे बहुत भर्तार हैं। तुम कुंआरी नहीं हो॥ 11॥ तुम्हारे बैकुंठ को आग लगे और मुक्ति तो मेरी दासी है॥ हे माया! तू मूढ़ हो गयी है, जो मुझसे छेड़खानी करती है। यहां से हट और दूर हो जा॥ 12॥ मैं योगी हूं, तुम्हारे लिए निरर्थक हूं। तुम कहीं बड़ा भर्तार खोजो। तुम्हारे योग्य तो ब्रह्मा, विष्णु, महादेव जैसे रंगीले लड़के उपयुक्त हैं॥ 13॥ मेरे पास शब्दों का विवेक है। तुम्हारे चूतड़ पर मोटी लाठी पड़ेगी। तू अपनी मर्यादा बचाकर भाग जा, अन्यथा तुम्हें पकड़कर तुम्हारा झोंटा काट लूंगा॥ 14॥

अप्सरा पलटू बनिया से हारकर भागी और बैकुंठ जा पहुंची। वहां ब्रह्मा, विष्णु व महादेव आदि की कचहरी लगी थी॥ 15॥ अप्सरा ने जोर से कहा—हे पंच साहेबो! मेरी बात सुनो। पलटू बनिया माया के प्रलोभन से डिगने वाला नहीं है। उसके ऊपर आप लोगों का कोई अधिकार नहीं है॥ 16॥ इसलिए यदि आप लोग अपना कल्याण चाहते हो तो अयोध्या जाकर पलटू बनिया की सेवा करो। अन्यथा वह तुम्हारे बैकुंठ को उलट देगा और देवता, मुनि सब नष्ट हो जायेंगे। कोई जीवित नहीं बचेगा॥ 17॥ पलटू बनिया अपार अजेय है। उसके ऊपर किसी का वश नहीं चल सकता। ऐसा कहकर अप्सरा हल्ला मचाने लगी। ब्रह्मादि देवता भी अपने हाथ-पैर पटककर कर्तव्य-मुक्त हो गये॥ 18॥

विशेष—पुराणों और महाकाव्यों में ऐसी गाथाएं हैं। उसी के अनुसार पलटू साहेब ने अपनी माया-विजय पर कल्पना उतार दी है। पलटू साहेब कवि-हृदय थे। वे जो कहना चाहते थे काव्य में उतार देते थे। न कहीं जानदार माया है, न अप्सरा है, न बैकुंठ है, न ब्रह्मा, विष्णु, शंकर एवं इन्द्र हैं। यह सब केवल शब्दों का बावेला है। बात इतनी ही है कि कल्याण चाहने

वाले को मोह-माया से दूर रहना चाहिए। पलटू साहेब का उक्त कथन उनकी गर्वोक्ति नहीं है, किन्तु साधिकारोक्ति है। माया से मुक्त पुरुष ही ऐसा अधिकारपूर्वक कह सकते हैं।

शब्द-89

माया भूत भुताना साधो, आलम सब अभुवाता है॥टेक॥
बूढ़ा बारा सब अभुवाता, काहू के सुधि नाहीं है।
घर घर फिरी दुहाई उसकी, सब के घट में वाही है॥ 1॥
राजा परजा सब के लागा, सब कोऊ बौराना है।
इसके मारे सब जग मरिगा, बुढ़वा भूत सयाना है॥ 2॥
जोरू बेटा मुलुक खजाना, उस ही की सब छाया है।
दुइ दल होइ के हाकिम लड़ता, बकता माया माया है॥ 3॥
मार के आगे भूत भी नाचै, हादी ने जब दागा है।
ऐसे भूत को कौन छुड़ावै, हादी के भी लागा है॥ 4॥
पलटु दास यह भूत पुराना, तीनि लोक में जागा है।
हमरे है सतगुरु कै सोंटा, लै के दौरे भागा है॥ 5॥

शब्दार्थ—भुताना= भूत से ग्रस्त। आलम= संसार, जनसमूह। दुहाई= मुनादी, घोषणा। हादी= हिदायत करने वाला, मार्गदर्शक, उपदेष्टा ज्ञानी, मुखिया, नेता।

भावार्थ—हे साधो ! माया रूपी भूत से ग्रस्त होकर सभी मनुष्य हाथ-पैर पटककर अभुवा रहे हैं॥ *टेक*॥ बालक से लेकर बूढ़े तक सिर पटक-पटककर अभुवा रहे हैं। किसी को अपने आप में सावधानी नहीं है। घर-घर में माया-भूत की घोषणा है कि मेरा सब पर अधिकार है। सबके मन में माया-भूत बसा है॥ 1॥ राजा-प्रजा सबको माया-भूत लगा है, इसलिए सब पागल बने भटकते हैं। माया-भूत की मार से सारा संसार मृत है—सब मनुष्य अचेत हैं। यह माया-भूत पुरातन और बलवान है॥ 2॥ पत्नी, पुत्र, राज्य और खजाना सब माया-भूत की छाया है। शासक दो दलों में विभक्त होकर आपस में लड़ते हैं और कहते हैं कि दुनिया की माया मेरी है, मेरी है॥ 3॥ परन्तु जब मार पड़ती है तब भूत भी भागता है। जब ज्ञानी ने ज्ञान का गोला दागा तब माया-भूत भाग खड़ा हुआ। ऐसे प्रबल माया-भूत से जीव को कौन छुड़ावे, क्योंकि यह माया-भूत ज्ञानोपदेष्टा को भी लगा है॥ 4॥ पलटू साहेब कहते हैं कि यह माया-भूत पुरातन है। यह पूरे संसार

में अपना अधिकार रखता है। मेरे पास सद्गुरु का दिया हुआ आत्मज्ञान का सोंटा है जब मैं उसको लेकर माया-भूत पर टूट पड़ा, तब वह भाग खड़ा हुआ॥ 5॥

विशेष—दृश्य-जगत का मोह माया-भूत है। इसी में उलझकर सब दुखी हैं। दूसरों को उपदेश करने वाले भी उसी घेरे में हैं। वे जब उससे पूर्ण सावधान हो जाते हैं और मोह से पार हो जाते हैं, तब वे सच्चे ज्ञानी हैं। उन्हीं के उपदेश से दूसरे लोग भी माया-मोह से छूटने का बल पा सकते हैं।

शब्द-90

हम तो बेपरवाही मियाँ वे, हमको अब का चाही॥ 1॥
दिल दिल्ली मन तख्त आगरा, चलै सबर दे माहीं॥ 2॥
ज्ञान ध्यान की फौज हमारी, दफ्तर नाम इलाही॥ 3॥
दुनिया दीन दोऊ है तालिब, ऐसी है बादसाही॥ 4॥
पलटू दास दूरि भई दूई, सादी गमी कोइ नाहीं॥ 5॥

शब्दार्थ—सबर=सब्र, संतोष। दे=के। इलाही=ईश्वर, ईश्वरीय। तालिब=इच्छुक। दूई=द्वैत, अनात्म। सादी=शादी, खुशी, प्रसन्नता।

भावार्थ—हे मिया! मैं तो निष्फिक्र हूं। मुझे अब क्या चाहना रह गयी? ॥ 1॥ मेरा दिल दिल्ली का राज्य है और मन आगरा की राजगद्दी है। मेरा शासन संतोष में चलता है॥ 2॥ आत्मज्ञान और आत्मलीनता की मेरी सेना है और कार्यालय खुदा का नाम है॥ 3॥ मेरी आत्मशांति की ऐसी बादशाही है कि संसारी और धार्मिक दोनों क्षेत्र के लोग इसके इच्छुक हैं॥ 4॥ पलटू साहेब कहते हैं कि मेरा द्वैत दूर हो गया है। अब मेरे जीवन में न हर्ष है और न शोक॥ 5॥

विशेष—खुदा वस्तुतः स्वयंभू आत्मा है। खुद-आ—खुदा, स्वयं भू आत्मा। आत्म-चिंतन ही खुदा-नाम का स्मरण है॥

शब्द-91

मुस्किल है प्यारे कठिन, फकीरी रिंदा काम॥ 1॥
फाका फकर सबर दिल आवै, धुनि लागी हर जाम॥ 2॥
रूखा सूखा गम का टुकड़ा, सुबह मिलै या साम॥ 3॥
हक्क हलाल आप से आवै, लेना और हराम॥ 4॥
पलटू दास सोई ठहरेगा, मुद्दा हुआ तमाम॥ 5॥

शब्दार्थ—रिंदा= मस्तानगी, बंधनरहित दशा। फाका= भूखा। फकर= फ़क्र, फकीरी, आवश्यकता से अधिक न चाहना। सबर= सब्र, संतोष। जाम= याम, पहर, तीन घंटे का समय, काल। गम= सहनशीलता, संतोष। हक्क= हक़, अधिकार, स्वत्व, सत्य। हलाल= जायज, उचित। हराम= त्याज्य। मुद्दा= मुद्दआ, उद्देश्य, प्रयोजन। तमाम= पूरा।

भावार्थ—हे प्यारे मुमुक्षु ! फकीरी के पथ पर चलना कठिन है। यह मस्तानगी एवं निर्बंधता का काम है॥ 1॥ समय से भूखा रह जाना पड़े तो चिंता नही। आवश्यकता से अधिक संग्रह न करे। हृदय में संतोष रखे और हर समय अंतर्मुखता एवं आत्मचिंतन में लगन लगी रहे॥ 2 रूखा-सूखा संतोष का टुकड़ा सुबह मिले अथवा शाम को, उद्वेगशून्य होकर निर्वाह करे॥ 3॥ जो बिना मांगे स्वाभाविक ढंग से अपने आप आ जाय, वही फकीर के लिए उचित अधिकार है। इसके आगे ग्रहण करना त्याज्य है॥ 4॥ पलटू साहेब कहते हैं कि आत्मशांति में वही स्थिर होगा जिसके मन की सारी इच्छाएं समाप्त हो गयी हैं॥ 5॥

शब्द-92

कुलुफ कुफर को खोलौ मुलने, मुरदा होय के डोलौ॥टेक॥
जो तुम चाहौ भिस्त आपनी, खुदी खूब को खोवौ।
हवा हिरिस को बसि में राखौ, रूह पाक को धोवौ॥ 1॥
तसबी एक रहै बेदाना, दिल अंदर में फेरौ।
पाक मुहम्मद नजर परैगा, दिल गुम्मज में हेरौ॥ 2॥
जाहिर चसम को दूरि करौ तुम, अन्दर धसि कै पैठौ।
असमान के बीच रखाना है इक, उस हुजरे में बैठौ॥ 3॥
कीजै फहम फना को लै कै, नूर तजल्ली अपना।
पलटू दास मकाँ हू हू का, दीद दानिस्तन सुनना॥ 4॥

शब्दार्थ—कुलुफ= कुलफ़त, चिंता, मनस्ताप। कुफर= कुफ्र, नास्तिकता। भिस्त= बहिश्त, स्वर्ग। खुदी= ख़ुदी, अहंकार। हिरिस= हिर्स, तृष्णा। रूह= चेतन आत्मा। पाक= पवित्र। तसबी= जपने की माला। रखाना= रख़ना, खिड़की, झरोखा, दीवार का मोखा। हुजरे= मस्जिद की कोठरी। फहम= समझ, ज्ञान। फना= फ़ना, नाश, मृत्यु। नूर= प्रकाश। तजल्ली= प्रकाश। हूहू= अल्लाहहू का संक्षेप। दीद दानिस्तन= जान समझकर।

भावार्थ—हे मुल्ला ! चिंता एवं मनस्ताप नास्तिकता है। इसको दूर फेंक दो और अहंकार मारकर अत्यंत विनम्रतापूर्वक जीवन-निर्वाह करो॥ टेक॥ यदि अपना स्वर्गवास चाहते हो तो अहंकार को अच्छी तरह नष्ट कर दो। विषय-तृष्णा के तूफान को अपने वश में करो। मूलतः पवित्र आत्मा पर जो मन द्वारा मैल आ गया है उसको धो दो॥ 1 एक माला ऐसी होना चाहिए जो बिना दाने के हो॥ उसको अपने मन में फेरो—विचार को शुद्ध करो। फिर तुम्हारे दिल-गुंबज में पवित्र मुहम्मद के उपदेशों का साक्षात्कार होगा। अतएव उनके उपदेशों का सार अपने हृदय में ही खोजो॥ 2॥ बाहरी चाम की आंखों से दिखते हुए दृश्यों का मोह दूर करके अपने भीतर में प्रवेश कर अपने आत्मा में स्थित होओ। संकल्प-शून्यता रूपी आकाश के बीच में एक झरोखा है। उस शांति-कमरे में स्थित होओ॥ 3॥ अपनी आत्मज्योति के प्रकाश में समझ पक्की करो और शरीर-संसार की नश्वरता को दृष्टि में रखते हुए भोगों से विरक्त होकर आत्मा में अनुरक्त होओ। पलटू साहेब कहते हैं कि जो 'अल्लाहू' का घर है, खुदा का तख्त है, वह हृदय में है। वहीं से हू-हू की आवाज आती है—आत्म अस्तित्व का बोध प्रकट होता है। उसे समझ-बूझकर सुनो—आत्मानुभव में डूबो॥ 4॥

शब्द-93

मुरसिद जात खुदाय की, दरगाह बताया।
परवर पाक दिगार को, दिल बीच मिलाया॥ 1॥
बंदगी दम दम की भरौं, दानिस्त दिखाया।
तिनुका ओट पहाड़ है, बिन चस्म लखाया॥ 2॥
कुदरति देखि सुभान की, दिल हौल है मेरा।
मौजूद रहै वजूद में, बिन तसबी फेरा॥ 3॥
तख्त चढ़े दुरवेस हैं, बातैं आफरीनी।
मुअज्जिज हैं असमान में, औ साफा सीनी॥ 4॥
छत्र फिरै सिर नूर का, सब बुजरुग हारे।
पलटू दास मिलि खाक में, हम खोजि निकारे॥ 5॥

शब्दार्थ—मुरसिद= मुरशिद, सद्गुरु। जात=ज़ात, जाति, कुल, वंश, अस्तित्व, स्वयं, खुद। दरगाह= ड्योढ़ी, द्वार। परवर पाक दिगार= पाक परवर

दिगार, पवित्र, पालन करनेवाला, ईश्वर। दानिस्त= ज्ञान, अनुभव। चस्म= चश्म, आंख। कुदरति= कुदरत, प्रकृति। सुभान= सुबहान, पवित्र, स्वतंत्र ईश्वर। हौल= भय, विकलता, आंदोलन। वजूद= अस्तित्व, स्थिति। तसबी= फेरने की माला। दुरवेश= दरवेश, फकीर, संत। आफरीनी= आफ़रीनी, अत्यंत प्रशंसनीय। मुअज्जिज= मुअज़्ज़िज़, महत्त्वपूर्ण। साफा सीनी= शुद्ध हृदय। नूर= प्रकाश, आत्मज्ञान। बुजुर्ग= वृद्ध या माननीय। खाक= ख़ाक, धूल, मिट्टी।

भावार्थ—फकीरों ने बताया है कि सद्गुरु खुदा का अस्तित्व है और वही कल्याण का द्वार है। सद्गुरु ने ऐसा बोध दिया कि पाक परवरदिगार अल्लाह तुम्हारे दिल में है॥ 1॥ उन्होंने हृदय में स्थित चेतन अस्तित्व का अनुभव करा दिया। मैं उसी की बंदगी श्वास-श्वास में करता हूं। जैसे आंख के सामने खड़े तृण की आड़ में पर्वत छिपा हो, वैसे अविद्या के कारण अपना चेतन अस्तित्व विस्मृत है। सद्गुरु ने बाहरी आंखों से हटकर अनुभव की आंखों से उसे दिखा दिया॥ 2॥ हृदय-निवासी ईश्वर की कुदरत देखकर मेरा मन आंदोलित है। मैं अपने वजूद में मौजूद रहूं—अपने अस्तित्व में स्थित रहूं, यही प्रयत्न है। बिना माला के मेरे अंदर आत्म-स्मरण रूपी जप है॥ 3॥ स्वरूपस्थिति के सिंहासन पर फकीर चढ़ जाता है। यह बात अत्यन्त प्रशंसनीय है। मन की मलिनता से उठकर पवित्रता के आकाश में स्थिर हो जाना महत्त्वपूर्ण दशा है। यही साफासीनी है—शुद्ध हृदय का लक्षण है॥ 4॥ ऐसे संत के सिर पर ज्योतित आत्मज्ञान का छत्र घूमता है। संसार के सभी माननीय उसके सामने नतमस्तक होते हैं। पलटू साहेब कहते हैं कि मैंने अपने अहंकार को धूल में मिलाकर आत्मस्थिति का स्वराज्य खोज निकाला है॥ 5॥

शब्द-94

काल आय नियराना है, हरि भजो सखी री॥टेक॥
सीत बात कफ घेरि लेहिंगे, करिहैं प्रान पयाना है।
तीनिउँ पन धोखे में बीते, अब क्या फिरै भुलाना है॥ 1॥
घाट बाट में रोकै टोकै, माँगे गुरु-परवाना है।
पलटू दास होय जब गुरुमुख, तब कुछ मिलै ठिकाना है॥ 2॥

शब्दार्थ—तीनिउँ पन= बाल, युवा, वृद्ध। गुरु परवाना= गुरु का प्रमाण पत्र।

भावार्थ—हे मित्रो! मृत्यु का समय निकट आ गया है। हरिभजन करो—आत्मशोधन करो॥ टेक॥ देखते-देखते एक दिन शीत, वात और कफ घेर लेंगे और प्राण पखेरू उड़ जायेंगे। तुम्हारी तीनों अवस्थाएं माया-मोह के धोखे में बीत गयीं, अंत में क्या कल्याण कर सकोगे? आज भी क्यों भूले घूमते हो?॥ 1॥ यमराज घाट-बाट में रोके-टोकेगा और गुरु का प्रमाण पत्र मांगेगा। पलटू साहेब कहते हैं कि जब मनुष्य सद्गुरु के उपदेश पाकर आत्मबोध में संतुष्ट होगा, तब उसे कुछ स्थिरता मिलेगी॥ 2॥

विशेष—अपने कर्मों के संस्कार यम हैं। वे कर्म-फल देते हैं; अतएव कर्म सुधार करते रहें।

शब्द-95

मैं बलिहारी जाउँ जेहि मुख, हरि जस उचरै॥टेक॥
जतिन नीच होय फिर कुष्टी, सरबरि करै न कोई।
कोटि कुलीन होय ब्रह्मा सम, ता सम तुलै न कोई॥ 1॥
जेकँहै सिव सनकादिक खोजैं, सुर मुनि ध्यान लगावैं।
सो हरि उनके पीछे पीछे, संख चक्र लिये धावैं॥ 2॥
कोटिन तीरथ उनके चरनन, मुक्ति है उनकी चेरी।
पहुँचत हैं बैकुंठ सोई, पद रज जै जै केरी॥ 3॥
जो सुख हरि घर दुर्लभ देखा, सो उनके घर माहीं।
पलटू दास संत घर हरि हैं, हरि के घर अब नाहीं॥ 4॥

शब्दार्थ—कुष्टी= कुष्ट रोग से पीड़ित कोढ़ी। सरबरि= बराबरी।

भावार्थ—जो मनुष्य हरि-यश का गायन करता है—आत्मज्ञान की चर्चा करता है, मैं उसके सामने नतमस्तक हूं॥ टेक॥ वह लौकिक दृष्टि से तथाकथित नीच जाति का हो, यहां तक कुष्ट-रोग से पीड़ित हो, किन्तु उसकी बराबरी कोई नहीं कर सकता। जो करोड़ों गुणा उत्तम कुल का माना जाता हो, यहां तक ब्रह्मा के समान हो, किन्तु पवित्रात्मा आत्मलीन के समान वह नहीं हो सकता॥ 1॥ शिव-सनकादि जिसे खोजते हैं और देवता, मनुष्य और मुनि जन जिसका ध्यान करते हैं, वह हरि शंख-चक्र लेकर पवित्रात्मा आत्मलीन संत के पीछे उनकी सेवा में दौड़ते हैं॥ 2॥ उन आत्मलीन संतों के चरणों में मानो करोड़ों तीर्थ हैं और मुक्ति उनके चरणों की दासी है। जो लोग उन संतों की पद-रज अपने सिर पर चढ़ाकर उनका गुण गाते हैं, वे ही बैकुंठ में

पहुंचते हैं—सब कुंठाओं से मुक्त आत्मशांति पद पाते हैं॥ 3॥ जो परमशांति का सुख विष्णु के घर में भी नहीं है, वह उन शांतात्मा संतों के हृदय में है। पलटू साहेब कहते हैं कि संतों के पास ही हरि हैं, संत अपने आत्मा से अलग हरि को खोजने नहीं जाते हैं॥ 4॥

विशेष—पलटू साहेब गाथात्मक कथनों को लेकर आत्मज्ञान और आत्मशुद्धि की विशेषता बताते हैं। पौराणिक गाथाएं समाज में फैली हैं। इसलिए उसके आधार में आत्मज्ञान और आत्मशुचिता की बात समझाना सरल रहता है।

शब्द-96

सिर धुनि धुनि पछिताउँ, देखि जग रीती हो।
विषय लहर गै सोय माया जग जीती हो॥ 1॥
माया रूप जाल सकल जग बाझा हो।
ज्ञानी जोगी जती परे तेहिं माँझा हो॥ 2॥
बूड़ैं औ उतराय माया के सागर हो।
कोउ नहिं सकै बचाय माया नट नागर हो॥ 3॥
तिरगुन फाँसी हाथ ठगिनि यह माया हो।
सुर मुनि देइ गिराय तनिक नहिं दाया हो॥ 4॥
काम क्रोध की लहर सकल जग जागै हो।
चिंता डसै सरीर नींद नहिं लागै हो॥ 5॥
चतुर सकल संसार माया मँह राचा हो।
अहमक पलटू दास भागि कै बाचा हो॥ 6॥

शब्दार्थ—बाझा= बझा, फंसा हुआ। माँझा= में, उसमें। नटनागर= चक्कर में डालकर फंसाने में चतुर। राचा= मोहित, डूबा हुआ। अहमक= अहमक़, बेवकूफ, मूर्ख।

भावार्थ—मैं संसार का चाल-चलन देखकर अपना माथा ठोक लेता हूं और पश्चाताप करता हूं। लोग विषय-भोगों की लहर में पड़कर असावधान हो गये हैं। माया ने सारे संसार को जीत लिया है॥ 1॥ माया रूपी जाल में सारा संसार फंसा हुआ है। यहां तक कि ज्ञानी, योगी और त्यागी भी माया में उलझे हैं॥ 2॥ माया-मोह के समुद्र में सारे जीव डूबते-उतराते बहते जा रहे

हैं। माया छल-बल करने में चतुर है। इस कारण कोई उससे बचने की शक्ति नहीं रखता है॥ 3॥

यह माया ठगिनी त्रिगुण की फांसी हाथ में लेकर घूम रही है। यह देवता, मनुष्य और मुनियों को भी अपने फांस में फंसाकर उन्हें पटक देती है। उसके मन में किसी के प्रति दया नहीं है॥ 4॥ संसार के सारे लोग काम-क्रोध की तरंगों में बहते हैं और उन्हीं में आनन्द मनाते हैं। इसलिए उनके शरीर में चिंता सांपिनि डसती है और उन्हें शांति की नींद नहीं लगती॥ 5॥ संसार के सारे लोग अपने को बुद्धिमान मानते हैं और माया-मोह में डूबे रहते हैं। पलटू साहेब कहते हैं कि जो मूर्ख हैं वे दुनिया की मोह-माया से भागकर बच जाते हैं॥ 6॥

विशेष—माया कोई जानदार स्वतंत्र सत्ता नहीं है जो जीव को विवश कर सके। वस्तुतः मन के मोह की प्रबलता ही माया है। माया-मोही मनुष्य उचित-अनुचित रूप से धन तथा भोग वस्तुएं बटोरकर उनके भोग में अपने को चतुर मानता है। पलटू साहेब व्यंग्य में कहते हैं कि जो मनुष्य भोगों के प्रति मूर्ख होता है वह उनसे भागकर अपने को बचा लेता है।

शब्द-97

हरि चरनन चित लाओ हो सरि हैं सब काज॥टेक॥
काल बली सिर ऊपर हो तीतर को बाज।
चुंगल तर चिचिऐहौ हो जब मिलै मिजाज॥ 1॥
भजन बिना का तरे तरान हो रैयत बिनु राज।
बिना पिता कै बालक हो रोवै बिनु साज॥ 2॥
देव पित्र उपवासी हो परि है जम गाज।
बहुत पुरुष कै नारी हो बिस्वै नहिं लाज॥ 3॥
काम क्रोध बिनु मारे हो का दैहौ सिर ताज।
पलटु दास धिक जीवन हो सब झूँठ समाज॥ 4॥

शब्दार्थ—मिजाज=मिज़ाज, मन की दशा। रैयत=प्रजा। साज=ताल, स्वर। पित्र=मरे हुए पितर। उपवासी=उपासक। गाज=वज्र, बिजली। बिस्वै=वेश्या।

भावार्थ—अज्ञान के हरण करने वाले सद्गुरु-संत रूपी हरि की चरण भक्ति में मन लगाओ तो तुम्हारा सब काम बन जायेगा॥ टेक॥ सावधान!

शक्तिशाली काल तुम्हारे ऊपर बैठा है। वह वैसे ही तुम्हें धर दबोचेगा जैसे तीतर को बाज पक्षी। जब तुम्हें अपने मन में मौत की दशा का अनुभव होगा तब तुम उसके चंगुल में फंसे रोओगे॥ 1॥ आत्मबोध-आत्मशोध रूपी भजन-साधना के बिना जीव संसार-सागर से कैसे तर सकता है? जैसे बिना शासक-राजा के प्रजा बलवान बदमाशों से पीड़ित होती है और जैसे माता-पिता का आश्रय पाये बिना बालक असंयत दीन होकर रोता है, वैसे आत्मबोध बिना जीव दुख पाता है॥ 2॥ कल्पित देवी-देवता और मृत पितर के उपासकों के ऊपर वासना रूपी यमराज का वज्र गिरेगा। बहुत पुरुषों से लगने वाली वेश्या नारी निर्लज्ज होती है वैसे एक आत्मा को भुलाकर नाना देव-गोसैय्या में उलझे हुए लोग अशांत भटकते हैं॥ 3॥ काम-क्रोध को मारे बिना सिर पर ताज लगाकर बैठेने से क्या लाभ होगा? पलटू साहेब कहते हैं कि आत्मबोध, आत्मशोध और आत्मशांति के बिना जीवन व्यर्थ है और सब दुनियवी साज-समाज निरर्थक है॥ 4॥

शब्द-98

काटौं फंदा करम का, जो होवै मेरा।
उलटि लिखौं तेहि भाल में कोइ सकै न फेरा॥ 1॥
जा खोजत ब्रह्मा भूले सुर मुनि बहुतेरा।
सो पद दैहौं ताहि को जिन मोको हेरा॥ 2॥
मरन जियन में सब परा दुख सहत घनेरा।
करम के बसि फाँसी फँसे मुए गुरु औ चेरा॥ 3॥
भरम छुड़ावौं ताहि को आवागवन निबेरा।
सत्तलोक पहुँचाय को नहिं लावौं देरा॥ 4॥
अमर लोक बैठाय के तहवाँ द्यों डेरा।
सुखी करौं तेहि जन्म को जो पलटू केरा॥ 5॥

शब्दार्थ—भाल= मस्तक। चेरा= चेला, शिष्य। द्यों= दूंगा। केरा= का।

भावार्थ—(पूर्ण सद्गुरु अधिकारपूर्वक कहते हैं)—जो मनुष्य मुझको समर्पित हो जायेगा, मैं उसका कर्म-बंधन काट दूंगा और उसके मस्तक में बंधन का उलटा मोक्ष का प्रमाण-पत्र लिख दूंगा, जिसको कोई उलट नहीं सकेगा॥ 1॥ जिस कैवल्य पद की खोज करते-करते ब्रह्मा, देवता और मुनिजन आदि बहुतेरे परोक्ष मान्यताओं के जंगल में भटक गये, उस

स्वरूपस्थिति पद को मैं उसको दूंगा जो मेरे उपदेश को मानकर उसके अनुसंधान में लग जायेगा॥ 2॥ जन्म-मरण के चक्कर में सब जीव अत्यंत दुख सह रहे हैं। वासनात्मक कर्मों की फांसी में लटककर संसार के गुरु और चेले अपना पतन कर रहे हैं॥ 3॥ किन्तु जो स्वरूपबोध स्वीकार लेगा, उसका सब भ्रम छुड़ाकर और उसके आवागमन के कर्मबंधन काटकर उसे तुरंत स्वरूपस्थिति रूपी सतलोक में पहुंचा दूंगा॥ 4॥ उसको आत्मस्थिति रूपी अमरलोक में स्थिर कर उसका वहां स्थिर मुकाम कर दूंगा। पलटू साहेब कहते हैं कि जो मेरे आत्मज्ञान को स्वीकार कर लेगा, उसके जीवन को मैं आनंदित कर दूंगा॥ 5॥

विशेष—यह पूर्ण सद्गुरु का समर्पित शिष्य के लिए साहस-प्रदान है। वस्तुतः सद्गुरु केवल उपदेश कर सकता है, शिष्य को स्वयं साधना से मन को जीतकर स्वरूपस्थिति में ठहरना होता है।

शब्द-99

मत कोउ गहो वह पद निरबान॥ टेक॥
घर के हित सब बैरी होइ हैं, सुनि गुनि बेद पुरान॥ 1॥
अलख नाम सोई से हित करु, राम नाम गलतान॥ 2॥
राँध परोसिन गारी दैहैं, लोग कहैं बौरान॥ 3॥
सद्गुरु साहिब मिले मसूका, आसिक ह्वै पलटू अलगान॥ 4॥

शब्दार्थ—निरबान= निर्वाण, प्रपंचशून्य मुक्ति । मसूका= माशूक़, प्रियतम। आसिक= आशिक़, प्रेमी, अनुरक्त।

भावार्थ—(ग्रंथकार व्यंग्य में कहते हैं)—कोई मोक्ष पद का रास्ता मत पकड़ो॥ टेक॥ परिवार के हितैषी लोग वेद-पुराण सुनकर और मनन कर तुम्हारे शत्रु हो जायेंगे। वे कहेंगे कि वेद-पुराण के सब ऋषि-मुनि गृहस्थ थे, तुम विरक्त होकर घर का नाश क्यों कर रहे हो?॥ 1॥ परंतु साधक ! जिसको अदृश्य नाम से कहा जाता है, उस द्रष्टा आत्मा में ही मन जोड़ो। उसको रामनाम से भी याद किया जाता है, उस अंतर्द्रष्टा आत्मा में लीन रहो॥ 2॥ इससे आसपास के लोग तुमको गाली देंगे और लोग तुम्हें कहेंगे कि यह पागल हो गया है॥ 3॥ पलटू साहब कहते हैं कि मुझे जब प्रियतम सद्गुरु मिल गये तब उनके आत्मज्ञान के उपदेश से मैं उनमें अनुरक्त हो गया और सांसारिकता से अलग हो गया॥ 4॥

शब्द-100

कौन भक्ति तोरी करौं राम मैं, कौन भक्ति तोरी करौं।
तुझ में महैं तुही है मुझ में, कौन ध्यान लै धरौं॥ 1॥
मरौं नहीं मारे काहू के, नाहि जराये जरौं।
कैसन पाप पुन्न है कैसन, सरग नरक नहिं डेरौं॥ 2॥
तीरथ बर्त ध्यान नहिं पूजा, बिना परिस्त्रम तरौं।
पलटू कहै सुनो भाइ साधो, संत चरण सिर धरौं॥ 3॥

शब्दार्थ—डेरों= डरों।

भावार्थ—हे राम! मैं तुम्हारी कौन-सी भक्ति करूं? मैं तुम में हूं और तुम मुझमें हो, फिर किसका ख्याल करके ध्यान करूं?॥ 1॥ मैं किसी के मरने से मर नहीं सकता न जलाने से जल सकता हूं। अब पाप कैसा है और पुण्य कैसा है? अब स्वर्ग का प्रलोभन नहीं रहा और नरक का डर नहीं रहा॥ 2॥ न मैं तीर्थ करता हूं, न उपवास करता हूं, न पूजा करता हूं। मैं बिना परिश्रम मुक्त हूं। पलटू साहेब कहते हैं कि हे भाई संतो! सुनो, मैंने अपना सिर संतों के चरणों में समर्पित कर दिया है॥ 3॥

शब्द-101

मौनी मुख से बोल, मौन मनै मन रहु॥टेक॥
उनमुनि मुद्रा ध्यान लगावै, मन में उलटि समावै।
निरबिकार निरबैर जगत से, सो मौनी मोहिं भावै॥ 1॥
अजपा जाप जपै बिनु रसना, सुन्य में तुही अकेला।
मौनी मन को राखु निरंतर, तुहीं गुरू तुहिं चेला॥ 2॥
भूख लगे पर सैन बतावै, प्यास लगे पर पानी।
मन तरसत है बोलै कारन, कौन भक्ति तुम जानी॥ 3॥
पारब्रह्म पुरसोत्तम स्वामी, सब घट ब्यापक सोई।
पलटू कहै सुनो हो मौनी, मौन काहि से होई॥ 4॥

शब्दार्थ—उनमनि= संसार से उदास। मुद्रा= विशेष ढंग से स्थिरता। व्यापक= शक्तिशाली।

भावार्थ—हे मौनी! मुख से बात कर, किन्तु मन को मौन कर॥ टेक॥ संसार से उदासीन होकर आसन जमा और मन को संकल्प-शून्य करके शांत

हो जा। जो साधक मन का निर्मल है और सबसे निर्वैर है, वह मौनी है। वह मुझे अच्छा लगता है ॥ 1 ॥ जीभ को हिलाये बिना आत्म-स्मरण रूपी अजपा जाप कर, जब मन शून्य हो गया तब तू अकेला रह जाता है। हे साधक ! तू अपने मन को निरंतर मौन रख—संकल्प-शून्य रह, तब तू ही गुरु है और तू ही शिष्य है॥ 2 ॥ हे मौनी ! भूख लगने पर तू संकेत से भोजन मांगता है और प्यास लगने पर पानी मांगता है। तुम्हारा मन बोलने के लिए लालायित है, परन्तु तूने जीभ को बांध रखा है। तुमने इसमें कौन-सी भक्ति समझ रखी है॥ 3 ॥ जो परब्रह्म परमात्मा स्वामी है, वह तो सबके दिल में शक्तिशाली रूप में बैठा है। पलटू साहेब कहते हैं कि हे मौनी ! तुम किसके लिए मौन साधते हो? ॥ 4 ॥

शब्द-102

कोइ कोइ संत सुजान, जानै बस्तु आपनी ॥टेक॥
जिन जाना तिन ही सुख पाया, और सबै हैरान॥ 1॥
संग्रह त्याग नहीं कुछ एकौ, नहीं मान अपमान॥ 2॥
सम्पति बिपति अस्तुती निन्दा, ना कुछ लाभ न हान॥ 3॥
पलटू दास खोजत सब मरिगा, परा रहै चौगान॥ 4॥

शब्दार्थ—चौगान= मैदान।

भावार्थ—कोई-कोई बिरले संत अपनी आत्म-वस्तु को जानते हैं॥ टेक॥ जिसने अपने आत्मस्वरूप को समझा, वे स्थिर शांति पाये, शेष लोग बाहर खोजते फिरे और दुखी हुए॥ 1॥ जिसने अपने स्वरूप को समझकर उसमें स्थिति पायी, उसे न संग्रह का लोभ है और न त्याग का अनुभव है और न उसे सम्मान की भूख है और न अपमान को लेकर दुख है॥ 2॥ उसके लिए संपत्ति-विपत्ति, स्तुति-निन्दा तथा मान-अपमान व्यर्थ हो गये॥ 3॥ पलटू साहेब कहते हैं कि संसार के लोग सत्य खोजते-खोजते मर जाते हैं, परन्तु वह तो मैदान में खुला पड़ा है। वह है अपना आत्म-अस्तित्व॥ 4॥

शब्द-103

गाफिल में क्या सोवता, सुन मुरख अनारी।
साहिब से दिल लाय ले, यह अरज हमारी॥ 1॥
जोरू बेटा कौन का, किस का है भाई।
मुलुक खजाना कौन का, कोउ संग न जाई॥ 2॥

हाथी घोड़ा तंबुवा, आवै केहि कामा।
फूलन सेज बिछावते, फिर गोर मुकामा॥ 3॥
आलम का पातसा हुआ, तूही कुल कुल्ला।
यह सब ख्वाब की लहर है, दरियाव का बुल्ला॥ 4॥
पाव घरी में कूच है, क्या देरी लावै।
पलटू की सत राम है, तोहि काल बुलावै॥ 5॥

शब्दार्थ—तंबुवा= तंबू। गोर= कब्र। आलम= संसार जनसमूह। पातसा= बादशाह, सम्राट। कुलकुल्ला= सर्वेसर्वा। दरियाव= समुद्र, नदी। सतराम= नमस्कार।

भावार्थ—हे भोला एवं मूर्ख! सुन, असावधान होकर माया-मोह में क्या सोता है? मेरी विनती है कि तू सद्गुरु स्वामी से मन लगा और अंततः आत्मा-स्वामी में डूब॥ 1॥ किसकी कौन पत्नी है, किसका कौन पुत्र है और किसका कौन भाई है? देश और खजाना किसके हैं? याद रख! कोई और कुछ तेरे साथ चलने वाला नहीं है॥ 2॥ हाथी, घोड़े, तंबू आदि अंत में किस काम आयेंगे? जो राजे-महाराजे फूलों से सजी शय्या पर सोते थे, वे एक दिन कब्र में अपना स्थान बना लिये॥ 3॥ हे मनुष्य! तू दुनिया का सम्राट हो गया और तू ही सर्वेसर्वा हो गया। परन्तु ध्यान रख, यह सब स्वप्न की तरंगें हैं और समुद्र के बुलबुले के समान क्षणिक हैं॥ 4॥ घड़ी की चौथाई में ही इस संसार से चल देना होगा। तू कल्याण-कार्य में क्या विलंब करता है? पलटू साहेब कहते हैं कि मैं तुम्हें नमस्कार करके सावधान करता हूं, तुम्हें काल बुला रहा है॥ 5॥

शब्द-104

मन बच कर्म भजो करतार। भजन बिना नहिं पैहो पार॥ 1॥
नहिं मोरे मात पिता सुत नार। माया मोह झूँठ घरबार॥ 2॥
ना हम केहु के कोउ न हमार। झूँठी प्रीति कर संसार॥ 3॥
नर्क सर्ग नहिं वार न पार। बिनु सतगुरु कौन निस्तार॥ 4॥
मन के जीते पलटू जीति। अजर जरै तो निबहै प्रीति॥ 5॥

शब्दार्थ—करतार= ज्ञान-विज्ञान का कर्ता आत्मा।

भावार्थ—मन, वचन और कर्म से ज्ञान-विज्ञान के कर्ता निज आत्मतत्त्व का चिंतन करो। आत्मबोध, आत्मशोध और आत्मस्थिति के बिना भवसागर से पार नहीं पाओगे॥ 1॥ मेरे शुद्ध आत्म अस्तित्व में न माता है, न पिता है,

न पुत्र है, न पत्नी है। घरबार का मोह भी व्यर्थ है, क्योंकि यह सब असत्य है॥ 2॥ न हम किसी के हैं और न कोई हमारा है। संसार के लोग असत्य वस्तुओं से ही मोह करते हैं॥ 3॥ आत्मबोध हो जाने पर उसको न नरक जाना है और न स्वर्ग। जब अपने आप में स्थिति हो गयी तब कहीं वार-पार करना नहीं बचा। परन्तु सद्गुरु के उपदेश से आत्मबोध पाये बिना जीव का कल्याण कौन कर सकता है?॥ 4॥ पलटू साहेब कहते हैं कि मन को पूर्णतया जीत लेने पर अपनी पूरी जीत है। जब अजर अमर-आत्म ज्योति का ज्ञान-दीप निरंतर जलने लगता है, तब साधना का प्रेम अखंड हो जाता है॥ 5॥

शब्द-105

केहि बिधि रामनाम अनुरागै, दिल का भरम न भागै॥टेक॥
बिनु खाये चित चैन न होवै, खाये आलस लागै।
बूझि बिचारि दोऊ हम देखा, मन माया नहिं त्यागै॥ 1॥
रैयत एक पाँच ठकुराई, दस दिसि है मौआसा।
रजो तमो गुन खरे सिपाही, करहिं भवन में बासा॥ 2॥
पाप पुन्य मिलि करहिं दिवानी, नगरी अदल न होई।
दिवस चोर घर मूसन लागे, माल धनी गा सोई॥ 3॥
इतने बैरी रहैं जीव के, उलटि पवन जब जागै।
गुरु का ज्ञान बान लै पहुँचै, ब्रह्म अगिनि दै दागै॥ 4॥
काया घेरि अमल करु जोरा, धर्म द्वार मन माँगै।
पलटू दास मूल धै मारै, पुलकि पुलकि तब पागै॥ 5॥

शब्दार्थ—रैयत= प्रजा। मौआसा= ठग। दिवानी= दीवानी, निर्णय। अदल= न्याय। अमल= अधिकार, कब्जा।

भावार्थ—राम नाम से प्रेम किस प्रकार से करे? मन का भ्रम नहीं जाता है॥ टेक॥ भोजन किये बिना मन को विश्राम नहीं मिलता। परन्तु भोजन कर लेने पर आलस्य लगता है। मैंने दोनों स्थितियों पर बूझ-विचार कर देख लिया। मन मोह-माया को छोड़ता नहीं है॥ 1॥ प्रजा तो एक जीव है और उसके ऊपर बलात शासन करने वाले पांच हैं—आंख, नाक, कान, जीभ और चाम। शरीर के सभी द्वारों पर मानसिक-विकार रूपी ठग बैठे हैं। रजो और तमोगुण प्रबल सिपाही हैं जो शरीर-भवन में बसे हुए हैं और नित्य जीव को सताते हैं॥ 2॥

पाप और पुण्य की वासनाएं मिलकर निर्णय देती हैं जो ठीक नहीं रहता है, इसलिए शरीर-नगर में न्याय का शासन नहीं रहता है। काम-क्रोधादि चोर विवेकप्रधान मानव-तन रूपी दिन में हृदय-घर में आत्मज्ञान-धन की चोरी करते हैं और मालधनी जीव मोह में सोया है॥ 3॥ जीव के इतने शत्रु शरीर में बसते हैं। जब जीव अपने मन-पवन को संसार से घुमाकर अपने आप में जग जाय और सद्गुरु के दिये हुए स्वरूपज्ञान का बाण लेकर मनोविकारों से लड़ने के लिए युद्ध में पहुंचे तब आत्मज्ञान की आग विवेक-बंदूक में भर कर दाग दे॥ 4॥ हे साधक! इस शरीर-गढ़ को फेरकर इस पर जबर्दस्त अधिकार जमा लो और मन को यही आज्ञा दो कि वह धर्म-द्वार एवं संयम से जीवन का व्यवहार करे। पलटू साहेब कहते हैं कि जब साधक अपने मौलिक ज्ञान आत्मबोध में स्थिर होकर मनोविकारों को मारता है, तब वह आत्मशांति में पुलकित होकर आत्मलीनता में परिपक्व होता है॥ 5॥

साखी

साखी : सद्गुरु-1

संत संत सब बड़े हैं, पलटू कोऊ न छोट।
आतम-दरसी मिहीं है, और चाउर सब मोट॥ 1॥
पलटू ऐना संत हैं, सब देखै तेहि माहिं।
टेढ़ सोझ मुँह आपना, ऐना टेढ़ा नाहिं॥ 2॥
वहि देवा को पूजिये, सब देवन कै देव।
पलटू चाहै भक्ति जो, सतगुरु अपना सेव॥ 3॥
सतगुरु केरे सबद की, लागी मन में चोट।
पलटू रन में बचि गया, कादिर ही की ओट॥ 4॥
माहातम जानै नहीं, मेंड़की गंगा बीच।
पलटू सबद लगै नहीं, कतनौ रहै नगीच॥ 5॥
पलटू सतगुरु सबद की, तनिक न करै बिचार।
नाव मिली केवट नहीं, कैसे उतरै पार॥ 6॥

शब्दार्थ—मिहीं= महीन, उत्तम। ऐना= दर्पण। कादिर= क़ादिर, समर्थ।

भावार्थ—पलटू साहेब कहते हैं कि सभी संत बड़े हैं, कोई छोटा नहीं है। जो आत्म-साक्षात्कार कर लिये हैं वे संत महीन चावल की तरह उत्तम हैं,

शेष लोग मोटे चावल की तरह हैं॥ 1॥ पलटू साहेब कहते हैं कि संत जन दर्पण की तरह हैं। सब लोग उनमें अपना स्वरूप देख सकते हैं। अपना मुंह सुंदर तथा कुरूप होता है। इसमें दर्पण का दोष नहीं है॥ 2॥ पलटू साहेब कहते हैं कि जो सब देवताओं के ऊपर हैं उस सद्गुरु देव की पूजा करो। यदि तुम सच्ची आत्मभक्ति चाहते हो तो अपने सद्गुरु की सेवा करो॥ 3॥ पलटू साहेब कहते हैं कि सद्गुरु के आत्मज्ञानपरक शब्दों की चोट मन में लग गयी, इसलिए समर्थ सद्गुरु का आधार लेकर मन के युद्ध में विजयी हो गया॥ 4॥ मेंढकी गंगा-जल में रहती है, परन्तु वह उसके महत्त्व को नहीं जानती। पलटू साहेब कहते हैं कि इसी प्रकार कितने अयोग्य शिष्य समर्थ सद्गुरु के अति निकट रहकर भी उनके ज्ञानोपदेश के प्रभाव से रहित रहते हैं॥ 5॥ पलटू साहेब कहते हैं कि ऐसे शिष्य सद्गुरु के शब्दों पर थोड़ा भी विचार नहीं करते। नाव तो मिल गयी है, परन्तु केवट नहीं है, तो नदी पार कैसे जा सकते हैं?॥ 6॥

साखी : चेतावनी-2

पलटू यहि संसार में, कोऊ नाहीं हीत।
सोऊ बैरी होत है, जाको दीजै प्रीत॥ 1॥
पलटू नर तन पाइ कै, मूरख भजै न राम।
कोऊ ना सँग जायगा, सुत दारा धन धाम॥ 2॥
बैद धनंतर मरि गया, पलटू अमर न कोय।
सुर नर मुनि जोगी जती, सबै काल बसि होय॥ 3॥
पलटू पल में कूच है, क्या लावो बड़ि देर।
अबकी बार जो चुकहू, फिर चौरासी फेर॥ 4॥
बजा नगारा कूच का, लदा न एकौ ऊँट।
पलट तलबी अस भई, तन भी गया है छूट॥ 5॥
जो दिन गया सो जान दे, मूरख अजहूँ चेत।
कहता पलटू दास है, करि लै हरि से हेत॥ 6॥
पलटू नर तन पाइ कै, भजै नहीं करतार।
जमपुर बाँधे जाहुगे, कहौं पुकार पुकार॥ 7॥
पलटू नर तन जातु है, सुन्दर सुभग सरीर।
सेवा कीजै साध की, भजि लीजै रघुबीर॥ 8॥
पलटू सिष्य जो कीजिये, लीजै बूझ बिचार।
बिन बूझे सिष करौगे, परिहै तुम पर भार॥ 9॥

दिना चारि का जीवना, का तुम करौ गुमान।
पलटू मिलिहैं खाक में, घोड़ा बाज निसान॥10॥
पलटू हरि जस गाइ ले, यही तुम्हारे साथ।
बहता पानी जातु है, धोउ सिताबी हाथ॥11॥

शब्दार्थ—तलबी= बुलावा। गुमान= भ्रम, अहंकार। बाज=बाजा। निसान =निशान, ध्वजा, पताका, झंडा। सिताबी=शिताबी, शीघ्रता।

भावार्थ—पलटू साहेब कहते हैं कि इस संसार में कोई मेरा मित्र नहीं है। जिससे प्रेम किया जाता है, वह भी बैरी बन जाता है॥ 1॥ मनुष्य-शरीर पाकर भी मूर्ख राम-भजन नहीं करता। याद रखो, पुत्र, पत्नी, धन तथा घर कुछ भी जीव के साथ चलने वाला नहीं है॥ 2॥ धन्वंतरि वैद्य भी मर गये। कोई देहधारी अमर नहीं है। देवता, मनुष्य, मुनि, योगी, त्यागी आदि सब काल के अधीन हैं॥ 3॥ क्षण-पल में तो देह छोड़कर चल देना है। कल्याण-कार्य में क्यों अधिक विलम्ब कर रहे हो? यदि अबकी सब वासना छोड़कर मुक्त नहीं हुए तो पुनः चौरासी चक्र में घूमोगे॥ 4॥

कूच का नगारा बज गया, किन्तु एक ऊंट पर भी माल न लाद पाया—मौत का समय आ गया, किन्तु कल्याण का काम थोड़ा भी नहीं हुआ। मौत का ऐसा बुलावा आया कि देह भी छोड़कर जाना पड़ा॥ 5॥ जो दिन धोखे में बीत गये, उनको लेकर पछतावा मत कर। हे मूर्ख! आज भी मोह की नींद भंग कर और आत्माराम में मन लगा॥ 6॥ मैं पुकार-पुकार कर कहता हूं, कि उत्तम नर तन पाकर आत्मशोधन में नहीं लगा। यदि वासना का त्याग नहीं किया तो उनमें बंधकर पुनः संसार में भटकेगा॥ 7॥ यह मानव-शरीर भजन-साधन करने के लिए उत्तम है, अतएव इससे साधु की सेवा करो और रघुनाथ का भजन करो—आत्मा में मन लगाओ॥ 8॥

पलटू साहेब कहते हैं कि हे गुरुओ! अच्छी तरह समझ-बूझकर तथा बहुत दिन तक जांच-परखकर किसी को साधु-शिष्य बनाओ। बिना पूर्ण परख किये किसी को साधु-शिष्य बनाओगे तो तुम्हारे ऊपर बोझ लद जायेगा॥ 9॥ चार दिन का जीवन है, इसका अभिमान क्या करते हो? याद रखो, तुम्हारे घोड़े, बाजे-गाजे और ध्वजा-पताका एक दिन मिट्टी में मिल जायेंगे॥ 10॥ तुम सत्संग में आत्मज्ञान प्राप्त कर लो। आत्मबोध तथा आत्मशांति ही तुम्हारे साथ चलने वाला उत्तम पाथेय है। पानी बहता जा रहा है, जल्दी हाथ धो लो—मानव जीवन का उत्तम समय बीता जा रहा है, जल्दी अपना कल्याण कर लो॥ 11॥

साखी : राम-प्रेम-3

राम नाम जेहि मुखन तें, पलटू होय प्रकास।
तिनके पद बंदन करौं, वो साहिब मैं दास॥ 1॥
तन मन धन जेहि राम पर, कै दीन्हों बकसीस।
पलटू तिनके चरन पर, मैं अरपत हौं सीस॥ 2॥
राम नाम जेहि उच्चरै, तेहि मुख देहुँ कपूर।
पलटू तिनके नफर की, पनहीं का मैं धूर॥ 3॥
पलटू ऐसी प्रीति करु, ज्यों मजीठ को रंग।
टूक टूक कपड़ा उड़ै, रंग न छोड़ै संग॥ 4॥
आठ पहर जो छकि रहै, मस्त आपने हाल।
पलटू उनसे सब डेरै, वो साहिब के लाल॥ 5॥
करम जनेऊ तोड़ि कै, भरम किया छयकार।
जेहि गोबिंद गोबिंद मिले, थूक दिया संसार॥ 6॥
पलटू सीताराम से, हम तो किहे हैं प्रीति।
देखि देखि सब जरत हैं, कौन जक्त की रीति॥ 7॥
पलटू बाजी लाइहौं, दोऊ बिधि से राम।
जो मैं हारौं राम को, जो जीतौं तौ राम॥ 8॥
पलटू हमसे राम से, ऐसो भा ब्यौहार।
कोउ कितनौ चुगली करै, सुनै न बात हमार॥ 9॥
पलटू जस मैं राम का, वैसे राम हमार।
जाकी जैसी भावना, तासे तस ब्यौहार॥10॥

शब्दार्थ—बकसीस=बख़्शिश, भेंट, समर्पण। नफर=नफ़र, नौकर। मजीठ=एक लता, जिसे उबालने पर लाल रंग निकलता है जो पक्का होता है। छयकार=नष्ट। गोबिन्द=गोविन्द साहेब, पलटू साहेब के गुरु। बाजी=बाज़ी, दावं, शर्त।

भावार्थ—पलटू साहब कहते हैं कि जिसके मुख से राम नाम निकलता है, मैं उसके चरणों की वंदना करता हूं। वह मेरा स्वामी है और मैं उसका दास हूं॥ 1॥ जिसने अपने तन, मन और धन राम को समर्पित कर दिये हैं, मैं उसके चरणों पर अपना सिर समर्पित करता हूं॥ 2॥ जिसके मुख से राम

नाम का उच्चारण होता है, मैं उसके मुख में कपूर देना चाहता हूं। पलटू साहेब कहते हैं कि मैं उसकी जूती की धूल हूं॥ 3॥ पलटू साहेब कहते हैं कि राम से ऐसा अविचल प्रेम करना चाहिए जैसे मजीठ का पक्का रंग। कपड़ा फटकर टूक-टूक हो जाता है, परन्तु मजीठ का रंग कपड़े से नहीं उतरता॥ 4॥ जो अपनी आत्मलीनता की दशा में आठों पहर डूबे रहते हैं, उनका सब सम्मान करते हैं। वे सद्गुरु के सच्चे शिष्य हैं॥ 5॥

जिनको श्री गोविन्द साहेब जैसे सद्गुरु साहेब मिल गये हैं उन्होंने कर्मकांड का जनेऊ तोड़कर सारे भ्रम को नष्ट कर दिया है और संसार के भोगों को थूक दिया है और उस तरफ कभी देखता नहीं है॥ 6॥ पलटू साहेब कहते हैं कि मैंने सीताराम से प्रेम कर लिया है। लोग इस दशा को देख-देखकर जलते हैं। यह संसार की कैसी रीति है?॥ 7॥ पलटू साहेब कहते हैं कि मैं राम से जुआ खेलूंगा और अपने को दावं पर लगा दूंगा। यदि मैं हार गया तो राम का हो गया और जीत गया तो राम मेरे हो गये॥ 8॥ पलटू साहेब कहते हैं कि मेरा राम से ऐसा मधुर व्यवहार हो गया है कि कोई व्यक्ति मेरे लिए उनसे चुगुली करे, तो वे मेरी शिकायत नहीं सुन सकते॥ 9॥ पलटू साहेब कहते हैं कि मैं जैसे राम का हूं, वैसे राम मेरे हैं। यह जगत प्रसिद्धि है कि जिससे जो जैसा व्यवहार करता है उससे वह वैसा व्यवहार करता है॥ 10॥

विशेष—पलटू साहेब का राम या सीताराम उनका अपना आत्म अस्तित्व ही है। उनका यह कथन द्वैत जैसा लगता है, परंतु उनका बोध द्वैत-रहित आत्मपरक है। यह उनकी पूरी वाणी से स्पष्ट है।

साखी : आत्मविश्वास - 4

मनसा बाचा कर्मना, जिनको है बिस्वास।
पलटू हरि पर रहत हैं, तिन्ह के पलट दास॥ 1॥
पलटू संसय छूटि गे, मिलिया पूरा यार।
मगन आपने ख्याल में, भाड़ पड़ै संसार॥ 2॥
ज्यों ज्यों रूठै जगत सब, मोर होय कल्यान।
पलटू बार न बाँकिहैं, जो सिर पर भगवान॥ 3॥
संत बचन जुग जुग अचल, जो आवै बिस्वास।
बिस्वास भये पर ना मिलै, तौ झूठा पलटू दास॥ 4॥

पलटू संत के बचन को, ख्याल करै ना कोइ।
टुक मन में निस्चै करै, होइ होइ पै होइ॥ 5॥
पलटू लिखा नसीब का, संत देत हैं फेर।
साच नहीं दिल आपना, तासे लागै देर॥ 6॥

शब्दार्थ —टुक= थोड़ा। नसीब= भाग्य, प्रारब्ध।

भावार्थ—जो साधक मन, वचन, कर्म से आत्मविश्वास में पूर्ण है और सब समय आत्माराम में स्थित है, पलटू साहेब कहते हैं कि मैं उनका सेवक हूं॥ 1॥ पलटू साहेब कहते हैं कि मन का संदेह मिट गया है। आत्मा ही परमात्मा है और वही मेरा प्रियतम है। अब सब समय अपने आत्मबोध में डूबा हूं। संसार के राग-द्वेष चूल्हे भाड़ में जायं॥ 2॥ मुझसे संसार के लोग जैसे-जैसे रूठते हैं, वैसे-वैसे मेरा कल्याण होता है। यदि मेरे सिर पर भगवान है—मन में आत्मबोध दृढ़ है तो मेरा बाल भी बांका नहीं होगा॥ 3॥ संतों द्वारा दिये हुए आत्मबोध पर यदि दृढ़ विश्वास आ जाये और आत्मविश्वास हो जाने पर यदि अविचल शांति न मिले तो पलटू दास झूठा है॥ 4॥ पलटू साहेब कहते हैं कि संतों के आत्मज्ञानपरक वचनों पर लोग ध्यान नहीं देते। यदि मनुष्य उन पर थोड़ा भी विश्वास करे तो यह बात पक्की है कि उसे सच्चा शांति-सुख मिलेगा॥ 5॥ पलटू साहेब कहते हैं कि संत जन मनुष्य के भाग्य को बदल देते हैं—बंधन प्रवाह को मोक्ष की तरफ मोड़ देते हैं। अपने मन में आत्मबोध पर दृढ़ विश्वास न होने से शांति मिलने में विलंब लगता है॥ 6॥

साखी : सूरमा - 5

धुजा फरक्कै सुन्य में, अनहद गड़ा निसान।
पलटू जूझा खेत पर, लगा जिकर का बान॥ 1॥
लगा जिकर का बान है, फिकर भई छयकार।
पुरजे पुरजे उड़ि गया, पलटू जीति हमार॥ 2॥
नौबत बाजै ज्ञान की, सुन्य धुजा फहराय।
गगन निसाना मारिकै, पलटू जीते जाय॥ 3॥
बखतर पहिरे प्रेम का, घोड़ा है गुरु ज्ञान।
पलटू सुरति कमान लै, जीति चले मैदान॥ 4॥

दसो दिसा मुरचा किहा, बाती दिहा लगाय।
काया गढ़ में पैसि कै, पलटू लिहा छुड़ाय॥ 5॥
पलटू कफनी बाँधि कै, खींचौ सुरति कमान।
संत चढ़े मैदान पर, तरकस बाँधे ज्ञान॥ 6॥
सोई सिपाही मरद है, जग में पलटू दास।
मन मारै सिर गिरि पड़ै, तन की करै न आस॥ 7॥
सिर पर कफनी बाँधि कै, आसिक कबर खोदाव।
पलटू मेरे घर महैं, तब कोउ राखै पाँव॥ 8॥

शब्दार्थ—धुजा= ध्वजा, पताका, झंडा। फरक्कै=लहराती है। अनहद =अनाहतनाद, सीमातीत। निसान= निशान, डंका, नगाड़ा। जिकर= जिक्र, चर्चा, स्मरण, आत्मस्मरण। फिकर= फिक्र, चिंता। छयकार= क्षयकार, नष्ट। नौबत= मांगलिक बाजा। निसाना= निशान, लक्ष्य। कमान= धनुष। बाती= बत्ती, पलीता। पैसि= घुसकर। आसिक= आशिक, प्रेमी, आत्मलीनता का अनुरागी। कबर= कब्र।

भावार्थ—मनोवृत्ति की पताका प्रपंचशून्य में लहराती है और अनंत कालातीत आत्मबोध का नगाड़ा बजता है। पलटू साहेब कहते हैं कि मुझे आत्मचिंतन का बाण लग गया और मैं दुनिया से मर गया॥ 1॥ आत्मचिंतन का बाण लगते ही सांसारिक चिंता नष्ट हो गयी। पलटू साहेब कहते हैं कि मेरे देहाभिमान के पुरजे-पुरजे उड़ गये और मेरी जीत हो गयी॥ 2॥ अब मेरे दरवाजे पर आत्मज्ञान का मांगलिक बाजा हर समय बज रहा है और संकल्प-शून्य की ध्वजा लहरा रही है। मन के आकाश में लक्ष्य बेधकर मैंने वासना को जीत लिया है॥ 3॥ इस युद्ध में मैंने प्रेम का कवच पहना, आत्मज्ञान के घोड़े पर बैठा और मनोवृत्ति रूपी धनुष लेकर मानस-युद्ध क्षेत्र को जीत लिया॥ 4॥

मैंने दसों दिशाओं में मोर्चाबंदी की और आत्मज्ञान का पलीता सुलगा दिया, और काया-गढ़ में घुसकर आत्मा को वासना-बंधनों से छुड़ा लिया॥ 5॥ पलटू साहेब कहते हैं कि मृत्यु की कफनी शरीर में बांधकर मनोवृत्ति रूपी धनुष पर आत्मज्ञान का बाण खींचो। संत आत्मज्ञान का तरकस बांधकर मन के युद्ध-मैदान पर धावा बोल देते हैं॥ 6॥ पलटू साहेब कहते हैं कि संसार में वही वीर योद्धा है जो अपने मन को मार दे, अहंकार-सिर कटकर गिर पड़े और शरीर की आशा न करे॥ 7॥ पलटू साहेब कहते हैं

कि मेरे घर में तभी कोई प्रेमी पैर रखे जब अपने सिर पर मृत्यु की कफनी बांधकर अपने शरीर के लिए कब्र खोद ले॥ 8॥

विशेष—नाम-रूपात्मक देह का अहंकार पूर्ण विसर्जित होने पर ही अनंत आत्मिक संतोष मिलता है।

साखी : सच्चा साधक-6

जैसे काठ में अगिन है, फूल में है ज्यों बास।
हरिजन में हरि रहत है, ऐसे पलटू दास॥ 1॥
मिंहदी में लाली रहै, दूध माँहिं घिव होय।
पलटू तैसे संत हैं, हरि बिन रहैं न कोय॥ 2॥
छोड़ै जग की आस को, काम क्रोध मिटि जाय।
पलटू ऐसे दास को, देखत लोग डेराय॥ 3॥
अस्तुति निन्दा कोउ करै, लगै न तेहि के साथ।
पलटू ऐसे दास को, सब कोइ नावै माथ॥ 4॥
आठ पहर लागी रहै, भजन तेल की धार।
पलटू एसे दास को, कोउ न पावै पार॥ 5॥
सरबरि कबहुँ न कीजिये, सबसे रहिये हार।
पलटू ऐसे दास को, डेरिये बारम्बार॥ 6॥
पलटू हरिजन मिलन को, चलि जइये इक धाप।
हरि जन आये घर महैं, तो आये हरि आप॥ 7॥
दुष्ट मित्र सब एक हैं, ज्यों कंचन त्यों काँच।
पलटू ऐसे दास को, सुपने लगै न आँच॥ 8॥
ना जीने की खुसी है, पलटू मुए न सोच।
न काहू से दुष्टता, ना काहू से रोच॥ 9॥
काम क्रोध जिनके नहीं, लगै न भूख पियास।
पलटू उनके दरस से, होत पाप को नास॥10॥
नरक सरग से जुदा है, नहीं साध आसाध।
ना जानौं मैं कौन हूँ, पलटू सहज समाध॥11॥

शब्दार्थ—सरबरि= बराबरी, समानता। धाप= थोड़ी दूर, एक मील, जितना एक बार में दौड़ा जा सके।

भावार्थ—पलटू साहेब कहते हैं कि जैसे काष्ठ में आग रहती है और फूल में सुगंधी रहती है, वैसे ज्ञानीजन में परमात्मा रहता है॥ 1॥ जैसे मेंहदी

में लाली और दूध में घी रहता है, वैसे संत में परमात्मा रहता है। कोई प्राणी परमात्मा के बिना नहीं रहता है—आत्मा-परमात्मा एक बात है॥ 2॥ जगत की आशा कामना छोड़ देने से काम, क्रोधादि मनोविकार मर जाते हैं। ऐसे संत को देखकर लोग उनका आदर करते हैं॥ 3॥ किसी के द्वारा स्तुति-निन्दा पाकर जो उनसे प्रभावित नहीं होता, ऐसे ज्ञानीजन के सामने सब सिर झुकाते हैं॥ 4॥ तैल धारावत जो चौबीसों घंटे आत्मचिंतन और आत्मस्थिति में रहता है, ऐसे ज्ञानी की रहनी की अन्य लोग थाह नहीं पाते॥ 5॥

जो किसी की बराबरी नहीं करते हैं और सबसे हारकर रहते हैं, ऐसे ज्ञानी की मर्यादा करो॥ 6॥ संत से मिलने के लिए चल कर जाओ और यदि वे घर में आ गये हैं, तो समझ लो परमात्मा स्वयं आ गये॥ 7॥ जो शत्रु-मित्र में समता रखते हैं और कंचन-कांच को समान समझते हैं, ऐसे ज्ञानी को स्वप्न में भी दुख नहीं होता है॥ 8॥ न जीने में प्रसन्नता है और न मरने की चिंता है, न किसी से घृणा है और न किसी में मोह है॥ 9॥ जिनके मन में काम-क्रोध नहीं है और जिनको भोग-सम्मान की आशा-तृष्णा नहीं है, उनके दर्शन से मनोविकार नष्ट होता है॥ 10॥ सहज समाधि में लीन रहने वाले साधक के लिए न नरक है न स्वर्ग है, न अच्छा है और न बुरा है, वह तो यह भी नहीं जानता कि मैं कौन हूं।11॥

विशेष—संकल्प-शून्य दशा में जीव द्रष्टा नहीं रहता, अपितु चेतन मात्र रहता है। वहां 'मैं कौन हूं' नहीं सोचा जाता। वहां शांत मात्र है॥

साखी : साधु-सत्संग-7

बृच्छा बड़ पर स्वारथी, फरै और के काज।
भवसागर के तरन को, पलटू संत जहाज॥ 1॥
जिन देखा सो बावला, को अब कहै सँदेस।
दीन दुनी दोउ भूलिया, पलटू सो दुरबेस॥ 2॥
की तौ हरि चरचा महैं, की तो रहै इकन्त।
ऐसी रहनी जो रहै, पलटू सोई संत॥ 3॥
पलटू तीरथ को चला, बीचै मिलि गे संत।
एक मुक्ति के खोजते, मिलि गई मुक्ति अनंत॥ 4॥
साधु बचन साचा सदा, जो दिल साचा होय।
पलटू गाँठि में बाँधिये, खाली परै न कोय॥ 5॥
काम क्रोध तो है नहीं, नहीं लोभ नहिं मोह।
पलटू जो है सोई है, नहीं हेत नहिं द्रोह॥ 6॥

संगति ऐसी कीजिये, जहवाँ उपजै ज्ञान।
पलटू तहाँ न बैठिये, घर की होय जियान॥ 7॥
सतसंगति में जाइ कै, मन को कीजै सुद्ध।
पलटू उहाँ न जाइये, जहवाँ उपजि कुबुद्ध॥ 8॥

शब्दार्थ—दुरबेस= दरवेश, फकीर, संत। हेत= मित्रता, मोह। द्रोह= वैर। जियान= हानि।

भावार्थ—वृक्ष बड़े परोपकारी होते हैं। वे अन्य के लिए फलते हैं। इसी प्रकार संतजन लोगों को भवसागर से तारने के लिए जहाज होते हैं॥ 1॥ जिसने आत्मसाक्षात्कार कर लिया वह अपने में ही मस्त होता है। अब उस स्थिति का उपदेश कौन करे? पलटू साहेब कहते हैं कि जो आत्मलीनता में मग्न होकर साम्प्रदायिकता और दुनियादारी दोनों को चित्त से उतार देता है, वह सच्चा संत है॥ 2॥ जो या तो आत्मज्ञान की चर्चा में रहता है या एकांत आत्मलीनता में; जो इस प्रकार की रहनी में रहता है, वह संत है॥ 3॥ पलटू साहेब कहते हैं कि मैं तीर्थों में चला, इतने में संत मिल गये। मैं एक मुक्ति खोज रहा था, परन्तु संत मिलने पर अनंत मुक्ति मिल गयी॥ 4॥ संत के उपदेश सदैव सच्चे होते हैं, यदि अपना दिल सच्चा हो और उनके उपदेशों को अपने हृदय में बसा ले, तो शांति मिलने में संदेह नहीं है॥ 5॥ संतों में काम-क्रोध तो होते नहीं हैं। उनमें लोभ-मोह भी नहीं होते हैं। पलटू साहेब कहते हैं कि संत जो अपना आत्म-अस्तित्व है उसी में रहते हैं। वे न किसी से मोह करते हैं और न वैर करते हैं॥ 6॥ ऐसी संगति करो जहां व्यवहार तथा अध्यात्म का ज्ञान उत्पन्न हो। सावधान! वहां न बैठना जहां जीवन में रहे हुए सद्‌गुण भी नष्ट होने लगे॥ 7॥ सत्संग में जाकर अध्यात्म ज्ञान का लाभ लो और मन को शुद्ध करो। किन्तु वहां न जाना जहां कुबुद्धि पैदा हो॥ 8॥

साखी : उपदेश-8

पलटू गुनना छोड़ि दे, चहै जो आतम सुक्ख।
संसय सोइ संसार है, जरा मरन को दुक्ख॥ 1॥
तरकस बाँधे तीन ठौ, पलटू हरि के लाग।
इन तीनहुँ को नाम है, भक्ति ज्ञान वैराग्य॥ 2॥
भक्ति ज्ञान वैराग्य से, तीर निकारा तीन।
पलटू इनको मारिये, इक दुनिया इक दीन॥ 3॥

सुनि लो पलटू भेद यह, हँसि बोले भगवान।
दुख के भीतर मुक्ति है, सुख में नरक निदान॥ 4॥
मन से माया त्यागि दे, चरनन लागी आय।
पलटू चेरी संत की, अंत कहाँ को जाय॥ 5॥
पंडित ज्ञानी चातुरा, इनसे खेलौ दूर।
एक साच हिरदे बसै, पलटू मिले जरूर॥ 6॥
मरते मरते सब मरै, मरै न जाना कोय।
पलटू जो जियतै मरै, सहज परायन होय॥ 7॥
सबसे नीचा होइ रहु, तजि बिबाद को तीर।
पलटू ऐसे दास का, कोऊ न दामनगीर॥ 8॥
पलटू का घर अगम है, कोऊ न पावै पार।
जेकरे बड़ी पियास है, सिर को धरै उतार॥ 9॥
बिन खोजै से ना मिलै, लाख करै जो कोय।
पलटू दूध से दही भा, मथिबे से घिव होय॥10॥
गारी आई एक से, पलटे भई अनेक।
जो पलटू पलटै नहीं, रहै एक की एक॥11॥
जल पषान के पूजते, सरा न एकौ काम।
पलटू तन करु देहरा, मन करु सालिगराम॥12॥
पलटू नेरे साच के, झूठे से है दूर।
दिल में आवै साच जो, साहिब हाल हजूर॥13॥
पलटू यह साची कहै, अपने मन को फेर।
तुझे पराई क्या परी, अपनी ओर निबेर॥14॥
कारज धीरे होत है, काहे होत अधीर।
समय पाय तरवर फरै, केतिक सींचो नीर॥ 15॥
बृच्छा फरै न आप को, नदी न अँचवै नीर।
पर स्वारथ के कारने, संतन धरैं शरीर॥16॥
ज्ञान देय मूरख कँहै, पलटू करै बिबाद।
बाँदर को आदी दिया, कछु ना कहै सवाद॥17॥
मन हस्ती मन लोमड़ी, मनै काग मन सेर।
पलटू दास साची कहै, मन के इतने फेर॥18॥

शब्दार्थ—परायन= पार। दामनगीर= पल्ला पकड़ने वाला, बांधने वाला।

भावार्थ—पलटू साहेब कहते हैं कि यदि तुम आत्मशांति का सुख चाहते हो तो मन के संकल्प-विकल्प छोड़ दो। आत्मा से भिन्न कुछ मानकर उसमें डूबा रहना ही संसार-सागर में बहना है और यही जरा-मरण का दुख पैदा करता है॥ 1॥ आत्मज्ञान में स्थित होने के लिए तीन तरकस बांधो, जिनके नाम हैं भक्ति, ज्ञान और वैराग्य॥ 2॥ इन तरकसों से तीर निकालकर दुनिया और दीन के प्रपंच को मार दो॥ 3॥ भगवान हंसकर बोले ऐ पलटू! ध्यान देकर सुनो, विषयों में दुख समझने से मुक्ति मिलेगी और उनमें सुख मानने से तो अंततः नरक है॥ 4॥ मन से माया को त्याग दो, फिर वह तुम्हारे चरणों में लगेगी। माया तो संतों की सेविका है। अंततः वह कहां जायगी॥ 5॥ हे साधक! पंडित, ज्ञानी, चतुर-चालाक लोगों से दूर रहकर साधना करो। यदि दिल में केवल एक सच्चाई बस जाय, तो अवश्य शांति मिल जायगी॥ 6॥

मरते-मरते तो सब मरते हैं, किन्तु सही ढंग से मरना नहीं जानते हैं। यदि मनुष्य शरीर में रहते-रहते देहाभिमान को सर्वथा त्याग दे, तो सहज भवसागर से पार हो जाय॥ 7॥ हे साधक! वाद-विवाद की जगह से हटकर सबसे नीचा होकर रहो। ऐसे साधक को कोई बांध नहीं सकता॥ 8॥ पलटू साहेब कहते हैं कि आत्मस्थिति की दशा लौकिक चमक-दमक से परे है॥ लौकिक जोर से उस दशा में नहीं जाया जा सकता। जिसके मन में परमशांति की पिपासा होती है, वह विनम्र होकर उस दशा में पहुंचता है॥ 9॥ बिना आत्मानुसंधान किये परम शांति नहीं मिलती है, चाहे कोई बाहरी लाख उपाय करे। दूध से दही जमता है। फिर उसको मथने से घी निकलता है॥ 10॥ किसी ने आपको गाली दी, वह एक है। यदि आपने भी पलटकर गाली दी तो वह अनेक हो गयी। यदि गाली देने वाले को गाली न दी जाय तो उसकी गाली अकेली रहकर मर जायेगी॥ 11॥ पानी-पत्थर की पूजा करते-करते कल्याण का एक काम भी न बना। अतएव शरीर को मंदिर तथा मन को सालग्राम बनाकर मन की पूजा करो—मन को शुद्ध करो॥ 12॥

पलटू साहेब कहते हैं कि कल्याण सत्य के निकट है और झूठ से बहुत दूर है। यदि हृदय में सच्चा आत्मबोध हो जाय, तो परमात्मा स्वयं प्रत्यक्ष आत्मा है॥ 13॥ पलटू साहेब कहते हैं कि मैं यह सच्ची बात कहता हूं कि दूसरे से उलझना अपने मन का चक्कर है। तुम्हें दूसरे से क्या प्रयोजन! तुम अपने मन को शुद्ध करो॥ 14॥ सब काम धैर्य धारण करने से अपने समय से होता है। तुम धैर्य छोड़कर क्यों अशांत होते हो? चाहे जितना पानी से सींचो, परन्तु पेड़ तो अपने समय पर फल देंगे॥ 15॥ पेड़ अपने लिए नहीं

फलते हैं और नदी अपने पीने के लिए नहीं बहती है, अपितु ये अन्य के लिए फलते और बहते हैं। इसी प्रकार संतों की आध्यात्मिक स्थिति और शिक्षा मानव मात्र के लिए होती है॥ 16 ॥ यदि मूर्ख मनुष्य को ज्ञानोपदेश करोगे, तो वह विवाद करेगा। यदि बंदर को गुणकारी अदरक दिया जाय, तो वह उसका स्वाद क्या समझ सकेगा॥ 17 ॥ मन हाथी, लोमड़ी, कौआ, और शेर है। यह बात सच है कि मन के बहुत रूप हैं॥ 18 ॥

साखी : मान-बड़ाई-9

बड़े बड़ाई में भुले, छोटे हैं सिरदार।
पलटू मीठा कूप जल, समुँद पड़ा है खार॥ 1॥
सबसे बड़ा समुद्र है, पानी ह्वैगा खारि।
पलटू खारि जानि कै, लीन्हों रतन निकारि॥ 2॥
पलटू यह मन अधम है, चोरौ से बड़ चोर।
गुन तजि औगुन गहतु है, तातें बड़ा कठोर॥ 3॥
कहत कहत हम मरि गये, पलटू बारम्बार।
जग मूरख मानै नहीं, पड़ै आप से भाड़॥ 4॥

शब्दार्थ— सिरदार= सरदार, श्रेष्ठ, अगुआ।

भावार्थ—बड़े कहलाने वाले मान-बड़ाई में अपनी सत्यता को भूल गये और छोटे लोग विनम्रता से सेवक होकर आगे और समूह के रक्षक हो गये। छोटे जलाशय कुएं का जल मीठा होता है किंतु बड़े जलाशय समुद्र का जल खारा होता है॥ 1॥ समुद्र सबसे बड़ा जलाशय है, किन्तु उसका पानी खारा होता है। परन्तु समझदार गुणग्राही लोग उससे रत्न निकाल लेते हैं॥ 2 ॥ मन महा नीच है, चोरों से भी बड़ा चोर है। यह सर्वत्र सद्गुण छोड़कर दुर्गुण ग्रहण करता है इसलिए यह कटु है॥ 3 ॥ पलटू साहेब कहते हैं कि हम जैसे असंख्य लोग बारंबार उपदेश देते मर गये, परंतु संसार के मूर्ख लोग उपदेश नहीं मानते। लोग स्वयं दुष्ट आचरण की भाड़भट्ठी में कूदकर जलते हैं॥ 4 ॥

साखी : दुष्ट और कपटी-10

पलटू मैं रोवन लगा, जरौ जगत की रीति।
जहँ देखो तहँ कपट है, कासे कीजै प्रीति॥ 1॥
मुँह मीठो भीतर कपट, तहाँ न मेरो बास।
काहू से दिल ना मिलै, तौ पलटू फिरै उदास॥ 2॥

पलटू पाँव न दीजिये, खोटा यह संसार।
हीताई कर मिलत है, पेट महैं तरवार॥ 3॥
पलटू पाँव न दीजिये, यह जग बुरी बलाय।
लिहे कतरनी काँख में, करै मित्रता धाय॥ 4॥
साहिब के दरबार में, क्या झूठे का काम।
पलटू दोनों ना मिलै, कामी और अकाम॥ 5॥
हिरदे में तो कुटिल है, बोलै बचन रसाल।
पलटू वह केहि काम का, ज्यों नारुन फल लाल॥ 6॥
अधम अधमई ना तजै, हरदी तजै न रंग।
कहता पलटू दास है, कोटि करै सतसंग॥ 7॥
सतगुरु बपुरा क्या करै, चेला करै न होस।
पलटू भीजै मोम ना, जल को दीजै दोस॥ 8॥
ज्ञान धनुष सतगुरु लिहे, सबद चलावै बान।
पलटू तिल भर ना धसै, जियतै भया पषान॥ 9॥

शब्दार्थ—हिताई= मित्रता। बलाय= बला, विपत्ति, व्याधि।

भावार्थ—मैं जगत के व्यवहार से झुलसकर रोने लगा। जहां देखो, कपट का व्यवहार है। किससे प्रेम किया जाय?॥ 1॥ जहां पर मुख से तो मीठी बात की जाती है, किन्तु मन में कपट रखा जाता है, वहां मैं नहीं रहता हूं। किसी से मन नहीं मिलता, इससे मैं उदास होकर घूमता हूं॥ 2॥ यह संसार खोटा है, इसलिए ऐसे कपट भरे व्यवहार वाले के पास मत जाइए। लोग ऊपर से मित्रता दिखाते हुए मिलते हैं, किन्तु मन में कसैला भाव की तलवार रखते हैं॥ 3॥ यह संसार भारी विपत्ति है, इसलिए उधर नहीं जाना चाहिए। लोग दौड़कर मित्रता दिखाते हैं, किन्तु बगल में कपट की कतरनी लिये रहते हैं॥ 4॥

सद्गुरु के दरबार में झूठे लोगों से क्या वास्ता? पलटू साहेब कहते हैं कि सकामी और निष्कामी का मेल नहीं खा सकता॥ 5॥ मन में तो कपट-कतरनी है, ऊपर से मीठी बातें करते हैं। नारुन का फल किस काम का जो ऊपर से तो लाल-लाल सुहावना है, किन्तु भीतर से कड़वा॥ 6॥ जैसे हलदी अपना रंग नहीं त्यागती, वैसे निकृष्ट कर्म करने वाले अपना नीच कर्म नहीं छोड़ते। करोड़ों सत्संग मिलने पर भी ऐसे लोग नहीं सुधरते॥ 7॥ सद्गुरु बेचारा क्या करे यदि शिष्य सावधान नहीं होता। यदि मोम नहीं भीगता तो इसमें पानी का दोष नहीं है॥ 8॥ सद्गुरु तो आत्मज्ञान का धन्वा-बाण लेकर

चला रहे हैं, किन्तु शिष्य का हृदय जीवित ही पत्थर बना है, इसलिए ज्ञान का बाण रंच मात्र भी नहीं धंसता॥ 9॥

साखी : मिश्रित उपदेश-11

हिंदू पूजे देवखरा, मुसलमान महजीद।
पलटू पूजै बोलता, जो खाय दीद बरदीद॥ 1॥
पलटू अपने भेद से, कारन पैदा होय।
जरि कै बन ह्वैगे भसम, आगि न लावै कोय॥ 2॥
चारि बरन को मेटि कै, भक्ति चलाया मूल।
गुरु गोबिंद के बाग में, पलटू फूला फूल॥ 3॥
हद अनहद दोऊ गये, निरभय पद है गाढ़।
निरभय पद के बीच में, पलटू देखा ठाढ़॥ 4॥
सुख में सेवा गुरू की, करते हैं सब कोय।
पलटू सेवै बिपति में, गुरु-भगता है सोय॥ 5॥
पलटू मैं रोवन लगा, देखि जगत की रीति।
नजर छिपावै संत से, बिस्वा से है प्रीति॥ 6॥
कमर बाँधि खोजन चले, पलटू फिरै उदेस।
षट दरसन सब पचि मुए, कोऊ न कहा सँदेस॥ 7॥
सिष्य सिष्य सबहीं कहै, सिष्य भया न कोय।
पलटू गुरु की बस्तु को, सीखै सिष तब होय॥ 8॥
इन्द्री जीति कारज करै, जगत सराहै भोग।
जैसे बर्षा सिखर पर, नहीं भींजबे जोग॥ 9॥
खोजत गठरी लाल की, नहीं गाँठि में दाम।
लोक लाज तोड़ै नहीं, पलटू चाहै राम॥10॥
मरने वाला मरि गया, रोवै सो मरि जाय।
समझावै सो भी मरै, पलटू को पछिताय॥11॥
मुआ है मरि जायेगा, मुए के बाजी ढोल।
सुपन सनेही जग भय, सहदानी रहिगे बोल॥12॥

शब्दार्थ—देवखरा= देवस्थान, जड़पिंडी। दीद बरदीद= सामने। उदेस= विदेश, अनात्म। कमान= धनुष।

भावार्थ—हिन्दू मिट्टी-पत्थर के देवता पूजते हैं। मुसलमान मसजिद में जाकर शून्य में पुकारते हैं। पलटू साहेब कहते हैं कि मैं प्राणियों की पूजा

करता हूं, जो सामने खाते हैं॥ 1॥ पलटू साहेब कहते हैं कि जब अपने संघ में परस्पर राग-द्वेष होकर भेदभाव पैदा होता है, तब वैसे ही संघ के विनाश का कारण उपस्थित होता है जैसे जंगल में काष्ठ की रगड़ से आग पैदा होकर जंगल जल जाता है। उसमें बाहर से आग लगाने की आवश्यकता नहीं होती॥ 2॥ सद्गुरु गोविन्द साहेब ने चारों वर्णों की मान्यता मिटाकर तथा मानव मात्र में समता का बरताव कर सच्ची भक्ति चलाई। गुरु गोविन्द साहेब के साधु रूपी उद्यान में पलटू भी एक फूल खिल गया॥ 3॥ हद गृहस्थी-मर्यादा और अनहद साधु-वेष की मर्यादा से ऊपर आत्मलीनता की दशा निर्भय और अविचल पद है। पलटू साहेब कहते हैं कि मैं स्वरूपस्थिति की निर्भय दशा में स्थिर होकर वास्तविकता को देखता हूं॥ 4॥ सब लोग लाभ-सुख की दशा में संत-सेवा करते हैं, जो विपत्तिकाल एवं घाटे की दशा में सेवा करता है, वह सच्चा गुरु भक्त है॥ 5॥ जगत का व्यवहार देखकर मुझे रुलाई आती है। लोग संतों से दूर रहते हैं और वेश्या से प्रेम करते हैं॥ 6॥

पलटू साहेब कहते हैं कि लोग कमर बांधकर देश-विदेश में परमात्मा को खोजने चलते हैं। योगी, जंगम, सेवड़ा, संन्यासी, दरवेश और ब्राह्मण ये छह दर्शन के लोग उसे खोजते-खोजते हैरान हो गये, किन्तु कोई बाहरी परमात्मा का संदेश नहीं बता पाया कि वह कहां है॥ 7॥ सब लोग शिष्य-शिष्य कहते हैं, किन्तु इनमें कोई शिष्य नहीं होता। सद्गुरु की उपदेश-वस्तु आत्मस्वरूप को जो समझे, वह शिष्य होता है॥ 8॥ इन्द्रियजित होने के लिए कमर कसा और कहते हैं कि मैं साधना करता हूं, किन्तु जगत भोगों की प्रशंसा करते हैं, तो उनकी दशा वैसे होती है जैसे पर्वत-शिखर पर वर्षा हुई, किन्तु वह थोड़ा भी नरम न हुआ॥ 9॥ खोजते हैं रत्नों की गठरी, किन्तु उसे खरीदने के लिए पास में एक कौड़ी भी नहीं है। लोग लोक-लज्जा नहीं छोड़ते हैं और राम में रमना चाहते हैं॥ 10॥ मरने वाला मर गया। जो उसके लिए रोता है, वह भी मर जाता है। जो रोनेवालों को समझाता है वह भी मर जाता है। पलटू साहेब कहते हैं कि ऐसे मृत्युमय संसार को लेकर कौन ज्ञानी शोक करेगा?॥ 11॥ पहले के लोग मरे हैं, जो आज के लोग हैं ये भी मर जायेगे। संसार में तो मृत्यु का ही ढोल बज रहा है। लोग संसार रूपी स्वप्न में मोह करते हैं। मर जाने पर पीछे उनकी कुछ चर्चा ही उनकी पहचान रहती है॥ 12॥